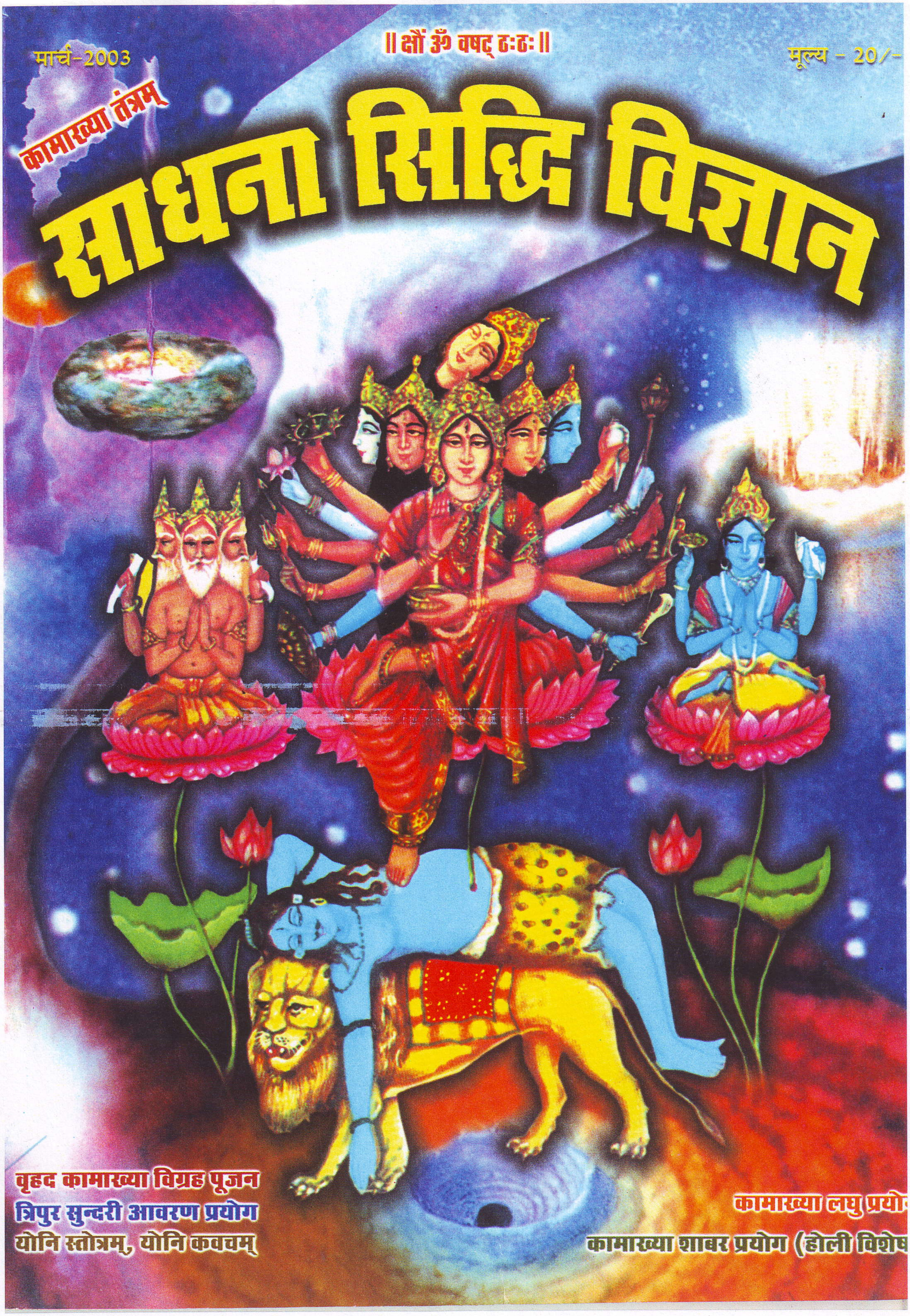
|| क्षौं ॐ वषट् ठःठः ||
मार्च-2003
मूल्य - 20/-
कामाख्या तंत्रम्
साधना सिद्धि विज्ञान
वृहद कामाख्या विग्रह पूजन
त्रिपुर सुन्दरी आवरण प्रयोग
योनि स्तोत्रम्, योनि कवचम्
कामाख्या लघु प्रयो
कामाख्या शाबर प्रयोग (होली विशेष

कामाख्या शक्ति पीठ (आसाम)

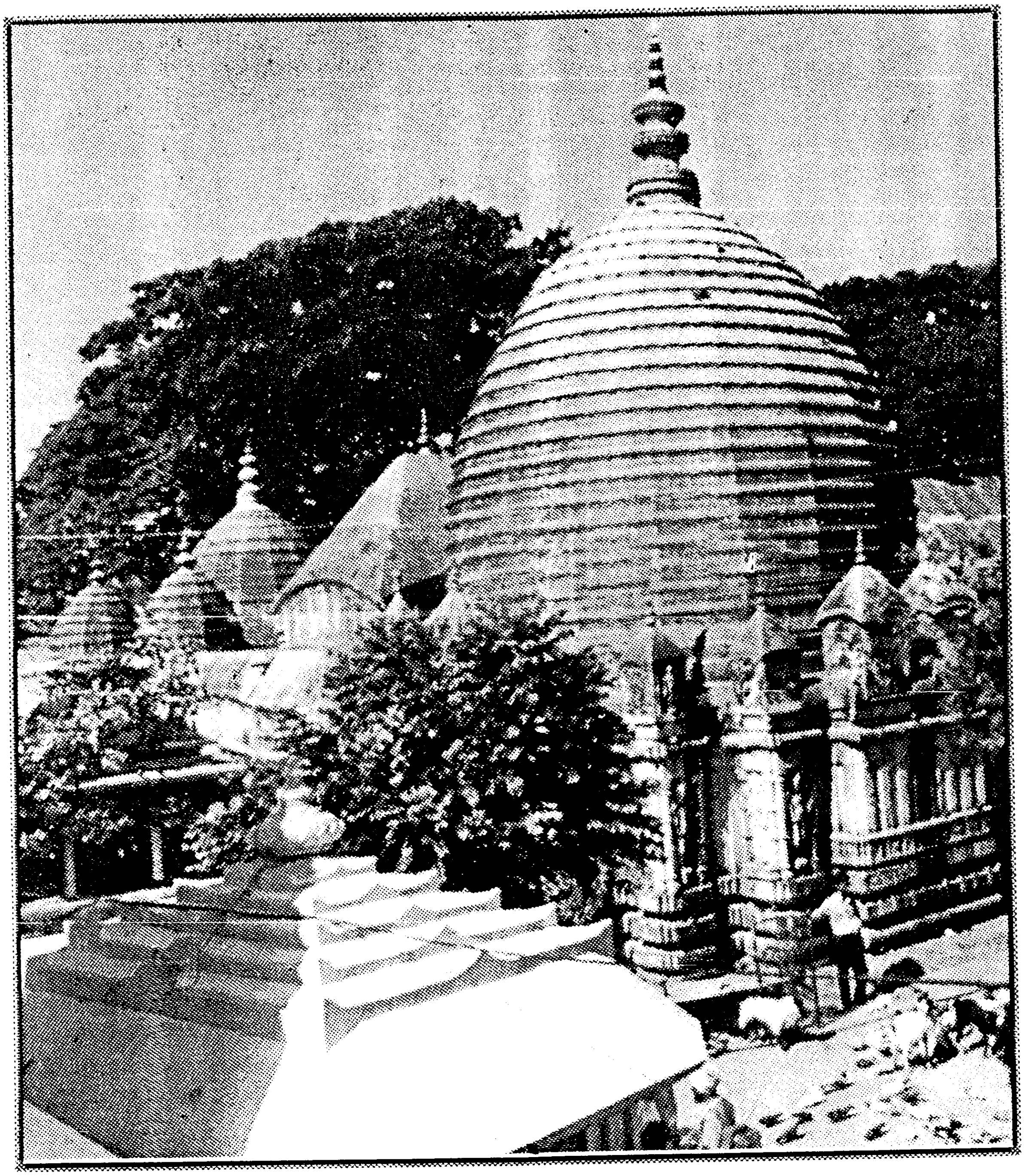

कामाख्ये कामसम्पन्ने कामेश्वरि हरप्रिये।
कामनां देहि मे नित्यं कामेश्वरि नमोऽस्तुते॥

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥

साधना सिद्धि विज्ञान

वर्ष 04 अंक 4 माह- मार्च 2003

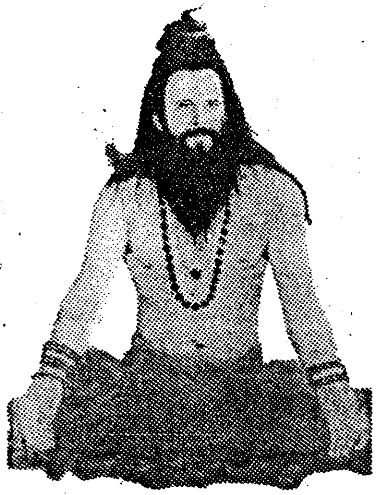

- ❋ विचार प्रवाह 2
- ❋ गुरु वाणी 3
- ❋ कामाख्या देवी पूजन 5
- ❋ योनि कवचम् 15
- ❋ कामाख्या रहस्यम् 16
- ❋ त्रिपुर सुन्दरी आवरण प्रयोग 24
- ❋ योनि-सर्वस्व 35
- ❋ कामाख्या शाबर मंत्र (होली विशेष) 41
- ❋ दीक्षा संस्कार 48
- ❋ लिंग-धारिणी 49
- ❋ योनि स्तोत्रम् 56
- ❋ अघोर दाह 59
- ❋ लघु प्रयोग 65
- ❋ कामाख्या मंत्र प्रयोग 69
- ❋ श्री सद्गुरु संस्मरणम् 74
- ❋ ज्योतिष 78

प्रेरणास्रोत
आदि गुरु श्री शंकराचार्य जी
सम्पादक
डॉ. साधना सिंह
कार्यकारी सम्पादक
पं. लोकेश दीक्षित
उप सम्पादक
श्री अजय सिंह
कार्यकारी विभाग
श्री अनिल सक्सेना,
श्री आत्माराम

प्रकाशक स्वामित्व एवं मुद्रक
अरविन्द सिंह
द्वारा
सहयोग ऑफसेट
हरगोपाल कॉम्पलेक्स, जोन-1
एम.पी. नगर भोपाल से
मुद्रित एवं
साधना सिद्धि विज्ञान
5 प्लाट नं. 210 जोन-1
एम.पी. नगर भोपाल से
प्रकाशित
Cover Design
ALP GRAPHICS
Ph. 2555599, 9827011200

सभी विवादों के लिये न्याय क्षेत्र भोपाल मान्य होगा
मूल्य एक प्रति 20/-
(वार्षिक सदस्यता 220/-डाक व्यय सहित)

रजि. नं. म.प्र. हिन्दी/1999/598

❋ सम्पर्क ❋
साधना सिद्धि विज्ञान
शॉप नं. 5 प्लॉट नं. 210 जोन-1 एम.पी. नगर भोपाल-462011 दूरभाष : (0755) 2576346, 5269368, 2554925

विचार प्रवाह

यह वर्गीकृत अंक है एवं किसी मत, किसी धारा, किसी विशेष सोच या सम्प्रदाय को थोपने की कोशिश नहीं है। इसमें वर्णित उपासनाएं कामाख्या तंत्र, नाथोपनिषद, शिव पुराण, गोरख संहिता, कुल ज्ञान इत्यादि प्रामाणिक ग्रंथों से ली गई हैं। कुछ स्तोत्र अति गोपनीय योनि तंत्रम् से भी लिए गये हैं। इस पत्रिका का सृजन गुप्त नवरात्रि में किया गया है एवं बहुत सी बातें, बहुत सी गोपनीय साधनाएं, बहुत से गोपनीय कथन न छापने की मर्यादा है। अध्यात्म की सभी बातें छापी नहीं जाती। हो सकता है बहुत से लोग असहमत हों, उनसे क्षमा प्रार्थना। कुछ कमी रह गई होगी तो भविष्य में उसे सुधार लेंगे। अभी तो लम्बा समय है।

श्री अरविन्द जी

दो शब्द

पत्रिका में प्रकाशित सामग्री विषय विशेषज्ञों के विवेक, सम्बन्धित क्षेत्र में उनके विशेष अनुभव तथा शास्त्र सम्मत है। पत्रिका के प्रकाशन का उद्देश्य आध्यात्मिक चेतना जागृत कर पाठकों को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाना है तथाकथित बुद्धिमानों के तर्क-कुतर्कों में उलझकर विवाद उत्पन्न करना कदापि नहीं। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री यदि ऐसे बुद्धिमानों व तार्किकों की कसौटी पर खरी न उतरे तो वे इसे काल्पनिक समझकर भूल जाँय। हमारा उद्देश्य साधना, जप, तप, योग, ध्यान, प्राणायाम जैसी सनातन पद्धतियों की उपयोगिता तथा जीवन में इसकी महत्ता को पाठकों तक पहुँचाना है ताकि वे इनका अधिक से अधिक लाभ ले सकें।

पत्रिका में प्रकाशित लेख दुर्लभ ग्रंथों पर आधारित हैं सभी लेखों से संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी प्रकार के विवाद का निपटारा भोपाल न्यायालय के अधिकार क्षेत्र में होगा। बहुत से ऐसे लेख भी पत्रिका में प्रकाशित किये गये हैं जो लेखकों के स्वयं के अनुभव हैं जिसकी आलोचना करना व्यर्थ है। प्रकाशित साधना व प्रयोग आदि की सफलता/असफलता तथा आवरण पृष्ठ की डिजाइन एवं मुद्रण सम्बन्धी त्रुटियों के लिये पत्रिका परिवार जिम्मेदार नहीं होगा।

कार्यकारी सम्पादक

गुरु वाणी

सनातन धर्म एक कल्प वृक्ष के समान है इसकी अनेकों शाखा-प्रशाखाएं हैं। सनातन धर्म में विभिन्न मतों के, विभिन्न पद्धतियों के ऋषि मुनियों का अद्भुत समायोजन है। सनातन धर्म में अत्यंत ही स्वच्छंदता, वैज्ञानिक विश्लेषण और तर्क के साथ-साथ निरपेक्ष ध्यान का एक अलौकिक सामंजस्य है। सनातन धर्म का खुलापन उसे गहनता और उत्तम स्वास्थय प्रदान करता है। शक्ति उपासना के माध्यम से स्वच्छ एवं स्वस्थ माताओं की उत्पत्ति होती है जो कि सृष्टि में उत्तम संतान प्रदान करने में सक्षम होती हैं। भ्रूण हत्या, गौ वध को सनातन धर्म महापाप की दृष्टि से देखता है। वशिष्ठ ने राम को अश्वमेघ यज्ञ में बिना सीता के बैठने पर प्रतिबंधित कर दिया अंततः राम को इसका निवारण करना पड़ा। शक्ति उपासक लाल तिलक लगाते हैं और शैव उपासक चन्दन का त्रिपुण्ड बनाते हैं। चन्दन पुरुषार्थ का प्रतीक है तो वहीं स्त्री रक्त का प्रतीक है। पुत्रेष्ठी यज्ञ के माध्यम से संतानोत्पत्ति भारतवर्ष में शुरु से प्रचलित रही है, कुमारी पूजन, सर्वतोभद्र मण्डल पूजन, श्रीयंत्र पूजन, त्रिपुर सुन्दरी आराधना, दस महाविद्या अनुष्ठान इत्यादि ये सब मातृ पूजन अर्थात कामाख्या मण्डल पूजन के अंतर्गत ही आते हैं। मातृ शक्ति आदि उत्पादक है। संसार के सभी पदार्थों ने स्व उत्पादन मातृ शक्ति से ही प्राप्त किया है। पक्षी हजारों मील दूर से उड़कर, एक छोर से दूसरे छोर पर जाकर प्रजनन करते हैं। मात्र प्रजनन के लिए लम्बी यात्राएं करते हैं। संतति उत्पादन अत्यंत ही महत्वपूर्ण है। हम उत्पाद को देखते हैं उसे महिमा मण्डित करते हैं, हम किसी महापुरुष की प्रशंसा करते हैं परन्तु वह विलक्षण किसने निर्मित किया? किस प्रकार निर्मित किया? उसकी निमात्री कौन है? यह

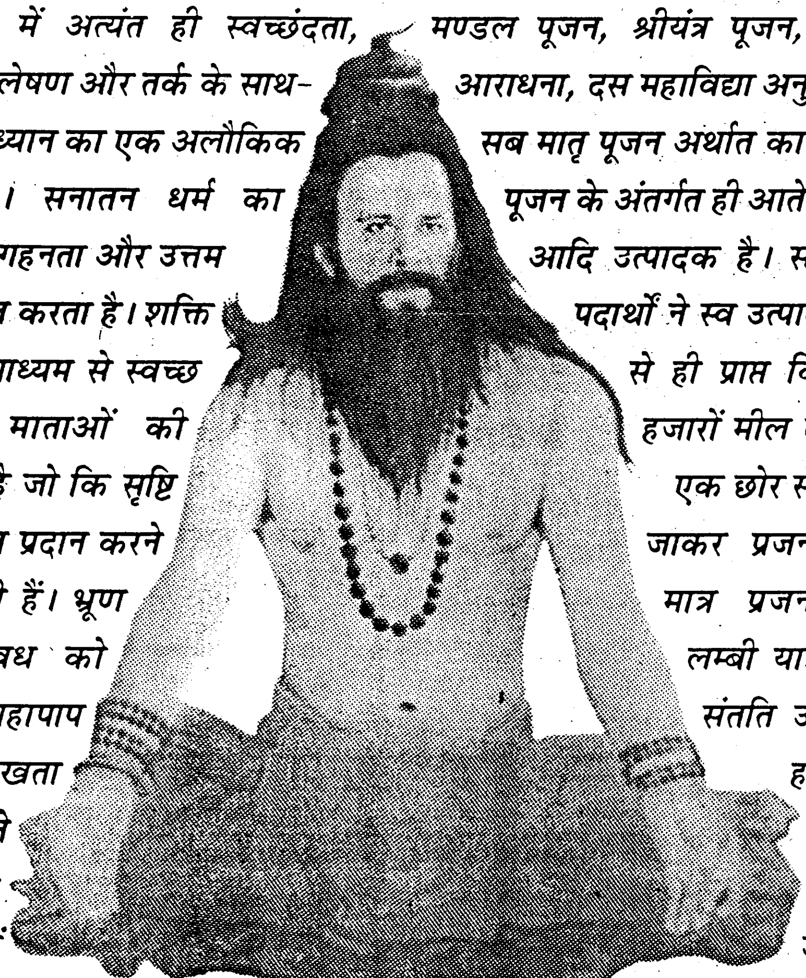

मुख्य जिज्ञासा का विषय है एवं इसे ही कहते हैं महाज्ञान, कुल ज्ञान अतः वह स्थान आदरणीय हो जाता है। भारतवर्ष एक रहस्यमय देश है, इसके कण-कण में रहस्य व्याप्त है। यहाँ पर कामाख्या साधना के माध्यम से साधक बहुत कुछ प्राप्त कर लेते हैं। कामाख्या यंत्र, तंत्र क्षेत्र में अत्यंत ही महत्वपूर्ण है। कामाख्या शक्ति पीठ के पवित्र धागे या वस्त्र को धारण करने से साधक की अनेकों प्रकार की अभिचार क्रियाओं से स्वतः ही रक्षा होती रहती है। तंत्र क्षेत्र में, अध्यात्म के क्षेत्र में साधक जब तक कामाख्या शक्तिपीठ की यात्रा नहीं करता, वहाँ साधनाएं सम्पन्न नहीं करता वह अपूर्ण है। कामाख्या शक्ति पीठ की अनेकों उप पीठें भारतवर्ष में जगह-जगह मौजूद हैं और गुरु लोग पारद निर्मित योनि के द्वारा साधकों से कामाख्या साधना करवाते हैं। सिद्धि, विलक्षण गोपनीय शक्तियाँ, तंत्र, ज्योतिष, मंत्र एवं यंत्र शक्ति, विग्रह पूजन इत्यादि सनातन धर्म का अभिन्न अंग हैं। योग, यज्ञानुष्ठान, प्रयोग सनातन धर्म को पोथा पंथी होने से बचाते हैं यह हमारे ऋषि-मुनियों द्वारा रचित प्रणाली है अतः इन पर शंका करना, इनका मजाक उड़ाना सनातन कुल को नष्ट करने की प्रक्रिया है। कुल में कुल द्रोही न हो, कुल नाशक न हो, कुल विरोधी न हो इसलिए कामाख्या की सकाम उपासना करनी चाहिए।

शिव संकल्प

1. साधना सिद्धि विज्ञान मासिक पत्रिका किसी भी प्रकार के आश्रम, मठ, संस्था इत्यादि के निर्माण में जीवन पर्यन्त कदापि सम्मिलित नहीं होगी।
2. किसी भी प्रकार का दान, चंदा ट्रस्ट इत्यादि सांसारिक कार्यों में साधना सिद्धि विज्ञान पत्रिका अपनी ऊर्जा क्षय नहीं करेगी। दान पूर्णतः प्रतिबन्धित है।
3. दीक्षा के नाम पर या फिर दक्षिणा के नाम पर किसी भी प्रकार का लेन-देन इस पत्रिका के माध्यम से कदापि सम्भव नहीं है।
4. साधना सिद्धि विज्ञान किसी भी तरह के तथाकथित संघ या आध्यात्मिक परिवार के निर्माण के सख्त खिलाफ है। यह तो बस सनातन धर्म में अपना छोटा सा योगदान देते हुए विलीन हो जायेगी।
5. साधना सिद्धि विज्ञान पत्रिका आदि गुरु शंकराचार्य जी एवं निखिलेश्वरानंद जी के ज्ञान और शिक्षाओं का प्रचार-प्रसार करने के लिए आजीवन प्रतिबद्ध है।
6. साधना सिद्धि विज्ञान पत्रिका में प्रकाशित साधनाएँ सम्पन्न करने के लिए प्राण-प्रतिष्ठित एवं चैतन्य सामग्री कहीं से भी ली जा सकती है बशर्ते वह शुद्ध एवं असली हो।

श्री अरविन्द जी

कामाख्या देवी पूजन

कामाख्या देवी के शक्ति पीठ में प्रवेश करते ही 12 प्रस्तर खम्बों के मध्य देवी की चलन्ता मूर्ति स्थापित है एवं इनका दूसरा नाम हर गौरी मूर्ति या भोग मूर्ति है। सर्वप्रथम माँ कामाख्या के विग्रह एवं चित्र को निम्न मंत्र से प्रणाम करना चाहिए।

प्रणाम मंत्र

कामाख्ये कामसम्पन्ने कामेश्वरि हरप्रिये।
कामनां देहि मे नित्यं कामेश्वरि नमोऽस्तुते॥

स्पर्श मंत्र

मनोभवगुहा मध्ये रक्तपाषाण रूपिणी।
तस्याः स्पर्शनमात्रेण पुनर्जन्म न विद्यते॥

चरणामृत-पान-मंत्र

शुकादीनाञ्च यज् ज्ञानं यमादि परिशोधितम्।
तदेव द्रवरूपेण कामाख्या योनिमण्डले॥

इसके पश्चात् निम्नलिखित अनुज्ञा मंत्र का हाथ जोड़कर उच्चारण करना चाहिए।

कामदे कामरूपस्थे सुभगे सुरसेविते।
करोमि दर्शनं देव्याः सर्वकामार्थसिद्धये॥

कामाख्या का विग्रह कामाख्या शक्तिपीठ में अष्टधातु से निर्मित है एवं इनकी मूर्ति प्रस्तर बने सिंहासन पर आरूढ़ है। मूर्ति के उत्तर में वृषभ वाहन, पंचवक्त्र एवं दसभुज विशिष्ट कामेश्वर महदेव स्थित हैं, दक्षिण भाग में षडानना, द्वादश बाहु विशिष्टा, अष्टादश लोचना सिंहवाहिनी कमलासना देवी की मूर्ति है यही मूर्ति महामाया कामेश्वरी की मूर्ति के नाम से विख्यात है।

विष्णुब्रह्मशिवैर्देवैर्धृयते या जगन्मयी।

सितप्रेतो महादेवो ब्रह्मा लोहितपंकजम्॥
हरिर्हरिस्तु विज्ञेयो वाहनानि महौजसः।
स्वमूर्त्ता वाहनत्वन्तु तेषां यस्मान्न युज्यते॥

अथ आसन शुद्धि- साधक को चाहिए कि स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण करके आचार्य के आदेशानुसार पूर्वादिक मुँह करके आसन पर बैठे। तब आसन के नीचे पूर्वादिक भाग में त्रिकोण मण्डल बनाकर निम्नांकित मंत्र द्वारा गन्ध पुष्पादि धूप दीप नैवेद्य दक्षिणादि से पूजन करें।

मन्त्र

ह्रीं आधार शक्तये नमः। ॐ कूर्माय नमः।
ॐ अनन्ताय नमः। ॐ पृथिव्यै नमः।

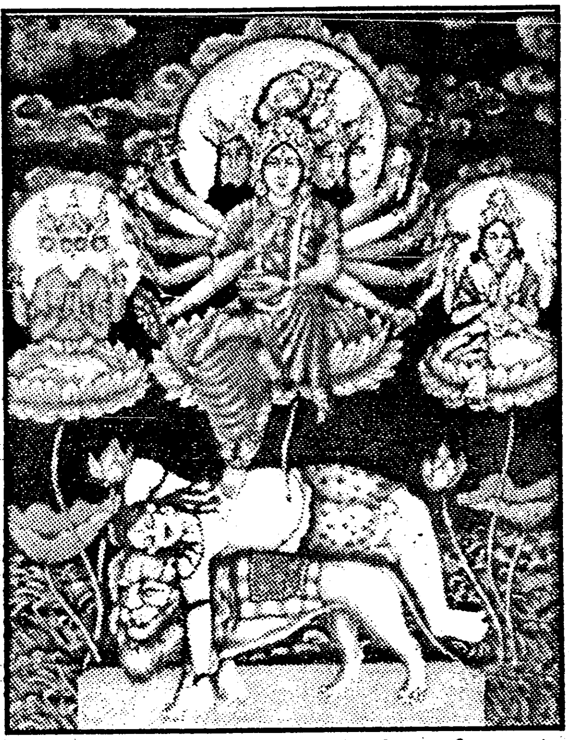

पूजन के बाद उस त्रिकोण को स्पर्श इस मंत्र द्वारा करें।

मन्त्र

ॐ पृथ्वि! त्वया धृतालोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥

अब शुद्धासन पर डालकर पूजा के निमित्त आसन ग्रहण करें और रक्षा विधान करें।

आचमन विधि

पुण्य कार्य के आरम्भ में आचमन अवश्य करना चाहिए। आचमन के समय जल का नख से स्पर्श तथा ओष्ठ का शब्द नहीं होना चाहिए। प्रथम आचमन से आध्यात्मिक, दूसरे से अधिभौतिक और तीसरे से अधिदैविक शान्ति होती है। इसलिए तीन बार आचमन करें और चौथे मंत्र से बोलते हुए दूसरे पात्र के जल से हाथ की शुद्धि करें।

मंत्र

ॐ केशवाय नमः, ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः। तत्पश्चात् हाथ धोये-**ॐ हृषीकेशाय नमः।**

पुष्प शुद्धि-नीचे के मंत्र से पूजा-पुष्प को देखें-

ॐ पुष्पे पुष्पे महापुष्पे सुपुष्पे पुष्प सम्भवे। पुष्प चमा वकीर्णन च हुँ फट् स्वाहा।

कर शुद्धि- साधक **ऐं** कहकर रक्त पुष्प हाथ में लेवे और **ॐ** कहकर दोनों हाथों से प्रेषण करें (उक्त पुष्प को हाथ में घुमाएं)। इसके बाद उस पुष्प को ईशान कोण में रख दें।

शरीर तथा पूजन सामग्री शुद्धि- अब आचार्य अथवा साधक स्वयं अपने सिर पर जल छिड़कें।

मंत्र

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

पुनः पूजन सामग्री पर जल छिड़कें।

मंत्र- ॐ पुण्डरीकाक्षं पुनातु।

यज्ञोपवीत धारण करना-तब इस मंत्र से यज्ञोपवीत धारण करें।

ॐ यज्ञोपवीतं परमं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्रयं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥

तत्पश्चात् दो बार आचमन करें।

भस्म और टीका लगाना- ॐ हुं फट् से मस्तक, कण्ठ, हृदय और बाहु में त्रिपुण्ड धारण करें। पुनः **ऐं** कहकर रोली ले बाएँ हाथ पर रखे और **ह्रीं** का उच्चारण कर जल मिलाकर दाहिने हाथ की अनामिका उंगली से गीला करें और **श्रीं** बोलकर मध्यमा उंगली से मस्तक के मध्य में एक लम्बा टीका लगाए। **क्लीं** बोलते हुए हाथ धोए और पुनः हाथ जोड़ **ॐ** का उच्चारण कर देवी का ध्यान करें।

न्यास विधि

जीव न्यासः-ॐ सोहमिति पठित्वा हृदि हस्तं दत्वा ॐ, आं, ह्रीं, क्रों, यं, रं, लं, वं, शं, षं, सं, हो, हंसं मम प्राणइह प्राणा ॐ,

आं. मम जीव इह स्थित, पुनः ॐ आं सर्वइन्द्रियाणि पुनः ॐ आं ममवाङ्मनश्चश्चक्षु श्रोत घ्राण प्राणः इहा गत्य सुखं चिर तिष्ठन्तु स्वाहा।

कराङ्गन्यासः- ॐ अं, कं, खं, गं, घं, ङं आं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ इं, चं, छं, जं, झं, ञं, ईं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ उं, टं, ठं, डं, ढं, णं, ऊं मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ एं, तं, थं, दं, धं, नं, ऐं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ओं, पं, फं, बं, भं, मं, औं कनिष्ठाभ्यां वषट्। ॐ अं, यं, रं, लं, वं, शं, षं, सं, हं, लं, क्षं, अः करतलकर पृष्ठाभ्यां अस्त्राय फट्।

अंगन्यासः- ॐ अं, कं, खं, गं, घं, ङं, आं हृदये नमः।
ॐ इं, चं, छं, जं, झं, ञं, ईं शिरसे स्वाहा।
ॐ उं, टं, ठं, डं, ढं, णं, ऊं शिखायै वषट्।
ॐ एं, तं, थं, दं, धं, नं, ऐं कवचाय हुम्।
ॐ ओं, पं, फं, बं, भं, मं, औं नेत्राभ्यां वषट्।
ॐ अं, यं, रं, लं, वं, शं, षं, सं, हं, क्षं, अः।
करतलकर पृष्ठाभ्यां अस्त्राय फट्।

मातृका न्यासः- आधारे वं नमः। शं नमः। षं नमः। सं नमः लिङ्गे। बं नमः। भं नमः। मं नमः। यं नमः। रं नमः। लं नमः नामे। डं नमः। ढं नमः। णं नमः। तं नमः। थं नमः। दं नमः। धं नमः। नं नमः। पं नमः। फं नमः हृदये। कं नमः। खं नमः। गं नमः। घं नमः। ङं नमः चं नमः। छं नमः। जं नमः। झं नमः। ञ नमः। टं नमः। ठं नमः कंठे। अं नमः। आं नमः। इं नमः। ईं नमः। उं नमः। ऊँ नमः। ऋ नमः। ॠ नमः। लृं नमः। लॄं नमः। एं नमः। ऐं नमः। ओं नमः। औं नमः ललाटे।

अंगन्यास करन्यासौ-ॐ कामाक्ष्ये अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ कामाक्ष्ये तर्जनीभ्यां नमः। ॐ कामाक्ष्ये मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ सृष्टि कारिणी कनिष्ठाभ्यां वौषट्। ॐ कामाक्ष्ये सृष्टि रक्षिणी करतल कर पृष्ठाभ्यां अस्त्राय फट्। ॐ कामाक्ष्ये कामं हृदयाय नमः। ॐ कामाक्ष्ये शिरसि स्वाहा। ॐ कामाक्ष्ये शिखायै वषट्। ॐ सृष्टिकारिणी कवचाय हुम्। ॐ कामाक्ष्ये कामदायिनी नेत्राभ्यां वौषट्। ॐ कामाक्ष्ये सृष्टि कारिणी करतल कर पृष्ठाभ्यां अस्त्राय फट्।

प्राणायाम मन्त्र

क्लीं पूरक प्राणायाम् में सोलह बार मन्त्र को जपे। कुम्भक प्राणायाम् में चौसठ बार तथा रोचक में बत्तीस बार उच्चारण करें।

पीठन्यासः

हृदय- ॐ आधार शक्तये नमः। ॐ प्रकृत्यै नमः। ॐ कुर्म्माय नमः। ॐ अनन्ताय नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ क्षीर समुद्रायै नमः। ॐ रति द्वीपाय नमः। ॐ मणि मण्डलाय नमः।
दक्षिण-स्कन्ध- ॐ धर्माय नमः।
वाम-स्कन्ध-ॐ ज्ञानाय नमः।
दक्षिण उर मूले- ॐ वैराज्ञायः नमः।
वाम उर मूले- ॐ ऐश्वर्याय नमः।
मुख- ॐ धर्माय नमः।
दक्षिण पार्श्व-ॐ आज्ञानाय नमः।
वाम पार्श्व-ॐ अवैराय नमः।
नाभि-ॐ अनैश्वर्याय नमः।

पुनः

हृदय-ॐ शेषाय नमः। ॐ पद्माय नमः। ॐ सूर्य मण्डलाय द्वादश कलात्मने नमः। ॐ सोम मण्डलाय षोडश कलात्मने नमः। ॐ भौम मण्डलाय द्वादश कालात्मने नमः। ॐ सत्वाय नमः। ॐ रं रजसे नमः। ॐ तं तमसे नमः। ॐ आं आत्मने नमः। ॐ पं पात्मने

नमः। ॐ क्लीं ज्ञानात्मने नमः।

पीठ शक्ति न्यासः

हृतपदमस्य पूर्वादिकेशरेषु आं प्रमायै नमः। ईं आयायै नमः। ॐ गंगायै नमः। एं सूक्ष्मार्य नमः। ॐ विशुद्धयै नमः। ओं नन्दिन्यै नमः। औं प्रभायै नमः। अं विजयायै नमः। अः सर्वसिद्धदात्र्यै नमः। मध्ये-ॐ बज्र नषदंष्ट्रयुधाय महासिंहाय ॐ हुँ फट् नमः।

व्यापक न्यासः

क्लीं यह मंत्र कहते हुए सिर से पैर तक तीन बार अंग स्पर्श करें।

अर्घ स्थापन तथा शंख, घंटादि का पूजन।

ॐ अस्त्राय फट्- यह मंत्र कहकर शंख प्रक्षालन करें।

तब वाम भाग में त्रिकोण मण्डल बनाकर शंख उस पर स्थापित करें।

ॐ नमः यह मंत्र कहकर गन्ध, पुष्प, अक्षत शंख में छोड़ दें। फिर निम्न मंत्र से शंख में जल छोड़े।

ॐ ज्ञं नमः। ॐ त्रं नमः। ॐ क्षं नमः। ॐ हं नमः। ॐ सं नमः। ॐ षं नमः। ॐ शं नमः। ॐ वं नमः। ॐ लं नमः। ॐ रं नमः। ॐ यं नमः। ॐ मं नमः। ॐ भं नमः। ॐ बं नमः। ॐ फं नमः। ॐ पं नमः। ॐ नं नमः। ॐ धं नमः। ॐ दं नमः। ॐ थं नमः। ॐ तं नमः। ॐ णं नमः। ॐ ढ़ं नमः। ॐ डं नमः। ॐ ठं नमः। ॐ टं नमः। ॐ जं नमः। ॐ झं नमः। ॐ जं नमः। ॐ छं नमः। ॐ चं नमः। ॐ ङं नमः। ॐ घं नमः। ॐ गं नमः। ॐ खं नमः। ॐ कं नमः। ॐ अः नमः। ॐ अं नमः। ॐ औं नमः। ॐ ओं नमः। ॐ ऐं नमः। ॐ एं नमः। ॐ लृं नमः। ॐ लृं नमः। ॐ ॠं नमः। ॐ ऋं नमः। ॐ ऊं नमः। ॐ उं नमः। ॐ ईं नमः। ॐ इं नमः। ॐ आं नमः। ॐ अं नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्री कामाक्ष्यै नमः। ॐ पूर्णायै नमः।

भौम कलात्मने-ॐ वह्नि मण्डलाय नमः।
अंधदेश कलात्मने-ॐ सूर्य मण्डलाय नमः।
शंख षोडश कलात्मने- ॐ चन्द्रमण्डलाय नमः।

अब शंख की गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप और नैवेद्य दक्षिणादि से पंचोपचार पूजन करें। इसी प्रकार घंटा घड़ियाली का भी साथ में पूजन करें। तब हाथ में पुष्प लेकर दोनों की अलग-अलग प्रार्थना करें।

• शंख की प्रार्थना-त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुनाविधृताकरे। निर्मितः सर्व देवैश्च पञ्चजन्य नमस्तुते।

घड़ी, घंटा, घड़ियाली की प्रार्थना-

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु राक्षसाम्।
घंटानादं प्रकुर्वीत् पश्चाद् घण्टां प्रपजयेत्॥

शांति पाठ एवं मंगल श्लोक

साधक हाथ में पुष्प और चावल ले हाथ जोड़कर निम्न श्लोक पढ़े और सब देवों को नमस्कार करें।

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णदः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥
धूम्रकेतुगर्णाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशेतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्न वदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥
अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुराऽसुरैः।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः॥
सर्वमङ्गलमंगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिकेः।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते॥
सर्वदा सर्वकार्येषं नास्ति तेषाममंगलम्।
येषां हृदिस्थो भगवान् मंगलायतनो हरिः॥
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव, ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।
विद्याबलं दैवबलं तदेव, लक्ष्मीपते! तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि॥

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः। येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो, जनार्दनः॥ सर्वष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः। देवा दिशन्तु नं सिद्धिं ब्रह्मेशान जनार्दनाः॥

श्री मन्महागणाधिपतये नमः॥ लक्ष्मी नारायणाभ्यां नमः॥ उमामहेश्वराभ्यां नमः॥ वाणी-हिरण्यगर्भाभ्यां नमः॥ शचीपुरन्दराभ्यां नमः॥ मातृपितृ चरणकमलेभ्यो नमः॥ इष्टदेवताभ्यो नमः। कुलदेवताभ्यो नमः। ग्रामदेवताभ्यो नमः। स्थान देवताभ्यो नमः। वास्तु देवताभ्यो नमः॥ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः॥ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। सर्वेभ्यो तीर्थेभ्यो नमः॥

पुष्प अक्षत को श्रद्धपूर्वक पृथ्वी पर रख पुनः पुष्प अक्षत लें निम्न मंत्र से देवी की प्रार्थना करें-

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै शततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रार्य निहताः प्रणतास्म् ताम्॥

संकल्प अब कुश, अक्षत, पुष्प, जल लेकर निम्न प्रकार से संकल्प करें। (अमुक के स्थान पर आगे का नाम उच्चारण करता जाए।)

हरिः ॐ तत्सत् श्री विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य ॐ नमः परमात्मने श्री पुराण पुरुषोत्तमाय ब्रह्मणोह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्री श्वेत वाराहकल्पे जम्मूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तेक देशान्तर्गते श्री मद्विष्णुप्रजापति क्षेत्रे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे अमुक क्षेत्रे (यथा प्रयाग क्षेत्रे, विंध्य क्षेत्रे, काम्य क्षेत्रे इत्यादि) अमुक नाम सन्वत्सरे मासोत्तमे मासे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे श्रुतिस्मृतिपुराणोक्त फलप्राप्तिकामः अमुकगोत्रोत्पन्नोऽहममुक शर्माहं (ब्राह्मण शर्मा कहे क्षत्रिय वर्मा और वैश्य गुप्त कहे) सकलदुरितोपशमनं सर्वापच्छान्ति पूर्वक अमुक (यदि कोई मनोरथ हो) मनोरथ सिद्ध्यर्थं यथासपादित सामिग्रया श्री कामाख्यादेवी पूजनं करिष्ये॥

तदङ्गत्वेन कैलाश स्थापनं वरुण पूजनं सूर्यादि नौग्रह देवता स्थापनं पूजनं च करिष्ये॥

तत्रादौ निर्विघ्नता सिद्धियर्थं गणेशाम्बिकयोः पूजनं च करिष्ये॥

कहकर भूमि पर छोड़ दें।

षोडशोपचार पूजन विधान

इस प्रकार संकल्प पढ़कर हस्तगत जलाक्षत-द्रव्य किसी भूमिगत पात्र में छोड़ दें। तत्पश्चात देवी कामाख्या का पूजन आरम्भ करें। सबसे पहले निम्नांकित श्लोकों के अनुसार देवी कामाख्या का ध्यान करें तत्पश्चात उनका आवाहन करें-

ध्यान

रविशशियुतकर्णा कुंकुमापीतवर्णा,
मणिकनकविचित्रा लोलजिह्वा त्रिनेत्रा।
अभयवरदहस्ता साक्षसूत्रप्रहस्ता,
प्रणतसुरनरेशा सिद्धकामेश्वरी सा॥
अरुण-कमलसंस्था रक्तपद्मासनस्था,
नवतरुणशरीरा मुक्तकेशी सुहारा।
शवहृदि पृथुतुङ्गा स्वांघ्रि, युग्मा मनोज्ञा,
शिशुरविसमवस्त्रा सर्वकामेश्वरी सा।
विपुलविभवदात्री स्मेरवक्त्रा सुकेशी,
दलितकरकदन्ता सामिचन्द्रावनभ्रा।
मनसिज-दृशदिस्था योनिमुद्रांलसन्ती।
पवनगगनसक्तां संश्रुतस्थानभागा।।
चिन्त्या चैवं दीप्यदग्निप्रकाशा,
धर्मार्थाद्यैः साधकैर्वाञ्छितार्थः॥

आवाहन

ॐ भगवती स्वकीय गण तथा परिवार सहिते इहागच्छ इह तिष्ठ, मम पूजा गृहाण, सम्मुखे भव वरदो भव।

सिंहचर्मोत्तरासंगा कामाख्या विपलोदरी।
वैयाघ्रचर्मवसना तथा चैव हरोदरी॥
चण्डित्व चण्डिरूपोसि सुरतेजो महाबले।
आगच्छ तिष्ठ यज्ञेस्मिन् यावत् पूजां करोम्यहम्॥

प्राण-प्रतिष्ठा

विनियोग

पृथ्वी पर जल छोड़े कामाख्या देव्याः प्राण-प्रतिष्ठा मन्त्रस्य ब्रह्मा, विष्णुः महेश्वरा ऋषयः ऋग् यजुसामनिच्छंदासि चैत्यन्त देवता प्राण प्रतिष्ठायाः विनियोगः।

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः कामाक्षायाः प्राणाः इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः कामाक्षायाः जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं कामाक्षायाः (अस्यां मूर्तौं व चित्रौ) सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक् चक्षुः श्रोत्र-जिह्वा-घ्राण-पाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

**अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवतवमचीर्य मामहेति च कश्चन॥**

अब साधक या पूजनकर्ता मूल मंत्र **ॐ ह्रीं देव्यै नमः** का जप करें पुनः पूर्वोक्त विधि अनुसार अंगन्यास मातृका न्यास करावें तथा नीचे लिखे मंत्र से तीन बार पुष्पांजलि प्रदान करे-

ॐ भूः भुवः स्वः ॐ कामाक्ष्यै चामुण्डायै विद्महे भगवत्यै धीमहि तन्नो गौरी प्रचोद्यात्।

अब देवी की षोडशोपचार विधि से पूजन करें। **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा** यह देवी का द्वादश अक्षर वाला मंत्र है। इसी एक मंत्र से देवी का पूजन करना चाहिए तथा तीन पत्तियों वाले बेलपत्ते की पंखुड़ी आसन के लिए इस तरह बोलकर दें-

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्य-दान

तदनन्तर गन्ध आदि से युक्त अर्घ्यजल अर्पित करें और निम्नांकित मंत्र पढ़ें-

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा अर्घ्य समर्पयामि।

आचमनीय-अर्पण

इसके अनन्तर गंगाजल से आचमन करायें और नीचे लिखे मंत्र का उच्चारण करें-

**विनायक नमस्तुभ्यं त्रिदशैरभिवन्दित।
गङ्गोदकेन देवेश कुरुष्वाचमनं प्रभो॥**

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा आचमनीयं समर्पयामि।

स्नानीय-समर्पण

तदनन्तर नीचे दिये हुए मंत्र को बोलकर गंगाजल से स्नान कराने की भावना से स्नानीय जल अर्पित करें-

**मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देवी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥**

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा जलं समर्पयामि।

पञ्चामृत-स्नान

इसके बाद नीचे लिखे मंत्र को पढ़कर पंचामृत से स्नान करायें-

**पञ्चामृतं मयाऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥**

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा पञ्चामृत स्नानं समर्पयामि। पञ्चामृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

इसके बाद दूध-दही आदि से पृथक्-पृथक् स्नान कराकर शुद्ध जल से भी स्नान कराना चाहिये। दूध से स्नान कराने के लिए मंत्र निम्नलिखित है-

दुग्ध स्नान

**कामधेनु समुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्॥**

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा स्नानं समर्पयामि।

पयः स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

दधि-स्नान

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा, दधिस्नानं समर्पयामि।

दधिस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि॥

घृत-स्नान

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा, घृतस्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

मधु-स्नान

पुष्परेणुसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा, मधुस्नानं समर्पयामि।

मधुस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

शर्करा-स्नान

इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा, शर्करास्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

इसके बाद सुगन्धित इत्र या अन्य द्रव्य (अल्कोहल रहित) आदि अर्पित करें-

माङ्गलिक स्नान (सुवासित तैल या इत्र)

चम्पकाशोकबकुलमालतीमोगरादिभिः।
वासितं स्निग्धताहेतुतैलं चारु प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा, सुवासितं तैलं समर्पयामि।

शुद्धोदक-स्नान

तदनन्तर गंगाजल या तीर्थ जल से शुद्ध स्नान करायें।

गङ्गा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदा सिन्धुः कावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्र

शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहालंकरणं वस्त्रमतः शान्तिः प्रयच्छ मे॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा, वस्त्रं समर्पयामि।

उपवस्त्र

उत्तरीयं तथा देवी नानाचित्रितमुत्तमम्।
गृहाणेदं मया भक्त्या दत्तं तत् सफलीकुरु॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा, उपवस्त्रं समर्पयामि। तदन्ते आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा, वस्त्रोपवस्त्रार्थे रक्तसूत्रं समर्पयामि।

अलंकरण

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा, अलंकरणार्थमक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीत-समर्पण

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वरी॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा, आचमनं समर्पयामि।

चन्दन

श्रीखण्डचन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा, गन्धं समर्पयामि।

अक्षत

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वरी॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा, अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्प माला

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा, पुष्पमालां समर्पयामि।

सिन्दूर

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा, सिन्दूरं समर्पयामि।

अबीर गुलाल

अबीरं च गुलालं च हरिद्रादिसमन्वितम्।
नाना परिमलं द्रव्यं गृहाण परमेश्वरी॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्य

दिव्यगन्धसमायुक्तं महापरिमलाद्भुतम्।
गन्धद्रव्यमिदं भक्त्या दत्तं वै प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा, सुगन्धिद्रव्यं समर्पयामि।

धूप

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा, धूपमाघ्रापयामि।

दीप

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥
भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
त्राहि मां निरयाद् घोराद्दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते॥

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा, दीपं दर्शयामि।

हस्तप्रक्षालन

ॐ हृषीकेशाय नमः कहकर हाथ धो लें।

नैवेद्य-निवेदन

नैवेद्यं गृह्यतां देवी भक्तिं मे ह्यचलां कुरु।
ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परां गतिम्॥
शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा, नैवेद्यं ऋतुफलानि च समर्पयामि।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा, आचमनीयं मध्ये पानीयं उत्तरापोशनं च समर्पयामि।

करोद्वर्तन के लिये चन्दन

ॐ चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।
करोद्वर्तनकं देवी गृहाण परमेश्वरी॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा, चन्दनेन करोद्वर्तनं समर्पयामि।

पूंगीफलादिसहित ताम्बूल-अर्पण

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलाचूर्णादिसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहाः, मुखवासार्थमेलापूंगीफलादिसहितं ताम्बूलं समर्पयामि।

दक्षिणा-समर्पण

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेम बीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा, कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थं द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

हवन विधि

तुष, केश, रेत, भस्मादि निषेध वस्तु से रहित चारों कोण से हस्त परिमाण वेदी बनाना चाहिए। भूमि को कुशो से शुद्ध करे। इन कुशों को ईशान दिशा में रख कर शुद्ध गोबर और जल से लीपे। श्रुवा के अग्रभाग से वेदी के बीच में दक्षिण तरफ से शुरू करके तीन रेखा खींचे जो कि पश्चिम से पूर्व की ओर हो। अनामिका और अंगूठे से खींची हुई लकीर की मिट्टी को थोड़ा सा लेकर ईशान दिशा में फेंक दे। फिर वेदी पर जल छिड़के। वेदी के पूर्व में उत्तर की ओर अग्रभाग करके कुशा रखे। पुनः वेदी के दक्षिण में पूर्व की ओर अग्रभाग पर कुशा रखे। पुनः वेदी के पश्चिम में उत्तर की ओर अग्रभाग करके कुशा रखे। पुनः वेदी के उत्तर में पूर्व की ओर अग्रभाग करके कुशा रखे। तब कांसे के पात्र में अग्नि मँगवाए और पूर्व मुख अग्नि निम्न मंत्र द्वारा स्थापन करें-

त्वं मुखं सर्वदेवां सप्तार्चिरभिद्यते। आगच्छ भगवन्नग्ने यज्ञेऽस्मिन्सन्निधो भव॥ अग्निं आवाहयामि स्थापयामि इहागच्छ इह तिष्ठ।

ॐ पावकाग्नये नमः। इस मंत्र द्वारा पञ्चोपचार से पूजा करें। तब हाथ में पुष्प लेकर प्रार्थना करें- **ॐ अग्ने खाण्डिल्यगोत्रमेषध्वज! प्राङ्मुख मम सम्मुखो भव।**

प्रथम ये सात आहुतियाँ घी की दें-

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये इदं न मम। ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय इदं न मम। ॐ अग्नये स्वाहा। इदमग्नये इदं न मम। ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय इदं न मम। ॐ भूः स्वाहा। इदमग्नये इदं न मम। ॐ भुवः स्वाहा। इदं वायवे इदं न मम। ॐ स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय इदं न मम।

पूर्णाहुति-अब जिन-जिन मंत्रों की जितनी आहुतियाँ देनी हों वह देनी चाहिए फिर उन्हीं मंत्रों को कहने के बाद नीचे लिखे मंत्र से पूर्णाहुति दें-

ॐ सप्तमे अग्नेमधः स सप्ति जिह्वाः सप्त ऋषयः सप्त धाम प्रियाणि। सप्त होत्राः सप्त धात्वा यजन्ति सप्त योनीरापृणस्व धृतेन स्वाहा। अनेन होमेन श्री परमेश्वरी कामाक्ष्या देवी प्रीयतां न मम।

दशांश हवन के बाद दशांश तर्पण **कामाख्या तर्पयामि** इस मंत्र से तर्पण संख्या का दशांश मार्जन कामाख्या मूर्ति का, यंत्र का और मंत्र का **कामाख्यां मार्जयामि** इस मंत्र से होता है। मार्जन के प्याले में दूध, गंगाजल, चन्दन में से एक अथवा तीनों सम्मिलित होना चाहिए यह मार्जन दूब से किया जाता है और अंत में मार्जन संख्या का दशांश ब्राह्मण भोजन हो तब मंत्र जप की अथवा पाठ की पूर्णता होती है।

जप समर्पण- मंत्र जप पूरा करके उसे भगवती को समर्पण करते हुए कहें-

गुह्यति गुह्य गोप्त्री त्वं, गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देवि, त्वत्प्रसादान्महेश्वरि।

इस प्रकार देवी के बाँए हाथ में जप समर्पण करे।

अब श्रुवा से भस्म लेकर लगाएँ-

ॐ त्र्यायुषं जमदग्ने इति ललाटे।
ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम् इति ग्रीवायां।
ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम् इति दक्षिण बाहुमूले।
ॐ तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम् इति हृदि।

अब वेदी के चारों तरफ रखी हुई कुशाओं को अग्नि में डाल दें। आचार्य और ब्राह्मणों को दक्षिणा दें तब हाथ में पुष्प लेकर प्रार्थना करें।

नीराजन या आरार्तिक (आरती)

आरती कामाक्षा देवी की।

जगत् उधारक सुर सेवी की॥
॥ आरती कामाक्षा देवी की॥

गावत वेद पुरान कहानी।
योनिरूप तुम हो महारानी॥
सुर ब्रह्मादिक आदि बखानी।
लहे दरस सब सुख लेवी की॥
॥ आरती कामाक्षा देवी की॥

दक्ष सुता जगदम्ब भवानी।
सदा शंभु अर्धंग विराजिनी।
सकल जगत् को तारन करनी।
जै हो मातु सिद्धि देवी की॥
॥ आरती कामाक्षा देवी की॥

तीन नयन कर डमरू विराजे।
टीको गोरोचन को साजे॥
तीनों लोक रूप से लाजे।
जै हो मातु! लोक सेवी की॥
॥ आरती कामाक्षा देवी की॥

रक्त पुष्प कंठन वनमाला।
केहरि वाहन खंग विशाला॥
मातु करे भक्तन प्रतिपाला।
सकल असुर जीवन लेवी की॥
॥ आरती कामाक्षा देवी की॥

कहैं गोपाल मातु बलिहारी।
जाने नहिं महिमा त्रिपुरारी॥
सब सत होय जो कह्यो विचारी।
जै जै सबहिं करत देवी की॥
॥ आरती कामाक्षा देवी की॥

प्रदक्षिणा

नमस्ते देवि देवेशि नमस्ते ईप्सितप्रदे।
नमस्ते जगतां धात्रि नमस्ते भक्त वत्सले॥

दण्डवत प्रणाम

नमः सर्वाहितार्थायै जगदाधार हेतवे।
साष्टांगोऽयं प्रणामस्तु प्रयत्नेन मया कृतः॥

वर याचना

पुत्रान्देहि धनं देहि सौभाग्यं देहि मंगले।
अन्यांश्च सर्व कामांश्च देहि देवि नमोऽस्तुते॥

क्षमा प्रार्थना

ॐ विधिहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं यदिच्छित्।
पूर्णं भवतु तत्सर्वं त्वत्प्रसादात् महेश्वरीम्॥

देवी विसर्जन

गच्छ देवि महामाया कल्याणं कुरु सर्वदा।
यथाशक्ति कृता पूजा भक्त्या कमललोचने॥
गच्छन्तु देवताः सर्वे दत्वा में वरभीप्सितम्।
त्वम् गच्छ परमेशानि सुख सर्वत्र गणैः सह॥

पूजन करने वाले को चाहिए कि पूजित देवों के आसन को दाहिने हाथ से स्पर्श करे (हिला दे) ब्राह्मणों को दक्षिणा देने के बाद अभिषेक कराएं अर्थात आचार्य और ब्राह्मण लोग यज्ञकर्ता के मस्तक पर जल के छींटे डाले और मंत्र पढ़े-

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवि शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्ति वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्ति सर्व ꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि॥

ॐ शान्ति! शान्ति!! शान्ति!!! सर्वारिष्टा सुशान्तिर्भवतु!!!

प्रार्थना

आयुर्देहि यशोदेहि भाग्यं भगवति देहि मे।
पुत्रम् देहि धनं देहि सर्वान् कामांश्च देहि मे॥

जो व्यक्ति इस प्रकार कामाक्षा देवी का पूजन जप विधिपूर्वक करता है, उसकी साधना अवश्य ही सफल होती है। वह सब पापों से मुक्त होकर समस्त कामनाओं को प्राप्त करता है तथा अंत में आवागमन के बंधन से छूटकर निश्चत ही मुक्त हो जाता है। इसमें सन्देह नहीं है उसके यंत्र, मंत्र सिद्ध होकर साधक को मनोवांछित फल देते हैं।

योनि कवचम्

आम के वृक्ष से जब फल टूटता है तो उस फल में स्थित बीज पुनः एक नये वृक्ष की संरचना कर देता है। वृक्ष यह भूल जाता है कि सामने खड़ा वृक्ष कभी मेरा ही अंश था, मेरे अंदर ही पला बड़ा था एवं वह उसे अपने से अलग समझने लगता है परन्तु वास्तविकता यह नहीं है, वास्तविकता तो यह है कि सभी एक दूसरे में से उत्पन्न हुए हैं। मूल संरचना कभी नहीं बदलती डी.एन.ए. कभी नहीं बदलता बस रंग रूप थोड़ा बहुत बदल जाता है, यही माया का खेल है। मूल संरचना क्यों नहीं बदलती? क्योंकि वह शिव के द्वारा निर्मित है। मूल संरचना में तो इतनी विलक्षणता है कि मृत्यु कब होगी? भाग्योदय कब होगा? कितनी पीढ़ी बाद मूल संरचना में कुछ विलक्षण उत्पन्न होगा इत्यादि मूल संरचना में यह सब कुछ पूर्व नियोजित होता है। कब जीव को स्थानांतरित होना है? कितने हजार वर्ष बाद रूप परिवर्तन करना है? कितने लाख वर्ष बाद क्या खाना है? क्या पीना है? किस वातावरण में ढलना है? यह सब कुछ मूल संरचना में अर्थात डी.एन.ए. में अनंत काल पहले शिव ने लिख दिया है। आज अगर जीव पंचभूतीय है, प्राण-वायु ग्रहण कर रहा है तो हो सकता है कि कुछ लाख वर्ष बाद जीव अदृश्य होना सीख जाये एवं प्राण वायु की जगह किसी अन्य प्रकार की वायु को ग्रहण करना सीख जाये। आज जो जीव स्थूल भोजन पर निर्भर हैं कल वह सूर्य की ऊर्जा का भक्षण करता हुआ आज के मुकाबले ज्यादा शक्तिशाली हो जाये, ऐसा हुआ है और ऐसा होता रहेगा। मूल कोशिका के कवच के माध्यम से ही जीव पूर्ण रूप से कवचित है, योनि कवच सबसे सूक्ष्मतम और रहस्मय कवच है एवं इस कवच का भेदन, उत्कीलन, विखण्डन शिव के अलावा कोई नहीं कर सकता। साधकों को इस कवच का पाठ अवश्य करना चाहिए।

देव्युवाचा-

भगवन् श्रोतुमिच्छामि कवचं परमाद्भुतम्।
इदानीं देवदेवेश कवचं सर्वसिद्धिदम्॥

महादेव उवाच-

शृणु पार्वति! वक्ष्यामि अतिगुह्यतमं प्रिये।
यस्मै कस्मै न दातव्यं दातव्यं निष्फलं भवेत्॥

अस्य श्रीयोनिकवचस्य गुप्तऋषिः कुलटाच्छेन्दा राजविघ्नो त्पातविनाशे विनियोगः।

ह्रीं योनिर्म्मे सदा पातु स्वाहा विघ्नविनाशिनी।
शत्रुनाशात्मिका योनिः सदा मां रक्ष सागरे॥
ब्रह्मात्मिका महायोनिः सर्वान् प्ररक्षतु।
राजद्वारे महाघोरे क्रीं योनिः सर्वदावतु॥
हुमात्मिका सदा देवी योनिरूपा जगन्मयी।
सर्वाङ्गं रक्ष मां नित्यं सभायां राजवेश्मनि॥
वेदात्मिका सदा योनिर्वेदरूपा सरस्वती।
कीर्त्ति श्रीं कान्तिमारोग्यं पुत्रपौत्रादिकं तथा॥
रक्ष रक्ष महायोने सर्वासिद्धि प्रदायिनी।
राजयोगात्मिका योनिः सर्वत्र मां सदावतु॥
इति ते कथितं देवि कवचं सर्वासिद्धिदम्।
त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नित्यं राजोपद्रवनाशकृत्॥
सभायां वाक्पतिश्चैव राजवेश्मनि राजवत्।
सर्वत्र जयमाप्नोति कवचस्य जपेन हि॥
श्रीयोन्याः सङ्गमे देवीं पठेदेनमनन्यधीः।
स एव सर्वसिद्धीशो नात्र कार्या विचारणा॥
मातृकाक्षरसंपुटं कृत्वा यदि पठेन्नरः।
भुङ्क्ते च विपुलान् भोगान् दुर्गया सह मोदते॥
इति गुह्यतमं देवि सर्वधर्म्मोत्तमोत्तमम्।
भूर्जे वा ताड़पत्रे वा लिखित्वा धारयेद् यदि॥
हरिचन्दनमिश्रेण रोचना-कुङ्कमेन च।
शिखायामथवा कण्ठे सोऽपीश्वरो न संशयः॥
शरत्काले महाष्टम्यां नवम्यां कुलसुन्दरि।
पूजाकाले पठेदेनं जयी नित्यं न संशयः॥

॥ इति शक्ति कागमसर्वस्वे हरगौरीसंवादे श्रीयोनिकवचं समाप्तम्॥

कामाख्या रहस्यम्

काम शरीर के किन-किन अंगों में उत्कृष्ट रूप से विद्यमान है? काम का प्रादुर्भाव कैसे होता है? स्त्री काम कलाओं का सृजन किस प्रकार करती है? पूर्णिमा से लेकर अमावस्या तक काम किस प्रकार घटता-बढ़ता है? काम को स्थिर एवं स्वस्थ रखने के क्या-क्या विधान हैं? इत्यादि-इत्यादि अनेक प्रकार के गूढ़ एवं सौन्दर्यात्मक प्रश्नों की झड़ी मण्डन-मिश्र की अर्धांगिनी उभय-भारती ने विद्ववानों, पण्डितों, संन्यासियों एवं गृहस्थों की विशाल जनसभा में आदि गुरु शंकराचार्य जी के ऊपर प्रक्षेपित कर दी। आदि गुरु शंकर के सामने अति सौन्दर्यवान, परम विदुषी उभय भारती शास्त्रार्थ हेतु बैठी हुई थीं। मण्डन मिश्र, आदि शंकर से शास्त्रार्थ में पराजित हो गये थे परन्तु उभय भारती बोलीं हे संन्यासी अभी मेरे पति पराजित नहीं हुए हैं क्योंकि वे गृहस्थ हैं अत: उनके वाम भाग में शक्ति रूपा उभय-भारती विराजमान हैं। आप तो संन्यासी ठहरे, आप स्त्री विहीन हैं परन्तु गृहस्थ स्त्री युक्त होता है अत: मुझसे भी आपको शास्त्रार्थ करना पड़ेगा एवं जब तक मैं पराजित नहीं हो जाती आपकी विजय सम्पूर्ण नहीं होगी। पद्मपाद सहित अनेकों आदि शंकर के शिष्य उभय भारती एवं भगवत्पाद के बीच शास्त्रार्थ के पक्ष में नहीं थे। **शंकराचार्य भी कई जगह कच्चे रहे हैं, वे बोल उठे हे देवि स्त्री से शास्त्रार्थ मुझे उचित प्रतीत नहीं होता। दूसरे ही क्षण उभय भारती ने आदि शंकर को जमकर फटकारा, वे कह उठीं संन्यासी मिथ्या में जीते हैं स्वयं स्त्री के गर्भ से उत्पन्न होते हैं और स्त्री को लाचार, निरीह एवं न्यून समझते हैं। शंकर परम मर्मज्ञ महामानव थे अत: अपनी गलती स्वीकार कर बैठे, वे समझ गये कि अंदर कहीं कुछ स्त्री सम्बन्धित भय है, कुछ ग्रंथियाँ हैं जिनका भेदन आवश्यक है अत: शास्त्रार्थ प्रारम्भ हुआ।** उभय-भारती ने देखा, जाँचा-परखा, कसौटी पर शंकर के ज्ञान, पाण्डित्य, विद्वता एवं सूक्ष्मदर्शिता को कसा पर शंकर खरे उतरे, कहीं से भी कोई छिद्र नहीं पाया तब अंत में उभय भारती ने एक बाल ब्रह्मचारी की सबसे बड़ी कमजोरी अर्थात कुल ज्ञान, कौल विज्ञान, काम शास्त्र, कोक ज्ञान इत्यादि की न्यूनता पर ऊपर वर्णित प्रश्नों के द्वारा भीषण प्रहार कर दिया। **शंकर की**

गर्दन झुक गई, शंकर निरूत्तर हो गये, शंकर के कंठ में शब्दों का बंधन हो गया, सभा स्तब्ध हो गई, संन्यासी शिष्यों की मण्डली अपने गुरु को पराजित होता हुआ देख हाहाकार कर उठी। उभय भारती बोलीं हे मुण्डी मेरे प्रश्नों का उत्तर दो अन्यथा पराजय स्वीकार करो। शंकर स्तब्ध थे सम्पूर्ण जगत में दिग्विजय का परचम लहराने वाले, अकाट्य शैव तर्क के उद्घोषक आज मौन थे। बोलते तो संन्यास धर्म खण्डित होता और नहीं बोलते तो पराजय निश्चित थी। आदि शंकर के जीवनकाल में यह सबसे विकट क्षण थे। आखिर-कार शंकर बोले हे देवि आप उचित प्रश्न कीजिए, शास्त्र सम्बन्धित प्रश्न पूछिए, तंत्र के ऊपर शास्त्रार्थ कीजिए। **उभय भारती ने कड़ककर कहा आप गुरु बनने योग्य नहीं हैं, आप गुरु कहलाने योग्य नहीं हैं, क्या काम शास्त्र को आप शास्त्र नहीं मानते? क्या काम विद्या को आप महाविद्या के अंतर्गत नहीं मानते? क्या कौल विज्ञान को आप शिव से प्रादुर्भावित नहीं मानते? क्या शिव ने पार्वती से काम रूपी महाज्ञान का वर्णन नहीं किया? क्या शिव के द्वारा चौषठ वाम तंत्रों में काम तंत्र प्रमुख नहीं है? कैसे शिव साधक हैं आप? कैसा है आपका शिव ज्ञान? आपके अंदर कहीं काम को लेकर कोई अल्पता है? आप कहीं न कहीं सूक्ष्मातीत रूप से काम के द्वारा भयभीत हैं इसलिए काम को तुच्छ मानते हैं, काम की व्याख्या करने में घबरा रहे हैं। इस पत्रिका में आदि शंकर प्रेरणा स्त्रोत हैं अर्थात सब कुछ हैं।** आदि शंकर हमारे लक्ष्य हैं फिर भी मैं आदि शंकर के जीवन के उन आवरणों को खोल रहा हूँ जो कि ढँकने योग्य होने चाहिए क्योंकि अंक का नाम ही कामाख्या तंत्र है। जब शिव पार्वती से किसी महाज्ञान, गुप्त ज्ञान या गोपनीय ज्ञान की चर्चा करते हैं तो सदैव उन्हें हिदायत देते हैं कि **हे देवि इस गहनतम् गूढ़तम् ज्ञान को किसी से न कहना एवं इसे इस प्रकार गोपनीय रखना जैसे कि एक स्त्री अपने योनि भाग को सदैव ढाँककर रखती है।** शिव और पार्वती हिमालय पर काम विलास में लीन रहते हैं, शिव और पार्वती की युति ही काम विलास है, उनकी प्रणय लीला ही सृष्टि की वृद्धि एवं उद्गम का हेतु है। महाकवि कालीदास पर काली की कृपा थी, वे काली पुत्र थे। काली और काम के बीच चोली दामन का साथ है, उन्हें दिव्य-चक्षु काली ने प्रदान किये थे अतः जो सौन्दर्य कालीदास ने देखा, जो गोपनीय दृश्य कालीदास ने अनुभूत किये, जो दिव्यता कालीदास ने ग्रहण की वो आम मनुष्य नहीं कर सकता तभी तो मेघदूतम्, अभिज्ञान शाकुंतलम् से लेकर कुमार सम्भव, रघुनाथ चरित्रम् तक बस कालीदास शिव और शक्ति के बीच हुए दुर्लभ काम विलास को रचते हुए महाकवि बन गये परन्तु कुमार सम्भव पूरा नहीं कर पाये क्योंकि बीच में ही शापित हो गये। हाँ शिव शक्ति द्वारा शापित हो गये अन्यथा इस जगत को महाकाम शास्त्र प्राप्त हो गया होता ग्रंथ के रूप में, शिव और शक्ति के विहंगम

प्रणव-दृश्य प्राप्त हो गये होते सृष्टि ही बदल जाती, सृष्टि और भी सौन्दर्यवान, उत्तेजक, मादक एवं जीने योग्य हो जाती अगर कुमार सम्भव पूरा लिख गया होता परन्तु शिव शक्ति ने ऐसा नहीं होने दिया। कालीदास ने जो कुछ देखा, जो कुछ अनुभूत किया वह पूरा का पूरा ग्रंथ के रूप में कभी नहीं उतर पाया। मनुष्यों को अभी सम्पूर्ण विलास नहीं मिला है, मनुष्य में काम पूर्ण नहीं है अतः यहाँ पर पुनः एक बार कहना चाहूँगा कि सारे बंधन काट रहा हूँ। इस अंक का वर्गीकृत किया जा रहा है, इसे स्वयं ही लिखूंगा। शालीनता एवं मर्यादा के अंतर्गत एक बार पुनः इस अंक में शिष्यों एवं साधकों का प्रतिनिधित्व शून्य किया जा रहा है। यही उचित है, यह मार्ग ही ऐसा है। पुनः मूल पर लौटता हूँ, आदि शंकराचार्य के संन्यासी शिष्य बोले हे गुरुदेव आप कहाँ व्यर्थ के जंजाल में उलझ रहे हैं चलिए यहाँ से, कृपया इन सब प्रश्नों का उत्तर मत दीजिए, ये सब प्रश्न तो नर्क के द्वार हैं, भलाई इसी में है कि हमारे कानों ने जो न चाहते हुए भी विकार ग्रस्त प्रश्न सुन लिए हैं उसके प्रायश्चित हेतु हमें नर्मदा स्नान करके पुनः अपने आपको शुद्ध और पावन कर लेना चाहिए। शिष्य तो शिष्य होते हैं परन्तु आदि शंकर बोले हे देवि 20 दिन का समय दीजिए, आपके प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दूंगा, प्रत्येक जिज्ञासा को शांत करूंगा, आपके प्रश्न मुझे स्वीकार्य हैं। सभा विसर्जित हुई, शंकर की शिष्य मण्डली चल पड़ी। शिष्य कहने लगे हे गुरुदेव आप भ्रष्ट हो जायेंगे,

नारियाँ भ्रष्ट करती हैं, वे संन्यास धर्म की सबसे बड़ी बाधक हैं अतः आप यह सब कुछ छोड़-छाड़कर हमारे साथ चलिए। शंकराचार्य जी ने कहा जो कुछ होगा मैं झेलूंगा, तुम शिष्यों को इससे अलग करता हूँ, परकाया प्रवेश करूंगा, सम्पूर्ण काम कला सीखूंगा निष्काम भाव से, निर्लिप्त भाव से, दोष लगेगा तो उसका निवारण मैं खुद कर लूंगा। यह मेरा विषय है। तभी सामने एक राजा का शव आ रहा था, अनेकों रानियाँ विलाप कर रही थीं। शंकर ने शिष्यों से कहा मेरे शरीर को किसी सुरक्षित गुफा में रख लेना, मैं ठीक 20 दिन बाद पुनः आकर इसमें प्रविष्ट हो जाऊंगा। इसके पश्चात् आदि शंकर ने अंगूठे से प्रारम्भ करके अपने सूक्ष्म प्राण को ब्रह्म रंध्र में स्थिर कर उस मृत राजा की देह में प्रवेश कर लिया एवं राजा पुनः जीवित हो उठा। राजा अब पहले की तुलना में ज्यादा भोग विलासी हो गया, ज्यादा कामोत्तेजक हो गया। राजा अब दान धर्म भी खुलकर करने लगा, राजा का राज्य खुश-हाल हो उठा, विपत्तियों का निवारण भी अपने आप होने लगा, प्रजा समस्या विहीन हो गई क्योंकि राजा के शरीर में आदि शंकर के दिव्य प्राण प्रतिष्ठित हो चुके थे। अनेकों रानियों से सदैव राजा घिरे रहते, उन्हें संतुष्ट करते रहते, उनकी भंगिमाओं, उनके सौन्दर्य, उनकी विलासिता का वह सूक्ष्मता से निरीक्षण करते रहे। **यह सब तो होना ही था क्योंकि आदि शंकर की यह परम गोपनीय आध्यात्मिक यात्रा लक्ष्य आधारित थी और इसका एकमात्र लक्ष्य था कामसूत्र में सर्वोच्चता हासिल करना काम के गोपनीय रहस्यों को समझना इत्यादि-इत्यादि। अतः सम्पूर्ण यात्रा केवल काममय थी।** 20 दिन बीत गये रानियों को कुछ शक हो गया अचानक पता चला कि वास्तविकता क्या है? शिष्यों से भी अब रहा नहीं गया। **उनके छोटे-छोटे, नन्हे-नन्हें मस्तिष्क शंका से ग्रसित हो गये कि कहीं गुरुदेव हाथ से तो नहीं निकल गये, कहीं गुरुदेव त्रिया जाल में तो नहीं उलझ गये अतः बेचारे अपने गुरुदेव को मुक्त कराने राजमहल जा पहुँचे और राजा के सामने प्रार्थना करने लगे कि हे गुरुदेव वापस चलिए हम आपका उद्धार करने आये हैं।** रानियों के आदेश पर राज्य के सैनिकों ने आदि शंकराचार्य के शरीर को गुफा से प्राप्त कर चिता पर रख दिया और

जैसे ही आग लगाने को उद्धत हुए आदि शंकर चैतन्य हो बैठे, चिता से नीचे उतर आये। शंकर ने कुल ज्ञान प्राप्त कर लिया, कौल तंत्र में निपुणता हासिल कर ली। शिष्यों को जब मालूम चला कि रानियों ने इतनी बड़ी धृष्टता की, शंकर के दिव्य शरीर को नष्ट करने की कोशिश की तो वे क्रुद्ध हो उठे। स्वार्थ की चरमता देख, स्त्री स्वभाव के परम पतन को देख वे रानियों को शाप दे उठे, उन्हें चमगादड़ योनि प्राप्त होने का श्राप दे दिया। **बड़ी अजीब बात है रुद्राक्ष के फल जब पकते हैं, बेल का फल जब पकता है, रामफल जब पकता है तो पेड़ के रखवाले परेशान हो उठते हैं क्योंकि चमगादड़ रुद्राक्ष की सबसे बड़ी दुश्मन है। रुद्राक्ष हो, बिल्व का फल हो या रामफल ये सब चमगादड़ों को अत्यंत प्रिय हैं। वे सबकी सब टूट पड़ती हैं रुद्राक्ष के वृक्ष पर रुद्राक्ष भक्षण हेतु, उनकी निगाह रुद्राक्ष पर टिकी हुई होती है। बेचारे पेड़ के मालिक रुद्राक्ष के पेड़ पर जाल लगाते हैं, रुद्राक्ष के फलों को कपड़ों से बांधकर रखते हैं चमगादड़ से बचाने हेतु।** बड़ी सारगर्भित बात है क्योंकि आदि शंकर ने स्वयं अपने शरीर को बचाने के लिए शिष्यों को आदेशित कर रखा था, शिवत्व बचाकर ही रखना पड़ता है, **संन्यास धर्म बहुमूल्य है अतः उसकी सुरक्षा तो करनी ही पड़ेगी। अन्यथा कहीं कोई चमगादड़ रूपी स्त्री संन्यास के सत्य को नष्ट कर ही देगी। कोई भी पशु-पक्षी रुद्राक्ष के फल का भक्षण नहीं करता सिवा चमगादड के।** नेपाल, हिमालय के कुछ क्षेत्र इत्यादि में ही रुद्राक्ष के वृक्ष उत्तम किस्म के फल प्रदान करते हैं क्योंकि यह शिव क्षेत्र है एवं काम यहाँ पर वर्जित है, कामातुर जीव यहाँ पर टिक नहीं पाते। अन्य स्थानों पर रुद्राक्ष या तो फलित नहीं होता या फिर उसे फलित करने के लिए कठिन श्रम एवं सुरक्षा करनी पड़ती है इसलिए रुद्राक्ष दुर्लभ है। पाश्चात्य देशों ने तुलसी के पौधे, बिल्व पत्र, रुद्राक्ष, अन्य विलक्षण जड़ी बूटियाँ देखीं वे उनके गुणों को देखकर चमत्कृत हो उठे परन्तु उनके पास केवल सांख्य योग है अर्थात विज्ञान की सबसे घटिया शाखा, चेतना तो उनके पास है ही नहीं, प्राण शक्ति से वे पूरी तरह शून्य हैं। उन्होंने रुद्राक्ष, तुलसी, हल्दी, बेल पत्र, अन्य दिव्य वनस्पति अपने यहाँ की भूमि में उगाई, वे सोच रहे थे कि अब वे भी इन सबकी खेती कर लेंगे परन्तु परिणाम बिल्कुल उल्टे निकले। **वहाँ की भूमि में ये सब साधारण पेड़**

हरिहराद्याश्च ये देवाः सृष्टि स्थित्यन्तकारकाः।
सर्वे वै योनिसम्भूताः श्रृणुष्व नगनन्दिनि॥
शक्तिमन्त्रमुपास्यैव यदि योनिं न पूजयेत्।
तेषां दीक्षाश्च मन्त्राश्च ठ नरकायोपपद्यते॥
अहं मृत्युञ्जयो देवि तव योनि प्रसादतः।
तव योनि महेशानि भावयामि अहर्निशम्॥
पूजयामि सदा दुर्गे हृत्पद्मे सुरसुन्दरि।
दिव्यभावो वीरभावो यस्य चित्रे विराजते॥
अनायासेन देवेशि तस्य मुक्तिः करे स्थिता।
शक्तिमन्त्रं पुरस्कृत्य यो वा योनिप्रपूजकः॥

हे नगनन्दिनि! श्रवण करो। सृष्टि स्थिति एवं प्रलयकर्ता ब्रह्मा, विष्णु एवं रुद्र प्रभृति समस्त देवगण इस योनि अर्थात आद्याशक्ति से समुत्पन्न हैं। शक्ति मंत्र उपासक यदि योनिपीठ की पूजा न करें, जिसमें उसकी दीक्षा हुई है, तो मंत्र एवं पूजा प्रभृति सबकुछ नरक गमन का कारण हो जाता है।

हे देवि! तुम्हारी योनि अर्थात शक्ति प्रभाव के ही कारण मैं अहर्निश चिंता एवं सर्वदा अपने हृत्पद्म में तुम्हारी पूजा करता हूँ। उस हृदय में तुम दिव्यभाव एवं वीरभाव से विराजमान हो। हे दुर्गे! मुक्ति तो अनायास ही तुम्हारे करतलगत है। जो व्यक्ति शक्तिमंत्र का आश्रय लेकर योनिपीठ अर्थात शक्तिपीठ की उपासना करता है वह व्यक्ति धन्य है। वह व्यक्ति, कवि, धीमान एवं सुरासुरगणों द्वारा वन्दनीय है।

पौधे बन गये। चन्दन की खुशबू गुप्त हो गई, रुद्राक्ष बेर की गुठली बन गये, बेल पत्र जंगली वनस्पति में परिवर्तित हो गया, हल्दी के प्रतिरोधक तत्व नष्ट हो गये इत्यादि-इत्यादि। इतनी मेहनत की बेचारों ने और परिणाम निकला महाशून्य। उनके हर-एक तथाकथित विज्ञान का यही परिणाम होता है इसे कहते हैं योनि तंत्रम्। भूमि से बढ़कर कौन सी योनि है? बीज का महत्व शून्य है, बीज से कुछ नहीं होता। होता है तो योनि से। जैसी योनि होगी, जैसी योनि की गुणवत्ता होगी वैसा ही वृक्ष पल्लवित होगा। पहले योनि बनाओ, योनि को सिद्ध करो, योनि को सुपूजित करो योनि को समझो तब जाकर परिणाम की बात करो। योनि चाहे तो देव बीज से असुर उत्पन्न कर दे, योनि चाहे तो असुर के घर में विभीषण निर्मित कर दे और योनि चाहे तो संत के बीज को राक्षसराज में परिवर्तित कर दे। परिवर्तन, पल्लव, विकास का क्षेत्र है योनि मण्डल। वेदों से भी प्राचीन क्या है? प्रथम महाज्ञान क्या है? प्रथम विज्ञान क्या है? प्रथम सीखने योग्य कला क्या है? वह कौन सी सिद्धि है? जिसे सर्वप्रथम ब्रह्मा ने शिव से प्राप्त किया। निश्चित ही वह काम सिद्धि है, ब्रह्मा ने अपने जीवन में अथक तपस्या, अथक श्रम किस सिद्धि को प्राप्त करने में किया? उसका नाम है काम सिद्धि। ब्रह्मा को गर्व अपने किस आविष्कार पर है? ब्रह्मा, पर-ब्रह्म क्यों बने? ब्रह्मा सुपूजित क्यों हैं? क्योंकि उन्होंने योनि सिद्धि की। महादेवि से योनि रहस्यम् समझा, शिव को जीव के रूप में योनि के द्वारा परिवर्तित किया। शिव और जीव में क्या भेद हैं? वास्तव में शिव जब योनि मार्ग के द्वारा त्रिपुटीकृत हो जाता है तब वह जीव कहलाता है। योनि ही वह क्षेत्र है जिसमें कि शक्ति शिव को तीन आवरणों से अभिसिंचित करती है। प्रथम वह शिवांश में यह भाव डालती है कि वह अणु के समान न्यून है, वह इस ब्रह्माण्ड का एक छोटा सा हिस्सा है। द्वितीय वह शिवांश को भय युक्त करती है, उसे जीवन एवं मृत्यु के भय युक्त आवरण से अभिसिंचित करती है। तृतीय उसके अंदर भेद बुद्धि एवं भेदात्मक माया का सृजन करती है। इन तीन आवरणों के अभिषेक के द्वारा ही शिवांश जीव में परिवर्तित हो जाता है और सदैव जीव तीन तरह के भाव में जीता है, सदैव छटपटाता है। वह हमेशा सोचता है कि मैंने ज्ञान प्राप्त कर लिया यह प्रथम भाव है। द्वितीय भाव, मैं ज्ञान से सायुज्य कर लूं। तृतीय भाव ज्ञान और उसके बीच सदैव दूरी होने की अनुभूति है परन्तु वास्तव में ज्ञान कोई प्राप्त नहीं करता, ज्ञान का कोई आविष्कार नहीं करता, ज्ञान और ज्ञाता के बीच की दूरी मिथ्या है। ज्ञान और ज्ञाता कभी अलग नहीं हैं। ज्ञान तो सदैव विद्यमान हैं। उसकी कोई खोज नहीं कर सकता क्योंकि वह छिपा हुआ ही नहीं है और इस प्रकार त्रिकोण की रचना होती है। त्रिकोण के ये तीन बिन्दु ही शक्ति के तीन प्रमुख अंग हैं और इसी अधोमुखी त्रिकोण में शिवांश जीव के रूप में प्रतिष्ठित हो जाता है। अतः इन तीन महापाशों से मुक्ति के लिए उद्गम को पूजना पड़ता है और उद्गम है योनि द्वार। वह द्वार जहाँ से जीव एक नया रूप, एक नई कर्म श्रृंखला, एक नया भाग्य लेकर सृष्टि में अपनी आँखें खोलता है। आता तो जीव योनि द्वार से ही है और योनि में स्थापित होने, योनि में रूप लेने, योनि में निवास करने की कीमत तो चुकानी ही पड़ती है। माया के अंतर्गत तो रहना ही पड़ता है, यही योनि मार्ग से प्रादुर्भावित होने के नियम हैं **इसलिए इस संसार में जीव रूपी शिवांश छटपटाता है, पाँव पटकता है, संन्यास ग्रहण करता है, गुरु रूपी योनि के सानिध्य में जाता है, पुस्तकें पढ़ता है, ध्यान करता है परन्तु योनि के विलास को नहीं समझ पाता क्योंकि योनि मण्डल की अधिष्ठात्री हैं कामाख्या अर्थात काम की व्याख्या, काम की नायिका, इनका एक और तांत्रिक नाम है त्रिपुर**

योनिदर्शनमात्रेण कुलकोटिं समुद्धरेत्।
चन्द्रसूर्योपरागे च यदि योनिं प्रपूजयेत्॥
तर्पणं योनितत्वेन न पुनर्ज्जायते भुवि।
क्रमशो लोकमासाद्य देवीलोके महीयते॥
तत्र तिष्ठेत् साधकेन्द्रः शक्तयायुक्तो महेश्वरः।
महाशङ्खेन कल्याणि सर्व्व कार्य्य जपादिकम्॥

योनिपीठ के दर्शन मात्र से साधक के कोटिकुल का उद्धार हो जाता है। चन्द्र और सूर्य ग्रहणकाल में भी जो व्यक्ति योनिपीठ की पूजा करे और योनितत्त्व द्वारा तर्पण करे, वह व्यक्ति जन्म मुक्त हो जाता है। वह व्यक्ति मृत्योपरांत ऊंचे से ऊंचा लोक प्राप्त कर महाशक्ति के साथ संयुक्त होकर उस स्थान पर अवस्थित होता है। जहाँ सर्वदा महेश्वर स्थित रहते हैं। साधक श्रेष्ठ महाशङ्ख की माला का जाप करते हुए समस्त कार्य (समस्त काम्य जप) सम्पन्न करेगा।

सुन्दरी अर्थात तीनों पुरों की सुन्दरी। जिनके सौन्दर्य, विलास, ऐश्वर्य एवं परम दिव्य रूप से तीनों-पुर मोहित हैं। जिनकी माया के अधीन इस सृष्टि के तीनों पुर हैं, वे तीनों पुरों की एकमात्र नायिका हैं। विष्णु सिंह के रूप में विराजमान हैं एवं उनके ऊपर सदाशिव लेटे हुए हैं शव के रूप में और सदाशिव की नाभि से कमल रूपी ब्रह्मा उदित हो रहे हैं और उस पर विराजमान हैं कामाख्या। तीनों देव पशु एवं वनस्पति भाव से ग्रसित हैं एवं उन पर एकमात्र शासन करने वाली देवी हैं कामाख्या। काम का प्रामाणीकरण, काम की मोहर यही कामाख्या रूपी विग्रह इस जगत में प्रमाणिक करता है। काम के अभाव में तंत्र शव के समान है। जिसने योनि के रहस्य को नहीं समझा वह निश्चित ही काम के विकार से ग्रस्त होगा, वह निश्चित ही काम विहीन होगा, वह निश्चित ही सृजन की अल्पता का प्रतीक होगा। **काम विकार से ग्रसित जीव कभी शिवत्व को प्राप्त नहीं कर सकता, काम से भागता जीव कहीं ठौर नहीं प्राप्त कर सकता एवं उसे पुनः-पुनः योनि के अधीन होना ही पड़ेगा, पुनः-पुनः योनि द्वार से बाहर आना ही पड़ेगा क्योंकि त्रिपुर सुन्दरी की यह साक्षात अवज्ञा है।** चाहे स्त्री हो या पुरुष त्रिपुर सुन्दरी की अवज्ञा कर न तो भोग मिलेगा न मोक्ष। भोग और मोक्ष दोनों त्रिपुर सुन्दरी के माध्यम से ही मिलेंगे। योनि का भेदन योनि को बिना समझे सम्भव नहीं है। योनि की विराटता, योनि की गूढ़ता, योनि की दिव्यता केवल आध्यात्मिक दृष्टिकोण से ही समझी जाती है। आदि शंकर भी यह समझ गये थे क्योंकि उनका अध्यात्म बच्चों का अध्यात्म नहीं था, अपरिपक्व मस्तिष्क का अध्यात्म नहीं था, सड़े गले वृद्ध मस्तिष्कों का अध्यात्म नहीं था। वास्तव में कल्याणकारी, प्रचण्डात्मक अध्यात्म ही जीव को बंधनों से मुक्त कर सकता है। वयस्क अध्यात्म, परिपक्व अध्यात्म, युवा अध्यात्म ही वास्तविक अध्यात्म है एवं यह दुर्लभ है। यह किस्मत वालों को प्राप्त होता है, यही गुरु कृपा है। बच्चे खिलौने से खेलते हैं, मन बहलाते हैं वैसे ही अधिकांशतः मनुष्य कथा सुनते हैं, बेमतलब की पूजा पाठ करते हैं, सारा जीवन व्रत उपवास, झांकी इत्यादि में बीत जाता है। मन बहलता रहता है, बच्चों के समान। कुछ बूढ़े वृद्ध घिसे-पिटे होते हैं वे लकड़ी के सहारे चलते हैं, खांसते रहते हैं, बोलते कुछ हैं और निकलता कुछ है। बेचारे कुंठित होते हैं इसलिए बूढ़ों का अध्यात्म भी प्रादुर्भावित हो गया, यहाँ पर अध्यात्म के रूप में उन्हें बैसाखी मिल जाती है। एक लाठी मिल जाती है वृद्ध हमेशा सहारा ढूंढते हैं, वृद्ध हमेशा असुरक्षित होते हैं, उनके पाँव कांपते हैं इसलिए उनका तथाकथित अध्यात्म तथाकथित पवित्र होता है, तथाकथित संन्यास और ब्रह्मचर्य युक्त होता है। इसी प्रकार के बूढ़े आवरणों की बात करते हैं, त्रिपुर सुन्दरी के विलास को ढांकने की कोशिश करते हैं, सौन्दर्य को पर्दा-नशीन करते हैं क्योंकि वृद्ध और सौन्दर्य का क्या मेल? भोग और वृद्धता तो विपरीत धारायें हैं इसलिए वास्तविक

अध्यात्म जनमानस से कट गया क्योंकि अधिकांशत: स्थानों पर वृद्धों का शासन है। इसी वृद्ध अध्यात्म की कुयोनि में से विकृत एवं भ्रष्ट कामुकता का उदय होता है। जैसी योनि होगी वैसी ही संतान उदित होगी। विडम्बना यह है कि 90 प्रतिशत जीव वयस्क ही नहीं होता। 90 प्रतिशत जीव विशेषकर मनुष्य योनि स्वस्थ रूप से जी ही नहीं पाती। कुछ क्षण बाल्यावस्था अर्थात अपरिपक्वता, उसके पश्चात् जीवन के अंतिम समय तक वृद्धावस्था झेलनी पड़ती है क्योंकि वृद्धों के शासन के अंतर्गत निवास करने की भारी विडम्बना मनुष्य जाति को सदैव से झेलनी पड़ी है। पैगम्बर युवा थे, महावीर युवा थे, रजनीश युवा थे, बुद्ध युवा थे, ईसा भी युवा थे, कृष्ण भी युवा थे, राम भी यौवन सम्पन्न थे, शंकराचार्य भी युवा थे, गुरु गोविन्द सिंह जी भी युवा थे। **एक भी महापरिवर्तक न तो बच्चों के अध्यात्म में उलझे, न ही उन्होंने बूढ़े घिसे-पिटे पण्डितों, पुजारियों, संन्यासियों एवं मठाधीशों और राजगुरुओं की बकवास पर ध्यान दिया इसलिए बूढ़ों ने अपनी कुरुपता छिपाने के लिए, अपना खोखलापन ढँकने के लिए, अपने घिसे-पिटे ऊर्जाविहीन हो चुके सिद्धांतों को थोपने के लिए सदैव वयस्क अध्यात्म, स्वस्थ अध्यात्म, काम विकार से मुक्त अध्यात्म का गला घोंटने की कोशिश की परन्तु मान्यता वास्तव में वयस्क अध्यात्म को ही मिली।** पूजे वे ही गये, लोगों ने सुना उन्हें ही जो शिव और शक्ति से युक्त थे। बुद्ध ने लिखा मैंने अपने जीवन में सम्पूर्ण विलास को अनुभव किया। 32 वर्ष की उम्र में विवाहित बुद्ध ने, राजा बुद्ध ने, संतान के पिता बुद्ध ने आत्म मंथन प्रारम्भ किया। महावीर भी विवाहित थे पुत्र-पुत्रियाँ थीं, राजा थे एवं भोग विलास और ऐश्वर्य उन्होंने भी अनुभूत किया, आदि शंकर ने तो परकाया प्रवेश कर सब कुछ अनुभूत किया। एक भी व्यक्तित्व भोग, विलास, ऐश्वर्य, सौन्दर्य को तिरस्कृत नहीं कर सका योनि मण्डल से सब आये थे। योनि चक्र के अंतर्गत सबने श्वास-प्रश्वास लेना सीखी है। सबके सब मैथुनी सृष्टि के अंग हैं अत: सत्य को नहीं नकारा जा सकता, सबसे बड़ी समस्या तो यही है कि सत्य को सत्य कहना सबसे बड़ा पाप है वृद्धों के अध्यात्म में। यह पृथ्वी एक चिड़ियाघर है एवं महामाया त्रिपुर सुन्दरी यहाँ पर विभिन्न योनियों के माध्यम से सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर अब तक जितने भी प्रकार के विहंगम सोच वाले, विभिन्न कर्म वाले जीवों को यहाँ पर संजोकर रखे हुए हैं। आपको संन्यासी भी मिल जायेंगे, आपको कामुक भी मिल जायेंगे, आपको गृहस्थ भी मिल जायेंगे, आपको नाना प्रकार के सोच वाले मनुष्य देखने को मिल जाते हैं परन्तु ये सबके सब आबद्ध हैं, काम भाव से ग्रसित स्त्री पुरुष के संसर्ग के द्वारा ही इन सबकी उत्पत्ति हुई है। इन सबने योनि भाग में ही रूप धारण किया है, योनि मण्डल के आश्रित रहकर ही इन्हें हाथ, पाँव और दिमाग मिला है, इनकी अंगूठे के बराबर आत्मा ने बार-बार गर्भ का ही आश्रय लिया है और ये सबके सब गर्भवास झेलते हुए, मलमूत्र का पान करते हुए पले बड़े हैं एवं योनि द्वार से ही पृथ्वी पर आकर आँखे खोली है अत: आदि शंकर ने ठीक कहा-

पुनरपि जननं पुनरपि मरणं पुनरपि जननीजठरे शयनम्।
इह संसारे बहुदुस्तारे कृपयापारे पाहि मुरारे॥

इसका मतलब सीधा सा है फिर से जनम् फिर से मरण इन सबमें बहुत कष्ट है अत: हे महात्रिपुर सुन्दरी, हे कामाख्या मुझे इन सबसे मुक्त करो। जो साधक योनि तंत्रम को समझते हैं, माँ कामाख्या की सर्वोच्वता के सामने नतमस्तक होते हैं वे सीधे कामाख्या धाम जाते हैं और महासति के परम दिव्य योनि मण्डल से स्त्रावित होने वाला जल पूर्ण हृदय से ग्रहण कर, उसका पान कर, उनकी कृपा से पुन: गर्भवास नहीं झेलते हैं और अविमुक्त क्षेत्र में प्रविष्ट होते हैं बाकी के बचे मूर्ख योनि तंत्रम् का तिरस्कार कर योनि मार्ग में आबद्ध हो भोगते रहते हैं।

प्रत्यक्ष मार्गदर्शन

प्रतिकूलता सृष्टि का विधान है। प्रतिकूलता न हो तो मनुष्य अपनी सम्पूर्णता की तरफ बढ़ने का प्रयत्न ही न करे। प्रतिकूलता न हो तो एक भी व्यक्ति ईश्वरोपासना के मार्ग पर नहीं चले। समस्या, मुसीबत, दुर्भाग्य, रोग, दरिद्रता, कष्ट इत्यादि प्रतिकूलता के ही अंग प्रत्यंग हैं। प्रतिकूलता बार-बार जीव को कुछ करने के लिए, कर्म फल प्राप्ति हेतु, सुधार हेतु, ज्ञान हेतु, सम्प्रेषण हेतु और इससे भी बढ़कर गुरु सानिध्य, ईश्वर सानिध्य हेतु उत्प्रेरित करती है। एक व्यक्ति ऐसा ढूंढकर ले आओ जो समस्याओं से ग्रसित न हो? मैं उसे और तुम्हें दोनों को माल्यार्पण कर निश्चित ही परम वन्दन कर उठूंगा। अध्यात्म का प्रत्येक अंग चाहे वह मंत्रोपासना हो, योग, ध्यान, सिद्धि, यंत्र, तंत्र, दीक्षा इत्यादि हों इन सबका समग्रता के साथ समस्या समाधान हेतु उपयोग किया जाता है। यज्ञानुष्ठान, हवन सभी निश्चित ही जनकल्याण के अति श्रेष्ठ एवं उत्तम मार्ग हैं। भौतिक, अधि भौतिक, देविक, दैहिक एवं आध्यात्मिक प्रतिकूलताओं के लिए आप इस पत्रिका के माध्यम से कुछ राय, कुछ सहयोग, कुछ दिशा निर्देश एवं मार्ग प्राप्त कर सकते हैं वह भी बिना किसी बाध्यता के। किसी भी सूरत में आपकी स्वतंत्रता खण्डित नहीं होगी यह मेरा वायदा है। प्रत्यक्ष मिलने का समय प्रतिदिन 12 बजे से 2 बजे तक एवं महीने की 4, 11 और 21 तारीख एवं प्रत्येक रविवार को 12 बजे से 5 बजे तक।

हमारा पता

साधना सिद्धि विज्ञान

1, 2 मिनाल व्यू-2 पंजाबी बाग भोपाल

दूरभाष : (0755) 2576346, 5269368, 5271116, 2554925

अनुष्ठान एवं हवन कार्यक्रम

प्रत्येक माह की 4 तारीख को साधना जी दस महाविद्याओं में से किसी एक या इन महाविद्याओं से प्रादुर्भावित उपविद्याओं का अनुष्ठान स्वयं सम्पन्न करती हैं। इस माह की 4 तारीख को त्रिपुर सुन्दरी पूजन एवं अनुष्ठान सम्पन्न कराया जायेगा। महाविद्या के साधक इस दिवस पर उपस्थित हो उनके सानिध्य में उपासना सम्पन्न कर सकते हैं, अपनी जिज्ञासा शांत कर सकते हैं एवं विशेष मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं। यह साधना जी का क्षेत्र है। साधना जी से सीधे सम्पर्क प्रतिदिन सायं 8 बजे से 8.30 तक दूरभाष क्रमांक 5271116 पर किया जा सकता है।

हमारा पता

साधना सिद्धि विज्ञान

1, 2 मिनाल व्यू-2 पंजाबी बाग भोपाल दूरभाष : (0755) 2576346, 5269368, 2554925, 5271116

त्रिपुर सुन्दरी आवरण प्रयोग

काम न हो तो पृथ्वी अत्यंत भयावह हो जायेगी, पृथ्वी की विविधता खत्म हो जायेगी, काम जीव की मूल शक्ति है, काम सबसे विस्फोटक तत्व है। माँ त्रिपुर सुन्दरी के साथ महाकामेश्वर शिव, भैरव के रूप में चलते हैं। काम शक्ति ही कालान्तर कर्म, कला, सौन्दर्य, युद्ध, शांति, प्रेम, कवित्व, वैज्ञानिकता, ज्ञान, विज्ञान, क्रीड़ा इत्यादि में परिवर्तित होती है। वास्तव में ऊपर वर्णित प्रत्येक विहंगम स्थितियाँ कामशक्ति को ही दर्शाती हैं। जीव अपनी अवस्था, अपने मानस, अपने चिंतन, अपने स्तर अनुसार ही काम का प्राकट्य विभिन्न रूपों में करता है। दार्शनिकता, आध्यात्मिकता, संन्यास इत्यादि काम विरोधी नहीं हैं, ये काम के शत्रु नहीं हैं अपितु ये सब तो आदि शक्ति त्रिपुर सुन्दरी की परम कृपा के द्वारा ही काम के अति उच्चतम, अति दुर्लभ आयामों के रूप में विलक्षण स्त्री-पुरुषों को प्रसाद के रूप में प्राप्त होते हैं। संन्यास काम की सबसे परम अवस्था है, वास्तविक संन्यासी अत्यंत क्रियाशील एवं कर्मवान होता है। संन्यासी वही जिसका दिव्यतम स्वरूप काम की सबसे परम अवस्था संन्यास को ग्रहण कर ले परन्तु खण्डित संन्यास, स्वार्थवश संन्यास धर्म ग्रहण करना, पाखण्ड इत्यादि तो घोरतम पाप हैं। संन्यास, माँ त्रिपुर सुन्दरी की सृष्टि रचना को अवरुद्ध करने का विधान नहीं है अपितु संन्यास के माध्यम से, ब्रह्मचर्य के माध्यम से एक जीव या मनुष्य चिकित्सक बन माँ त्रिपुर सुन्दरी की सृष्टि संरचना के कार्य में आये दुर्गुणों को, व्यवधानों को हरने के लिए प्रयत्नशील रहता है।

माँ त्रिपुर सुन्दरी पंच प्रेत आसन पर विराजमान हैं एवं समस्त देवगण पूर्ण पशु रूप धारण कर उनकी सेवा में तत्पर हैं। प्रेतत्व अर्थात एकला चलो, अकेले भटको

एवं पशु तत्व अर्थात जीवन की निम्नतम अवस्था, इन दोनों से मुक्ति त्रिपुर साधना के माध्यम से ही सम्भव है। जीव सुन्दर नहीं है, आरम्भिक जीवन में सौन्दर्य का नितांत अभाव है। आज भी आप इस पृथ्वी पर मौजूद न्यूनतम विकसित जीवन को देखिए वे सौन्दर्य विहीन हैं, पशुत्व में सौन्दर्य नहीं हैं, केवल संतति उत्पादन, भोजन और युद्ध जैसी अवस्थाएं हैं अतः वे विकारशून्य हैं। साधनाओं का तात्पर्य देवत्व प्राप्त करना है जब देवत्व साधक प्राप्त कर लेता है तभी वह भोग मयी होता है। न उसके पास धन की कमी होती है, न शक्ति की, न स्वास्थ्य की, न रूप की, न यश की, न वैभव एवं उल्लास की। जब तक जीव इनके पीछे दौड़ता है वह भोगमयी हो ही नहीं सकता, वह आध्यात्मिक हो ही नहीं सकता। भिखारियों का अध्यात्म, कबाड़ियों का

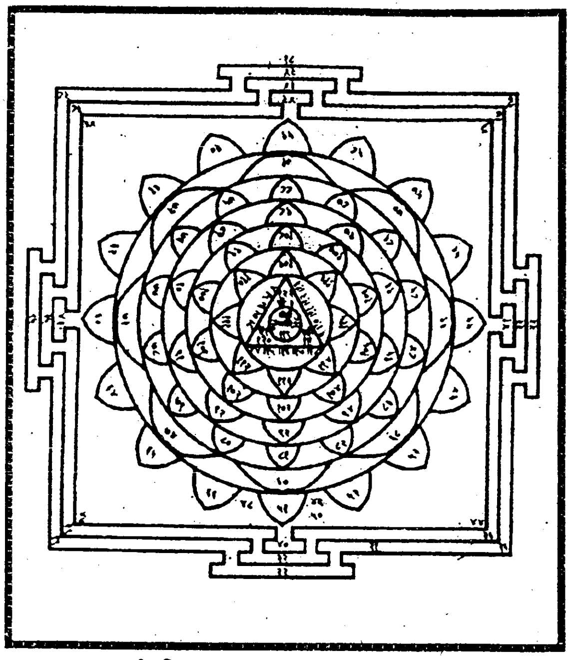

अध्यात्म, संतुष्टि का अध्यात्म इत्यादि अत्यंत ही खतरनाक हैं। तथाकथित संन्यासियों का अध्यात्म, भोग को गाली देने वालों का अध्यात्म वास्तव में आसुरी चिंतन एवं सृष्टि विरोधी, दैव विरोधी है। माँ त्रिपुर सुन्दरी की आराधना इन भाव से नहीं की जा सकती। वह तो भोग मूर्ति हैं, विपुल भोग प्रदान करती हैं अन्यथा पंचभूतीय जीवन की क्या आवश्यकता? भोग के अभाव में ही लम्बे समय तक रहने के कारण भोग विहीन लोगों ने दरिद्रता का कृत्रिम अध्यात्म रच डाला है जो कि मानव समाज को नपुंसक बनाकर रख देगा।

षोडशी का सोलह अक्षरों का मंत्र इस प्रकार दिया गया है-

मंत्र

श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं कएइलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं।

एक अन्य तंत्र ग्रंथ में **ह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं** मंत्र दिया गया है।

उक्त दोनों मंत्रों में कुछ मात्रिका विन्यास का अंतर है। इसके अतिरिक्त दूसरे मंत्र के ऋषि आनंद भैरव हैं तथा छंद गायत्री है। लेकिन न्यासादि क्रम दोनों का समान है।

विनियोग

अस्य श्री त्रिपुरसुन्दरी मंत्रस्य दक्षिणामूर्तिर्ऋषिः, पंक्तिश्छंदः, श्रीमत्त्रिपुर सुन्दरी देवता, ऐं बीजं, सौः शक्तिः क्लीं कीलकं ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास

दक्षिणामूर्ति ऋषये नमः (शिरसि)। पंक्तिश्छन्दसे नमः (मुखे)। श्रीमत्त्रिपुर सुन्दरी देवतायै नमः (हृदि)। ऐं बीजाय नमः (गुह्ये)। सौः शक्तये नमः (पादयो)। क्लीं कीलकय नमः (नाभौ)। विनियोगाय नमः (सर्वांगे)।

करशुद्धिन्यास

ह्रीं श्रीं अं मध्यमाभ्यां नमः। ह्रीं श्रीं आं अनामिकाभ्यां नमः। ह्रीं श्रीं सौः कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ह्रीं श्रीं अं अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं श्रीं आं तर्जनीभ्यां नमः। ह्रीं श्रीं सौः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

आसनन्यास

ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं सौः देव्यासनाय नमः (पादयोः)।
ह्रीं श्रीं हैं हसक्लीं हसौः चक्रासनाय नमः (जङ्घयोः)।
ह्रीं श्रीं हसैं हसक्लीं हसौः सर्वमंत्रासनाय नमः (जानुनोः)।
ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ल्वैं साध्यसिद्धासनाय नमों (लिङ्गे)।

हृदयादिषडंगन्यास

श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा। कएइल ह्रीं शिखायै वषट्। हसकहल ह्रीं कवचाय हुं। सकल ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्। सौः ऐं क्लीं ह्रां श्रीं अस्त्राय फट्।

वर्णन्यास

ॐ श्रीं नमः (पादयोः)। ॐ ह्रीं नमः जङ्घयोः। ॐ क्लीं नमः जानुनोः। ॐ ऐं नमः कट्योः। ॐ सौः नमः लिङ्गे। ॐ ॐ नमः पृष्ठे। ॐ ह्रीं नमः नाभौ। ॐ श्रीं नमः पार्श्वयोः। ॐ कएइल ह्रीं नमः स्तनयोः। ॐ हसकहल ह्रीं नमः अंसयोः। ॐ सकल ह्रीं नमः कर्णयोः। ॐ सौः नमः ब्रह्मरन्ध्रे। ॐ ऐं नमः वक्त्रे। ॐ क्लीं नमः नेत्रयोः। ॐ ह्रीं

नमः कर्णयोः। ॐ श्रीं नमः कर्णशष्कुल्योः।

वाग्देवतान्यास

अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः ब्लूं वशिनी वाग्देवतायै नमः शिरसि। कं खं गं घं ङं क्लीं ह्रीं कामेश्वरी वाग्देवतायै नमो ललाटे। चं छं जं झं ञं क्लीं मोहिनीवाग्देवतायै नमो भ्रूमध्ये। टं ठं डं ढं णं प्लूं विमलावाग्देवतायै नमः कण्ठे। तं थं दं धं नं ज्म्रीं अरुणावाग्देवतायै नमो हृदि। पं फं बं भं मं हस्ल्व्यं जयिनीवाग्देवतायै नमो नाभौ। यं रं लं वं झ्म्र्यूं सर्वेश्वरीवाग्देवतायै नमो मूलाधारे। शं षं सं हं लं क्षं क्ष्म्रीं कौलिनीवाग्देवतायै नमः ऊर्वादिपादांतम् वाग्देवतायै नमः पादयोः।

सृष्टिन्यास

ॐ श्रीं नमः ब्रह्मरन्ध्रे। ॐ ह्रीं नमः ललाटे। ॐ क्लीं नमः नेत्रयोः। ॐ ऐं नमः कर्णयोः। ॐ सौः नमः अंसयोः। ॐ ॐ नमः गण्डयोः। ॐ ह्रीं नमः दन्तयोः। ॐ श्रीं नमः ओष्ठयोः।

ॐ कएइल ह्रीं नमः जिह्वायाम्। ॐ हसकहल ह्रीं नमः मुखे। ॐ सकल ह्रीं नमः पृष्ठे। ॐ सौः नमः सर्वाङ्गे। ॐ ऐं नमः हृदि। ॐ क्लीं नमः स्तनयोः। ॐ ह्रीं नमः कक्षौ। ॐ श्रीं नमः लिङ्गे।

स्थितिन्यास

ॐ श्रीं नमः अंगुष्ठयोः। ॐ ह्रीं नमः तर्जन्योः। ॐ क्लीं नमः मध्यमयोः। ॐ ऐं नमः अनामिकयोः। ॐ सौः नमः कनिष्ठयोः। ॐ ॐ नमः ब्रह्मरन्ध्रे। ॐ ह्रीं नमः मुखे। ॐ श्रीं नमः हृदि। ॐ कएइल ह्रीं नमः नाभ्यादिपादान्तम्। हसकहलह्रीं नमः कण्ठादि नाभ्यन्तम्। ॐ सकलह्रीं नमः ब्रह्मरन्ध्रात्कण्ठान्तम्। ॐ सौः नमः पदांगुष्ठयोः। ॐ ऐं नमः पदतर्जन्योः। ॐ क्लीं नमः पदमध्यमयोः। ॐ ह्रीं नमः पदानामिकयोः। ॐ श्रीं नमः पदकनिष्ठयोः। इति स्थितिन्यासं।

इति स्थितिन्यास करके इस प्रकार पञ्चावृत्ति न्यास करें, अर्थात् पाँच बार मंत्र की आवृत्ति करें जिससे साधक उसके रूप को प्राप्त हो जाय।

पंचावृत्तिन्यास

ॐ श्रीं नमः मूर्ध्नि। ॐ ह्रीं नमः वक्त्रे। ॐ क्लीं नमः दक्षनेत्रे। ॐ ऐं नमः वामनेत्रे। ॐ सौः नमः दक्षकर्णे। ॐ ॐ नमः वामकर्णे। ॐ ह्रीं नमः दक्षिणांसे। ॐ श्रीं नमः वामांसे। ॐ कएईलह्रीं नमः दक्षिण गण्डे। ॐ हसकहलह्रीं नमः वाम गण्डे। ॐ सकल ह्रीं नमः ऊर्ध्वोष्ठे। ॐ सौः नमः अधरोष्ठे। ॐ ऐं नमः वक्त्रमध्ये। ॐ क्लीं नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ। ॐ ह्रीं नमः अधोदन्तपंक्तौ। ॐ श्रीं नमः वदने। इत्येकोन्यासः।

ॐ श्रीं नमः शिखायाम्। ॐ ह्रीं नमः शिरसि। ॐ क्लीं नमः ललाटे। ॐ ऐं नमः भ्रुवोः। ॐ सौं नमः नासिकयोः। ॐ ॐ नमः वक्त्रे। ॐ ह्रीं नमः दक्षिणहस्त्रमूले। ॐ श्रीं नमः दक्षिणकूर्परे। ॐ कएइल ह्रीं नमः दक्षिणमणिबन्धे। ॐ हसकहलह्रीं नमः दक्षहस्तांगुलिमूले। ॐ सकल ह्रीं नमः दक्षहस्तांगुल्यग्रे। ॐ सौः नमः वामहस्तमूले। ॐ ऐं नमः वामकूर्परे। ॐ क्लीं नमः वाममणिबन्धे। ॐ ह्रीं नमः वामहस्तांगुलिमूले। ॐ श्रीं नमः वामहस्तांगुल्यग्रे। इति द्वितीयोन्यासः।

तृतीयान्यास

ॐ श्रीं नमः शिरसि। ॐ ह्रीं नमः ललाटे। ॐ क्लीं नमः दक्षनेत्रे। ॐ ऐं नमः वामनेत्रे। ॐ सौः नमः मुखे। ॐ ॐ नमः जिह्वायाम्। ॐ ह्रीं नमः दक्षिणपादमूले। ॐ श्रीं नमः दक्षिणजानुनि। ॐ कएइलह्रीं नमः दक्षिण गुल्फे। ॐ हसकहल ह्रीं नमः दक्ष पादांगुलिमूले। ॐ सकलह्रीं नमः दक्षपादांगुल्यग्रे। ॐ सौः नमः वामपादमूले। ॐ ऐं नमः वामजानुनि। ॐ क्लीं नमः वाम गुल्फे। ॐ ह्रीं नमः वाम पादांगुलिमूले। ॐ श्रीं नमः वाम पादांगुल्यग्रे। इति तृतीयोन्यासः।

चतुर्थन्यास

ॐ श्रीं नमः शिरसि। ॐ ह्रीं नमः मुखे। ॐ

क्लीं नमः दक्षनेत्रे। ॐ ऐं नमः वामनेत्रे। ॐ सौः नमः दक्षिणकर्णे। ॐ ॐ नमः वामकर्णे। ॐ ह्रीं नमः दक्षनासापुटे। ॐ श्रीं नमः वामनासापुटे। ॐ कएइलह्रीं नमः दक्षकपोले। ॐ हसकहल ह्रीं नमः वामकपोले। ॐ सकलह्रीं नमः ऊर्ध्वोष्ठे। ॐ सौः नमः अधरोष्ठे। ॐ ऐं नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ। ॐ क्लीं नमः अधोदन्तपंक्तौ। ॐ ह्रीं नमः मूर्ध्नि। ॐ श्रीं नमः मुखे। इति चतुर्थोन्यासः।

पंचमन्यास

ॐ श्रीं नमः ललाटे। ॐ ह्रीं नमः कण्ठे। ॐ क्लीं नमः हृदि। ॐ ऐं नमः नाभौ। ॐ सौः नमः मूलाधारे। ॐ ॐ नमः ब्रह्मरन्ध्रे। ॐ ह्रीं नमः मुखे। ॐ श्रीं नमः गुदे। ॐ कएइलह्रीं नमः आधारे। ॐ हसकहल ह्रीं नमः हृदि। ॐ सकलह्रीं नमः ब्रह्मरन्ध्रे। ॐ सौः नमः दक्षिणहस्ते। ॐ ऐं नमः वामहस्ते। ॐ क्लीं नमः दक्षपादे। ॐ ह्रीं नमः वामपादे। ॐ श्रीं नमः हृदि। इति पञ्चमोन्यासः।

इससे न्यास पञ्चक करके इस प्रकार व्यापक करें-

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं कएइल ह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं सौं ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ (इति सर्वांगे)। ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं कएईल ह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं सौं ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ नमः (इति हृदये)।

षोढान्यास

षोढान्यास में गणेश मातृकान्यास, ग्रह मातृकान्यास, नक्षत्र मातृकान्यास, योगिनी मातृकान्यास, राशि मातृकान्यास एवं पीठ मातृकान्यास किए जाते हैं। विस्तार भय से यहाँ नहीं दिए जा रहे हैं।

कुल्लुकान्यास

ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं भगवति महात्रिपुरसुन्दरी स्वाहा। इति कुलुकां शिरसि। ॐ सेतुं हृदि। ह्रीं महासेतुं कण्ठे। ह्रीं महासेतुं सहस्त्रारे। ॐ श्रीं अं ऐं क्लीं सौं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं इति निर्वाणनाभौ। क्लीं कामबीजं लिङ्गे। जिह्वा में मूलविद्या का चिन्तन कर यथाशक्ति जप करे। इति कुल्लुकान्यासः।

रहस्यन्यासः

अस्य श्रीरहस्यन्यासमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः ऋग्यजुस्सामानि-च्छन्दांसि चैतन्यशक्तिमहात्रिपुरसुन्दरी देवता कृताकृतन्यासपूर्णतासिद्धये विनियोगः।

ब्रह्मविष्णुमहेश्वरऋषिभ्यो नमः शिरसि। ऋग्यजुस्सामभ्यश्छन्दोभ्यो नमः मुखे। चैतन्यशक्तिमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः हृदये। विनियोगाय नमः पादयोः।

ऐं क्लीं सौं सौं क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं हंसः सोहं सदाशिवासनायै महात्रिपुरसुन्दर्यै नमः मूलाधारे। ऐं क्लीं सौं सौं क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं हंसः सोहं रतिप्रियायै महात्रिपुरसुन्दर्यै नमः स्वाधिष्ठाने। ऐं क्लीं सौं सौं क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं हंसः सोहं ज्ञानरूपायै महात्रिपुरसुन्दर्यै नमः मणिपूरे। ऐं क्लीं सौं सौं क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं हंसः सोहं ध्यानरूपायै महात्रिपुरसुन्दर्यै नमः अनाहते। ऐं क्लीं सौं सौं क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं हंसः सोहं विशुद्ध स्वरूपायै महात्रिपुरसुन्दर्यै नमः विशुद्धौ। ऐं क्लीं सौं सौं क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं हंसः सोहं स्वतन्त्रस्वरूपायै महात्रिपुरसुन्दर्यै नमः आज्ञायाम्। ऐं क्लीं सौं सौं क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं हंसः सोहं आनन्दरूपायै महात्रिपुरसुन्दर्यै नमः सहस्त्रारे। इति रहस्यन्यासः।

कामान्यासः

ह्रीं कामाय नमः। क्लीं मन्मथाय नमः। ऐं कन्दर्पाय नमः। क्लूं मकरध्वजाय नमः। स्त्रीं मीनकेतवे नमः।

ततः ऐं हृदयाय नमः। क्लीं शिरसे स्वाहा। सौं शिखायै वषट्। ऐं कवचाय हुं। क्लीं नेत्रत्रयाय

वौषट्। सौं अस्त्राय फट्। इति कामन्यासः।

रत्यादिन्यास

ऐं रत्यै नमः लिङ्गे। क्लीं प्रीत्यै नमः हृदि। सौं मनोभवायै नमः भ्रूमध्ये। सौं अमृतास्यायै नमः भ्रूमध्ये। क्लीं योगिन्यै नमः हृदि। ऐं विश्वयोन्यै नमः लिङ्गे। इति रत्यादिन्यासः।

कामन्यासः

स्हौं ईशानाय मनोभवाय नमः शिरसि। स्हौं तत्पुरुषाय मकरध्वजाय नमः मुखे। स्हूं अघोरकुमाराय कन्दर्पाय नमः हृदि। स्हौं वामदेवाय मन्मथाय नमः गुह्ये। स्हूं सद्योजाताय कामदेवाय नमः पादयोः। इति कामन्यास।

मनोभवन्यास

स्हौं ईशानाय मनोभवाय नमः ऊर्ध्ववक्त्रे मस्तके। स्हौं तत्पुरुषाय मकरध्वजाय नमः पूर्ववक्त्रे भाले। स्हूं अघोरकुमाराय कन्दर्पाय नमः दक्षिणवक्त्रे दक्षकर्णे। स्हौं वामदेवाय मन्मथाय नमः उत्तरवक्त्रे वामकर्णे। स्हूं सद्योजाताय वामदेवाय नमः पश्चिमवक्त्रे चूडाधः। इति मनोभवन्यासः।

बाणन्यास

ह्रां क्षोभणबाणाय नमः हृदि। ह्रीं द्रावणबाणाय नमः शिरसि। क्लीं आकर्षणबाणाय नमः शिखायाम्। क्लं मोहनबाणाय नमः कवचम्। सः उन्मादनबाणाय नमः अस्त्रम्। इति बाणन्यासः।

करन्यास

ऐं ह्रीं क्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः। क्लीं श्रीं सौः ऐं तर्जनीभ्यां नमः। सौं औं ह्रीं श्रीं मध्यमाभ्यां नमः। ऐं कएलह्रीं हसकलह्रीं अनामिकाभ्यां नमः। क्लीं सकलह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। सौः सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

स्वतन्त्रन्यास

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं कएलह्रीं सर्वज्ञायै महात्रिपुरसुन्दर्यै हृदयाय नमः। ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सहकहलह्रीं नित्यतृप्तायै महात्रिपुरसुन्दर्यै शिरसे स्वाहा। ऐं ह्रीं श्रीं सौः सकलह्रीं अनादिबोधायै महात्रिपुरसुन्दर्यै शिखायै वषट्। ऐं ह्रीं श्रीं ऐं कएलह्रीं स्वतन्त्रायै महात्रिपुरसुन्दर्यै कवचाय हुं। ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं हसकहलह्रीं नित्यमलुप्तशक्तये महात्रिपुरसुन्दर्यै नेत्रत्रयाय वौषट्। ऐं ह्रीं श्रीं सौः सकल ह्रीं अनन्तायै महात्रिपुरसुन्दर्यै अस्त्राय फट्। इति स्वतन्त्रन्यासः।

इति तन्त्रान्तरोक्तन्यासं कृत्वा संक्षोभद्रावणाकर्षवश्योन्मादमहांकुशखेचरीबीजयोन्या-ख्येति नव मुद्राः प्रदर्शयेत्।

इस प्रकार तन्त्रोक्त न्यास करके संक्षोभण, द्रावण, आकर्षण, वशीकरण, उन्मादन, महाकुश, खेचरी, बीज और योनि नामक मुद्राओं को प्रदर्शित करे।

ध्यान

बालार्कायुत् तेजसं त्रिनयनां रक्ताम्बरोल्लासिनीं।
नानालंकृति राजमानवपुषं बालोडुराट् शेखराम्॥
हस्तैरिक्षुधनुः सृणिंसुमशरंपाशं मुद्रा बिभ्रतीं।
श्रीचक्रस्थित सुन्दरीं त्रिजगतामाधारभूतां स्मरेत्॥

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूजयेत्। ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले मण्डूकादिपरतत्त्वांन्तपीठदेवताः संस्थाप्य ॐ मं मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः इति सम्पूज्य पीठमध्ये।

इससे ध्यान करके मानसोपचारों से पूजा करे। इसके बाद पीठादि में रचित सर्वतोभद्र मण्डल में मण्डूकादि परपरतत्त्वान्त पीठदेवताओं की स्थापना करके ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः इससे पूजा करके पीठ के मध्य

ॐ ब्रं ब्रह्मप्रेताय नमः। ॐ विं विष्णुप्रेताय नमः। ॐ रुं रुद्रप्रेताय नमः। ॐ ईं ईश्वरप्रेताय नमः। ॐ सं सदाशिवाय प्रेताय नमः। ॐ सुं सुधावर्णवासनाय नमः। ॐ प्रें प्रेताम्बुजासनाय नमः। ॐ दिं दिव्यासनाय नमः। ॐ चं

चक्रासनाय नमः। ॐ सं सर्वमन्त्रासनाय नमः। ॐ सं साध्यसिद्धासनाय नमः। इससे पूजा करे।

इति पीठदेवताः सम्पूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत् तद्यथाः

इससे पीठ देवताओं की पूजा करके इस प्रकार नव पीठशक्तियों की पूजा करें।

पूर्वाद्यष्टसु दिक्षुः ॐ इच्छायै नमः। ॐ ज्ञानायै नमः। ॐ क्रियायै नमः। ॐ कामिन्यै नमः। ॐ कामदायिन्ये नमः। ॐ रत्यै नमः। ॐरतिप्रियायै नमः। ॐ नन्दायै नमः। मध्ये ॐ मनोन्मन्यै नमः।

इससे नवपीठशक्तियों की पूजा करें।

ततः स्वर्णादियन्त्रं ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण सम्प्रोक्ष्य तदुपरि देव्यष्टगन्धेन बिन्दुगर्भ त्रिकोणाष्टदलं द्वादशदलं चतुर्दशदलाष्टदलषोडश-त्रिकोणरूपदलं च तस्योपरित्रिरेखात्मकभूपुरं च लिखित्वा ऐं परायै अपरायै परापरायै ह्सौः सदाशिवमहाप्रेतपद्मासनाय नमः। इति मन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्ति प्रकल्प्य आवाहनादिपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात्। तद्यथाः पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये। अनुज्ञां देहि त्रिपुरे परिवारार्चनाय मे। इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं च दद्यात्। इत्याज्ञां गृहीत्वावरणपूजां कुर्यात्। तद्यथाः पूज्यपूजकयोरन्तरालं प्राची तदनुसारेण अन्याः दिशः प्रकल्प्य आग्न्यादिकोणेषु वामावर्तेन च।

इसके बाद स्वर्णादि से बने ताम्रपत्र में उसे रख कर घी से अभ्यंग करके उसके ऊपर दुग्धधारा तथा जलधारा देकर स्वच्छ पात्र से उसको पोंछ कर उस पर देवी के अष्टगंध से बिन्दु गर्भमय त्रिकोण, अष्टदल, द्वादशदल, चतुर्दशदल, अष्टदल, षोडश त्रिकोण रूप दल बनाकर उसके ऊपर तीन रेखायुक्त भूपुर लिखकर **ऐं परायै अपरायै परापरायै ह्सौः सदाशिव महाप्रेतपद्मासनाय नमः** इस मंत्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य उसे स्थापित करके उसमें प्राण प्रतिष्ठा करके पुनः ध्यान करके मूल मंत्र से मूर्ति की कल्पना करके आवाहन से लेकर पुष्पांजलि दान पर्यन्त उपचारों से पूजा करके देवी से आज्ञा लेकर इस प्रकार आवरण पूजा करे। पुष्पांजलि लेकर मूलमंत्र का उच्चारण करके **ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये। अनुज्ञां देहि त्रिपुरे परिवारार्चनाय मे।** यह पढ़कर पुष्पांजलि देवे। इस प्रकार आज्ञा लेकर आवरण पूजा करें। पूज्य और पूजक के अन्तराल को प्राची मानकर तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके अग्न्यादि कोणों में वामावर्त से

ऐं बीजाय नमः। ऐं बीज श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति सर्वत्र वदेत्। क्लीं बीजाय नमः। क्लीं बीज श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। सौः बीजाय नमः। सौः बीज श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति पूजयेत।

ततः पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्। ह्रीं श्रीं प्रकटगुप्तगुप्ततरसम्प्रदायकुलनिर्गमरहस्यपरापररहस्यसंज्ञक श्रीचक्र गतयोगिनींपादुकाभ्यो नमः। इति पुष्पाञ्जलिं दधात्। इति प्रथमावरणम्।

इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर।

मूलमंत्र का उच्चारण करके **अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्। ह्रीं श्रीं प्रकट गुप्त गुप्ततर सम्प्रदाय कुछ निर्गमरहस्यपरापररहस्यसंज्ञक श्रीचक्रगत योगिनी पादुकाभ्यो नमः।** इससे पुष्पाञ्जलि देवे। इति प्रथमावरण।

तर्तास्त्रकोणबाह्ये वामपार्श्वे दक्षहस्तेन पुष्पचन्दनाक्षतानि तर्ययामीति वामहस्तेन जलं चार्पयेत्। जले आर्द्रकं प्रास्यमिति केचित्।

इसके बाद त्रिकोण के बाहर बाएँ तरफ दाहिने हाथ से **पुष्पचन्दन अक्षतानिं तर्पयामि।** यह कहकर बाएँ हाथ से जल देवे।

ॐ ॐ ऐं क्लीं सौः ॐ कामेश्वर्यै नमः। नमः कामेश्वरि इच्छाकामफलप्रदे सर्वसत्ववशंकरि सर्वजगत्क्षोभणकरि हुं हुं हुं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः सौं क्लीं ऐं कामेश्वरि नित्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ आं ऐं भगमालिन्यै नमः। भगभुगे भगिनि भगोदरि भगमाले भगावहे भगगुह्ये भगयोने भगनिपातिनि सर्वभगवशङ्करि भगरूपे नित्यक्लिन्ने भगस्वरूपे सर्वाणि भगानि मे ह्यानय वरदे रेते सुरेते भगक्लिन्ने क्लिन्नद्रवे क्लेदय द्रावय अमोघे भगविच्चे क्षुभक्षोभय सर्वसत्त्वान् भगेश्वरि ऐं ब्लूं जं ब्लूं भें ल्वूं मों ल्वूं हें क्लिन्ने सर्वाणि भगानि मे वशमानय स्त्रीं हर ल्वें ह्रीं भगमालिनी नित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इं ह्रीं नित्यक्लिन्नायै नमः। नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा। नित्यक्लिन्ना नित्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ईं ॐ क्रौं भ्रौं क्रौं च्रौं छ्रौं ज्रौं झ्रौं भेरुण्डायै नमः। स्वाहा। भेरुण्डानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ओं ॐ ह्रीं वह्निवासिन्यै नमः। वह्निवासिनि नित्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति पञ्चपूजयेत्।

ततः दक्षिणपार्श्वे ॐ ह्रीं प्रेंसः नित्यक्लिन्ने मदद्रवे महाविद्येश्वरि नमः स्वाहा। महाविद्येश्वरीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ऋं ॐ ह्रीं शिवदूत्यै नमः। शिवदूतीनित्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॠं ॐ ह्रीं हुं खेचछेक्षः स्त्रीं हें क्षें ह्रीं फट् त्वरितायै नमः। त्वरितानित्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ऌं ऐं क्लीं सौः कुलसुन्दर्यै नमः। कुलसुन्दरीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॡं ऐं क्लीं सौः ह्स्रौं हक्लीं हस्त्रौः सौः क्लीं ऐं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं नित्यायै नमः। नित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति पञ्च पूजयेत्।

देव्यग्रे एं ॐ ह्रीं फ्रें स्रूं ह्रीं क्रौं नित्यमदद्रवे हूं क्रों नीलपताकायै नमः। नीलपताकिनीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ऐं स्ख्फ्रें विजयायै नमः। विजयानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ स्वों सर्वमङ्गलायै नमः। सर्वमङ्गलानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। औं ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनि देवि सर्वभूतसंहारकारिकेजातवेदसि ज्वलन्ती प्रज्वलन्ती ज्वलज्वल प्रज्वल हुं रं रं हुं फट्। ज्वालामालिन्यै नमः। ज्वालामालिनी नित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। अं क्वौं विचित्रानित्यायै नमः। विचित्रानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

इति पञ्च पूजयित्वा पुष्पाञ्जलि दद्यात्। इति द्वितीयावरणम्।

इससे पाँच की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति द्वितीयावरण।

ततो भूपुराद्बहिः।

इसके बाद भूपुर के बाहर

पूर्वद्वारे गं गणपतये नमः। पश्चिमद्वारे बं बटुकाय नमः। उत्तरद्वारे ह्रीं दुर्गायै नमः। दक्षिणद्वारे क्षं क्षेत्रपालाय नमः।

इससे द्वारपालों की पूजा करें।

ततो बाह्यचतुरस्त्रस्य प्रथमरेखायां पश्चिमादि द्वारचतुष्टये।

इसके बाद बाहर चतुरस्त्र की प्रथम रेखा के पश्चिम आदि चारों द्वारों पर

अणिमासिद्धि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। लघिमासिद्धि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। महिमासिद्धि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ईश सिद्धि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। कोशचतुष्टये वशित्वसिद्धि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। प्राकाम्यसिद्धि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। भक्तिसिद्धि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इच्छासिद्धि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। वरुणनिर्ऋतिमध्ये प्राप्तिसिद्धि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। पूर्वेशानयोर्मध्ये सर्वकामसिद्धि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इससे पूजा करें।

मध्यरेखायां पश्चिमादिद्वारचतुष्टये।

मध्ये रेखा के पश्चिमादि चारों द्वारों पर

ह्रीं श्रीं आं ब्राह्मयै नमः। ब्राह्मी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ईं माहेश्वर्यै नमः। माहेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ऊं कौमार्यै नमः। कौमारी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॠं वैष्णव्यै नमः। वैष्णवी श्रीपादुकां पूजयामि

तर्पयामि नमः। कोणचतुष्टयै ह्रीं श्रीं लृं वाराह्यै नमः। वाराहीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं श्रीं ऐं इन्द्राण्यै नमः। इन्द्राणी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं श्रीं औं चामुण्डायै नमः। चामुण्डा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं श्रीं अः महालक्ष्म्यै नमः। महालक्ष्मी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इससे पूजा करें।

तृतीयरेखायां पश्चिमादिद्वारचतुष्टये।

तृतीय रेखा के पश्चिमादि चारों द्वारों पर

ॐ त्रिखण्डाक्षमुद्रा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं सर्वसंक्षोभिणीमुद्रा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं सर्वविद्राविणीमुद्रा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। क्लीं सर्वाकर्षिणीमुद्रा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। कोणचतुष्टये ब्लूं सर्ववशङ्करीमुद्रा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ सर्वोन्मादकरीमुद्रा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। क्रौं महांकुशमुद्रा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्स्रूं खेचरीमुद्रा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ततस्त्रिवलये बीजमुद्रा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। योनिमुद्रा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। चार्वादर्शनाय नमः।

इति पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात् ततो हस्तेनार्घ्यजलं गृहीत्वा।

इससे पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इसके बाद हाथ में अर्घ्यजल लेकर

अत्र त्रैलोक्यमोहनचतुरस्त्रचक्रे श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीसमधिष्ठिते एता ईशित्वाद्याः प्रकटयोगिन्यः समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तुः॥

इससे तर्पण करे। इति तृतीयावरण।

ततः षोडशदलेषु पश्चिमदलादारभ्य वामावर्त्तेन च।

इसके बाद षोडश दलों में पश्चिम दल से आरम्भ करके वामावर्त से

ह्रीं श्रीं अं कर्माकर्षिणीनित्या कला श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। आं बुद्ध्याकर्षिणीनित्या कला श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इं अहंकाराकर्षिणीनित्याकला श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ईं शब्दाकर्षिणीनित्याकला श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। उं रूपाकर्षिणीनित्याकला श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ऊं स्पर्शाकर्षिणीनित्याकला श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ऋं रसाकर्षिणीनित्याकला श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॠं गन्धाकर्षिणीनित्याकला श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। लृं चिन्ताकर्षिणीनित्याकला श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। लॄं धैर्याकर्षिणीनित्याकला श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। एं स्मृत्याकर्षिणीनित्याकला श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ऐं नामाकर्षिणीनित्याकला श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ओं बीजाकर्षिणीनित्याकला श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। औं अमृताकर्षिणीनित्याकला श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। अं शरीराकर्षिणीनित्याकला श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। अः आत्माकर्षिणीनित्याकला श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

इति षोडश योगिनीः पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात् ततो हस्तेनार्घ्य जलं गृहीत्वा। इससे सोलह योगिनियों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इसके बाद हाथ में अर्घ्यजल लेकर

अत्र सर्वाशापरिपूरके षोडशदलचक्रे श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीसमधिष्ठिते एताः कामाकर्षिण्याद्या गुप्तयोगिन्यः समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः पूजिताः सन्तु। यह कहे। इति चतुर्थावरण।

ततोष्टदलचक्रेपूर्वादिक्रमेण।

इसके बाद अष्टदल चक्र में पूर्वादि क्रम से

ह्रीं श्रीं कं खं गं घं ङं अनङ्गकुसुमादेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं श्रीं चं छं जं झं ञं अनङ्गमेखलादेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं श्रीं टं ठं डं ढं णं अनङ्गमदनादेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि

नमः। ह्रीं श्रीं तं थं दं धं नं अनङ्गमदनातुरादेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं श्रीं पं फं बं भं मं अनङ्गरेखादेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं श्रीं यं रं लं वं अनङ्गयोगिनीदेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं श्रीं शं षं सं हं अनङ्गकुशादेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं श्रीं लं क्षं अनङ्गमालिनीदेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इन आठों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इसके बाद हाथ में अर्घ्यजल लेकर।

अत्र संक्षोभकरेऽष्टदलचक्रे श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीसमधिष्ठिते एता अनङ्गकुसुमाद्याः गुप्ततरा योगिन्यः समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः पूजिताः सन्तु। यह कहें। इति पञ्चमावरण।

ततश्चतुर्दशारचक्रे पश्चिमादिवामावर्तेन।

इसके बाद चतुर्दशार चक्र में पश्चिमादि वामावर्त से

ह्रीं श्रीं सर्वसंक्षोभिणीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं श्रीं सर्वद्राविणी शक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं श्रीं सर्वाकर्षिणीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं श्रीं सर्वाह्लादिनीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं श्रीं सर्वसम्मोहिनीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं श्रीं सर्वस्तम्भिनीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं श्रीं सर्वजृम्भिणीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं श्रीं सर्ववशङ्करीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं श्रीं सर्वरञ्जिनीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं श्रीं सर्वोन्मादिनीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं श्रीं सर्वार्थसाधिनीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं श्रीं सर्वाशापरिपूरिणीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं श्रीं सर्वमन्त्रमयीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं श्रीं सर्वद्वन्द्वक्षयकरीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

इससे पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इसके बाद हाथ में अर्घ्य जल लेकर

अत्र सौभाग्यदायके चतुर्दशचक्रे श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीसमधिष्ठिते एताः संक्षोभिण्याद्याः शक्तयः सम्प्रदाययोगिन्यः समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तु। यह कहे इति षष्ठावरण।

ततो दशारचक्रे पश्चिमादिवामावर्तेन च।

इसके बाद दशार चक्र में पश्चिमा वामावर्त से

ह्रीं श्रीं सर्व सिद्धिप्रदादेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं श्रीं सर्वसम्पत्प्रदादेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं श्रीं सर्वप्रियङ्करीदेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं श्रीं सर्वमङ्गलकारिणीदेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं श्रीं सर्वकामप्रदादेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं श्रीं सर्वदुःखविमोचिनीदेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं श्रीं सर्वाङ्गसुन्दरीदेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं श्रीं सर्वमृत्युविनाशिनीदेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं श्रीं सर्वविघ्ननिवारिणीदेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं श्रीं सर्वसौभाग्यदायिनीदेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

इससे पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इसके बाद हाथ में अर्घ्य जल लेकर

अत्र सर्वाशापरिपूरके दशारचक्रे महात्रिपुरसुन्दरीसमधिष्ठिते एताः सर्वसिद्धिप्रदाद्या देव्यः कुलकौलिनीयोगिन्यः समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तु। यह कहे इति सप्तमावरण।

ततः पुनः दशारचक्रे पश्चिमादिवामावर्तेन च।

इसके बाद पुनः दशार चक्र में पश्चिमादि वामावर्त से।

ह्रीं श्रीं सर्वज्ञादेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं श्रीं सर्वशक्तिमयी देवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं श्रीं सर्वैश्वर्यप्रदादेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि

नमः। ह्रीं श्रीं सर्वज्ञानमयीदेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं श्रीं सर्वव्याधिविनाशिनीदेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं श्रीं सर्वाधारस्वरूपादेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं श्रीं सर्वपापहरादेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं श्रीं सर्वानन्दमयीदेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं श्रीं सर्वरक्षास्वरूपिणीदेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं श्रीं सर्वेप्सितफलप्रदादेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

इससे पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इसके बाद हाथ में अर्घ्य जल लेकर

अत्र सर्वरक्षाकरे अन्तर्दशाचक्रे त्रिपुरमालिनी श्रीत्रिपुरसुन्दरीदेवीसमधिष्ठिते एताः सर्वज्ञाद्या निर्भय योगिन्यः समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तु। यह कहे। इति अष्टमावरण।

ततोऽष्टारचक्रे पश्चिमादिवामावर्तेन च।

इसके बाद अष्टार चक्र में पश्चिमादि वामावर्त से

ह्रीं श्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः वशिनीवाग्देवता श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं श्रीं कं खं गं घं ङं कामेश्वरीवाग्देवता श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं श्रीं चं छं जं झं ञं मोदिनीवाग्देवता श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं श्रीं टं ठं डं ढं णं विमलावाग्देवता श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं श्रीं तं थं दं धं नं अव्ययावाग्देवता श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं श्रीं पं फं बं भं मं जयिनीवाग्देवता श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं श्रीं यं रं लं वं सर्वेश्वरीवाग्देवता श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं श्रीं शं षं सं हं ळं क्षं कौलिनी वाग्देवता श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

इससे पूजा करके पुष्प पुष्पाञ्जलि देवें। इसके बाद हाथ में अर्घ्यजल लेकर

अत्र सर्वरोगहरे अष्टारचक्रे श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीसमधिष्ठिते एता वशिन्याद्या रहस्ययोगिन्यः समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तु। यह कहें इति नममावरण

तत अभ्यन्तरचक्रमध्ये दक्षिणे

इसके बाद अभ्यन्तर चक्र के मध्य में दक्षिण की ओर

ॐ उत्तमबाणाय नमः। वामे मोहधनुषे नमः। तदधः कर्व्वशाय नमः। ततः पुनः त्रिकोणं मे कामेश्वर्यै नमः। चक्रिण्यै नमः। भगशालिन्यै नमः। इससे पूजन करके तीन बार पुष्पाञ्जलि देवे।

इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारान्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः। करवीरपुष्पैः त्रिमधुरोपेतैर्दशांशतो होमः। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्।

इससे आवरण पूजा करके धूपदान से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजा और जप करें। इसका पुरश्चरण एक लाख जप है। घी, मधु तथा शकर के साथ कनेर के फूलों से दशांश होम करना चाहिये। ऐसा करने पर मंत्र सिद्ध होता है। इस मंत्र के सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करें।

लक्षमेकं जपेन्मन्त्रं दशांश हयमारजैः।
पुष्पैस्त्रिमधुरोपेतैर्जुहुयात्पूजिते नले ॥

एक लाख जप करना चाहिये तथा जप का दशांश त्रिमधुर से युक्त कनेर के फूलों से प्रदीप्त अग्नि में होम करना चाहिये।

इस पूजन को सम्पन्न करने के लिए साधक पारद निर्मित योनि को लाल कपड़े के ऊपर स्थापित कर ले फिर योनि स्तोत्र को पढ़ते हुए अनार के रस से पारद योनि का अभिषेक करें, तत्पश्चात् पारद योनि का पंचोपचार एवं षोडशोपचार पूजन सम्पन्न कर पारद योनि के ऊपर ही पूजन सम्पन्न करें पूजन सम्पन्न हो जाने के पश्चात् पारद योनि को पुनः लाल वस्त्र से ढँक दें और किसी अदीक्षित धर्म विरोधी, गुरु निन्दक, कामुक, विकृति लिए हुए हीन स्त्री पुरुषों से पारद योनि को स्पर्श कदापि न करायें और न ही उन्हें पारद योनि का दर्शन करने दें।

पूजन एवं साधना सामग्री

साधक और साधना के बीच माध्यम है साधना सामग्री। माध्यम अगर प्राण प्रतिष्ठित, शुद्ध, चैतन्य एवं उच्चता लिए हुए है तो साधक, साधना मार्ग में अपेक्षाकृत ज्यादा सफलता प्राप्त करता है एवं अपने इष्ट को आसानी से साध लेता है। पारद की चर्चा हुई तो विशुद्ध पारद ही देंगे। रुद्राक्ष कहा, तो रुद्राक्ष ही देंगे, भद्राक्ष नहीं। स्फटिक कहा तो स्फटिक ही देंगे, कांच नहीं। श्वेतार्क कहा तो उच्च कोटि का श्वेतार्क ही देंगे। यही साधना सिद्धि विज्ञान केन्द्र की परम्परा है। देंगे तो उच्च कोटि का देंगे अन्यथा नहीं देंगे। पारद श्रीयंत्र, पारद गणपति, सबसे दुर्लभ पारद योनि, पारद काली, पारद दुर्गा इत्यादि सौ प्रतिशत शुद्ध होगीं। इसके साथ ही दो मुखी से लेकर चौदह मुखी तक प्राण-प्रतिष्ठित रुद्राक्ष,, गणेश रुद्राक्ष, कमल रुद्राक्ष, योनि रुद्राक्ष, रुद्राक्ष मालाएँ, स्फटिक मालाएँ, ताम्र पत्र पर निर्मित हर प्रकार के यंत्र, हाथाजोड़ी, दक्षिणावर्ती शंख, गोमुखी शंख, एकाक्षी नारियल, श्वेतार्क गणपति, शिव पीताम्बर इत्यादि से लेकर अनेकों प्रकार की गोपनीय, परम दुर्लभ तांत्रोक्त जड़ी बूटियाँ इत्यादि साधक प्राप्त कर सकते हैं। मूल्य जानबूझकर नहीं छापे जा रहे हैं जिससे कि सामग्री गलत हाथों में न पड़े। केवल शिष्यों और साधकों को ही सामग्री दी जाती है, अन्य किसी को नहीं।

साधना सिद्धि विज्ञान

पलोट नं. 1, 2 मिनाल व्यू-2 पंजाबी बाग भोपाल

दूरभाष : (0755) 2576346, 5269368, 2554925

योनि-सर्वस्व

प्राग ज्योतिषपुर आदि गुरु शंकराचार्य जी के जमाने में कामाख्या पीठ को इसी नाम से पुकारा जाता था। जहाँ ब्रह्मपुत्र बहती है, जहाँ विश्व में सबसे ज्यादा वर्षा होती है, जहाँ ठिकाना बनाना बड़ा मुश्किल है, न जाने कब ब्रह्मपुत्र मार्ग बदल दे और गृहस्थ का घोंसला अपने साथ बहा ले जाय, ऐसा है आसाम। आसाम तो गीला है, मरू भूमि नहीं है क्योंकि यहाँ पर तो सती का योनि मण्डल गिरा है। शिव, शंव को कंधे पर लादकर विक्षिप्तों की भांति घूम रहे थे, सृष्टि असंतुलित हो ही गई थी। शक्ति के बिना शिव शव बन गये थे और शव, शव के मोह में ग्रसित हो गया था। विष्णु ने सुदर्शन चक्र से सति के शरीर को विभिन्न भागों में बांट दिया, योनि मण्डल काम रूप पर्वतों पर गिरा और वहाँ की संरचना ही बदल गई। आसाम् की यह पीठ विश्व की सबसे जागृत एवं तांत्रोक्त शक्ति पीठ है। यही वह एक स्थान है जहाँ पर महाकाली, भद्रकाली, बगलामुखी, धूमावती, छिन्नमस्ता एवं दूसरी अन्य महाविद्याएं विशेषकर त्रिपुर सुन्दरी, षोडशी, ललिताम्बा, भैरवी इत्यादि एक साथ विराजमान हैं। समस्त देवता यहाँ पर वास करते हैं। एक हाथ लम्बी, 12 अंगुल चौड़ी दिव्य योनि मण्डल गुफा में स्थित है। इनके आगे का हिस्सा सोने के टोप से ढ़का हुआ है एवं सम्पूर्ण योनि मण्डल पर सदैव लाल वस्त्र सुशोभित रहता है। किसी राजा ने इसके चारों ओर मन्दिर का निर्माण करवाया एवं प्रत्येक ईंट के अंदर एक रत्ती सोना रखा। आदि गुरु शंकराचार्य जी के काल में यह योनि मण्डल अपने सम्पूर्ण वैभव और विलास के साथ सुसज्जित था

विभिन्न प्रकार के रत्न, स्वर्ण अलंकार मंदिर में चारों तरफ सुशोभित थे। यहाँ पर महामाया पूर्ण चैतन्य और जागृत हैं एवं यहीं पर वास्तविक श्री साधना होती है, यहीं पर वास्तविक प्राप्ति होती है, यहीं पर तांत्रिक तंत्र सीखता है, यहीं पर सिद्ध सिद्धि प्राप्त करता है, यहीं पर भक्त दर्शन प्राप्त करता है। **राष्ट्र कवि रविन्द्रनाथ टेगौर टूट गये थे दो वर्ष के अंदर पत्नी और पुत्री की मृत्यु हो गई थी, उन्हें लगा कि अब ऊर्जा नष्ट हो गई एवं जीवन के क्षण खत्म होने वाले हैं तो फिर निकल पड़े शांति की खोज में और घूमते-फिरते कामाख्या क्षेत्र में पहुँच ही गये अचानक एक बार वे पुनः** सौन्दर्यात्मक हो उठे, वहीं के होकर रह गये, इतनी दिव्य ऊर्जा बटोर ली, कहीं कोई सोता पुनः फूट उठा और गीतांजलि लिख बैठे एवं नोबल पुरस्कार मिल गया। सिक्कम, वर्तमान असम, मेघालय, अरुणाचल प्रदेश आज से पचास वर्ष पूर्व एक थे एवं कामाख्या मण्डल के अंतर्गत आज भी आते हैं।

यह विश्व का सृजन क्षेत्र है, विश्व की योनि है, विश्व का उद्गम स्थान है। आश्रय स्थान कुछ भी हो सकता है, निर्वाह स्थान कुछ भी हो सकता है, कर्म स्थली कहीं भी हो सकती है परन्तु उद्गम क्षेत्र मूल क्षेत्र होता है। सबसे ज्यादा क्रियाशील, सबसे ज्यादा अलौकिक एवं प्रतिक्षण परिवर्तनीय होना ही योनि की विशेषता है। एक पुत्र दूसरे पुत्र से सदैव भिन्न होता है। गर्भ में क्या है ? भविष्य में क्या है ? ये दो प्रश्न सदैव रहस्यमय बने रहेंगे। भाग्य में क्या है ? इसका रहस्य कभी नहीं खुलेगा क्योंकि योनि गोपनीयता का प्रतीक है। ऐसा कौन सा अविष्कार है ? जिससे जो मांगों वह मिलता है, जिससे दो मांगों और चार मिलते हैं, जहाँ वृद्धि का मूल छिपा हुआ है, वह है योनि एक मात्र उत्पादक क्षेत्र। उत्पादन केवल योनि में ही होता है और कहीं भी नहीं, वृद्धि का स्थान केवल योनि है। अतः साधक जो भी मांग आध्यात्मिक दृष्टिकोण से कामाख्या में करता है वह उसे प्राप्त होती है। पहले चन्द्रमा पर यान जाता है घूम फिरकर वापस आ जाता है या नष्ट हो जाता है फिर कुछ यंत्र इत्यादि वैज्ञानिक वहाँ पर भेजते हैं ताकि निरीक्षण हो सके, यंत्रों में वृद्धि नहीं होती उनमें योनि नहीं है उन्हें प्रजनन नहीं आता, उनमें स्व है ही नहीं इसके पश्चात् चन्द्रमा पर कुत्ते, बिल्ली, चूहे जैसे निम्न कोटि के जीव भेज गये। इन सबमें प्रज्ञा नहीं है अतः बतौर परीक्षण ऐसा हुआ फिर पचास बार सोच समझकर मनुष्य को भेजा गया और कुछ ही दिनों बाद वापस बुला लिया गया। वृद्धि अभी नहीं हुई, जीवन अभी पल्लवित नहीं हुआ, कोशिश की जा रही है। कहाँ कमियाँ हैं ? किस प्रकार से योनि का विकास किया जाय कि चन्द्रमा पर भी उसके वातावरण अनुरूप योनि कुछ उत्पादन कर सके, कुछ पल्लवित कर सके, करना तो योनि को ही पड़ेगा। विभिन्न प्रकार की योनियाँ हैं, विभिन्न प्रकार के उत्पादन हैं। योनि का एकमात्र ध्येय है जीवोत्पादन। चाहे वह वनस्पति योनि ही क्यों न हो ? वह जीव की रक्षा, उसके संरक्षण, उसकी अनुरूपता को ध्यान में रखकर ही उत्पादित करती है। **अमेरिका का राष्ट्रीय पक्षी है गोल्डन ईगल अर्थात सुनहरे पंखों वाला गिद्ध। इसकी मादा दो अण्डे देती है जो अण्डा पहले फूटता है, जो शिशु ज्यादा शक्तिशाली होता है वह दूसरे शिशु से निरंतर युद्ध करता है। वास्तव में दूसरा शिशु केवल प्रतिद्वंदी के रूप में ही उत्पन्न किया जाता है, मजबूत शिशु पक्षी अपने शैशवकाल में ही दूसरे शिशु पक्षी को लड़-लड़कर मार डालता है क्योंकि दूसरे का जन्म ही हारने के लिए हुआ है। एक की हार दूसरे को जीवन जीने की कला सिखाती है। मादा गिद्ध उसे ही पालती है जो जीतता है। यह है योनि की विशेषता, यह है वयस्क अध्यात्म, यह है वास्तविक अध्यात्म, यही है जीव के जीवन का रहस्य। जो सर्वश्रेष्ठ होगा, जो ज्यादा अनुकूलन करेगा, जो जीने के लिए लड़ेगा, जो जीने के लिए संघर्ष करेगा, जो युद्धरत होगा, वही अधिक श्वास लेगा, वही वृद्धि को प्राप्त होगा।** ऐसा ही हुआ आदि शंकर के साथ भी, वे प्राग ज्योतिषपुर पहुँचे वहाँ पर तांत्रिकों, मांत्रिकों का सम्राट था अभिनव गुप्त। था तो वह बहुत विद्वान एवं उसने भगवान वेदव्यास रचित ब्रह्मसूत्र को शाक्तोपासना में परिवर्तित कर कुछ अनूठा ही रच लिया था क्योंकि था तो वह भी कामाख्या अर्थात योनि मण्डल के सानिध्य में। तंत्र और मंत्र उन 64 ज्ञानांगों में आते हैं जिन्हें शिव ने देवी को प्रदान किया है सृष्टि संरचना हेतु, योनि श्रृंगार हेतु, योनि द्वार से प्रादुर्भावित जीव के कल्याण हेतु परन्तु अधिकांशतः इनका दुरुपयोग ही होता है। तंत्र और मंत्र, धन और भय के उत्पादन हेतु ही ज्यादा-तर कुमार्गियों द्वारा उपयोग में लाये जाते हैं। आदि शंकर ने योनि मण्डल का पूजन विधि विधान से किया, योनि रस का पान किया और शुरु किया सनातन धर्म का शंखनाद। एक-एक कर बौद्ध तांत्रिक, शक्ति उपासक हारते गये, अभिनव गुप्त भी हार गया। तांत्रिकों में खलबली मच गई, वे

समझ गये कि यह साक्षात् सूर्य हैं एवं इनके प्रकाश में स्वार्थी तंत्रोपासना नहीं टिक पायेगी, तंत्र के माध्यम से धन कमाना सम्भव नहीं हो पायेगा अत: योजना बद्ध तरीके से अभिनव गुप्त आदि शंकर का शिष्य बन गया और उन पर अभिचार कर्म सम्पादित कर दिया। आदि शंकर भीषण भगंदर के रोग से ग्रसित हो गये। वास्तविक आध्यात्मिक व्यक्तित्व उपचार नहीं कराते, आदि शंकर कह उठे रोग के दो कारण हैं प्रथम पूर्व जन्मकृत पाप एवं द्वितीय शारीरिक गड़बड़ी। पूर्वजन्मकृत पाप से अगर रोग उत्पन्न हुआ है तो भोग अवधि पूर्ण होने पर वह स्वत: ही समाप्त हो जायेगा और अगर शारीरिक गड़बड़ी है तो औषधि ली जा सकती है। शिष्यों की बात मान राज चिकित्सकों ने बहुत इलाज किया पर रोग बढ़ता ही गया। आदि शंकर का यह हाल देख, मृत्यु के अत्यंत करीब उन्हें देख शिव ने देव चिकित्सकों अर्थात अश्विनी कुमारों को ब्राह्मण वेश में भेज दिया। उन्होंने आदि शंकर को देखते ही बता दिया कि यह तो मंत्र शक्ति के द्वारा सम्पादित मारण कर्म का ही उपसर्ग है। **पद्मपाद ने तुरंत ध्यान लगाया और अपने ईष्ट नरसिंह भगवान का आह्वान किया, ध्यान अवस्था में ही उन्हें आदेश मिला कि ॐकार साधना के माध्यम से तुरंत इस अभिचार कर्म का प्रतिकार करो अर्थात धन्यवाद सहित अभिचार कर्म को वापस करो।** आदि शंकर सब जान रहे थे परन्तु चुप थे। पद्मपाद ने आज्ञा मांगी आदि शंकर ने आज्ञा नहीं दी अंत में पद्मपाद बोले हे गुरुदेव अगर अभिचार कर्म के कारण आपने शरीर त्यागा तो सनातन धर्म सदैव के लिए खण्डित हो जायेगा अगर आप स्वेच्छा से शरीर त्यागते तो हम कुछ नहीं कहते। शंकर इस बार मौन थे, योनि मण्डल के अंतर्गत ये तो होना ही था। जब जीव रूपी शिव योनि में होता है तो उसकी सुरक्षा का दायित्व योनि मण्डल की अधिष्ठात्री शक्तियों पर निर्भर होता है इसलिए मातृ शक्तियाँ पूजित हैं। अभी हाल ही में जैन सम्प्रदाय का गजरथ महोत्सव हुआ वहाँ पर परम ब्रह्मचारी आचार्य ने गर्भवास पूजन सम्पन्न करवाया अर्थात पूजा तो गर्भ की ही करवाई आध्यात्मिक रूप से योनि मण्डल को ही जागृत किया। महावीर जब जन्म लेने वाले थे तब उनकी माता ने 16 दिव्य स्वप्न देखे, नाना प्रकार के उपहार दिव्य शक्तियों ने उनकी माता को गर्भ अवस्था के दौरान प्रदान किये। इस प्रकार से गर्भ की शुद्धता, गर्भ की पवित्रता, योनि मण्डल की दिव्यता को ही चैतन्य और जागृत किया गया। परम बाल ब्रह्मचारी आचार्य ने योनि का तिरस्कार नहीं किया, गर्भ को तिरस्कार की दृष्टि से नहीं देखा अपितु अपनी प्रज्ञा शक्ति के द्वारा सत्य को समझा, वास्तविकता को स्वीकार किया। गर्भ गृह से प्रार्थना की, गर्भ गृह से नमन किया कि जो श्रेष्ठतम हो, जो दिव्यतम हो, जो अलौकिक हो वह प्रदान करो और ऐसे ही व्यक्तित्व प्राप्त भी करते हैं। जो गर्भ के रहस्य को नहीं समझ सके उनके कुल में तो सिर्फ कुल भक्षक ही पैदा होते हैं। जीवन के अंतराल को आप ध्यान से देखें मनुष्य जगत की स्तुति कहाँ जाती हैं? जब सामुहिक रूप से जनमानस स्तुति करता है तो एक खेप आती है सौन्दर्यवान मनुष्यों की। हर वर्ष उत्पन्न होने वाला मनुष्य सुन्दर नहीं होता, किसी-किसी वर्ष में जन्म लेने वाले बालक अतुलित सौन्दर्य युक्त होते हैं, किसी-किसी वर्ष में जन्म लेने वाले बालक स्वस्थ शरीर धारण कर घोर यौद्धा होते हैं और किसी-किसी समय मूर्खों की मण्डली उत्पन्न होती है। मैंने ऊपर कहा जो चाहते हो वह योनि मण्डल के द्वारा उत्पादित होगा पर उसका विधान है। **योनि तंत्र कामना से जुड़ा हुआ है एवं कामना का परिष्कृत रूप है मनोकामना। मनोकामना ही योनि मण्डल को मन भावन उत्पादन के लिए प्रेरित करती है।** कामना, मनोकामना

इत्यादि शब्द काम का ही विकसित रूप हैं। काम के मूल से ही कर्म की उत्पत्ति होती है। काम के देवता हैं कामदेव और सहयोगी है रति। कामदेव और रति ये दोनों मिलकर मनोकामना के हिसाब से योनि मण्डल में क्रियाशील होते हैं। **महाशक्ति का प्रिय पुत्र है कामदेव। शक्ति का एकमात्र लक्ष्य है काम को जीवित रखना। कामदेव के लिए महालक्ष्मी पार्वती से भी युद्ध कर बैठीं, शिव को देखकर भी भृकुटि तान ली आखिरकार कामदेव को जीवित करना ही पड़ा।** सति के दुःख में व्यथित हो शिव दिगम्बर वेशधारी हो गये, बंधन विहीन हो गये, गुप्त हो गये एवं योगमार्ग से ढूंढने पर भी नहीं मिल रहे थे। ध्यानस्थ होकर भी ब्रह्मा और विष्णु शिव का पता नहीं लगा पा रहे थे, दिव्य मार्गों से भी शिव के गंतव्य को ढूंढने में वे विफल हो गये। सब कुछ गड़बड़ा गया सृष्टि वृद्धि विहीन हो गई तब ब्रह्मा ने हिमालय से प्रार्थना की कि आप तप करो, विधान करो, किसी भी प्रकार पुनः शक्ति को प्रसन्न कर अपने घर मैथुनी सृष्टि के द्वारा उन्हें गर्भवास लेने के लिए प्रेरित करो ताकि शिव को पुनः प्राप्त किया जा सके। **केवल पार्वती में ही वह शक्ति है जो ऊर्ध्व रेता शिव अर्थात जिनका वीर्य ऊपर की तरफ चढ़ता हो को स्खलित कर सकती हैं। वे ही शिव को आलिंगन बद्ध कर सकती हैं वे ही शिव के वीर्य को धारण कर सकती हैं। ब्रह्माण्ड की किसी अन्य योनि मण्डल में इतनी शक्ति नहीं है कि वे शिव के वीर्य को धारण कर सके केवल आदि योनि के। सृष्टि में तो हाहाकार मचा हुआ था क्योंकि लिंग धारिणी के अभाव में लिंग का तेज सब कुछ नष्ट ही कर रहा था।** प्रथम बार शिव ने दक्ष पुत्री के रूप में शक्ति से विवाह किया। दक्ष ब्रह्मा का मानस पुत्र था और शक्ति भी दक्ष की मानस रचना थी। प्रथम काल में उत्पादन मानस एवं संकल्प शक्तियों के द्वारा होते थे तब मैथुनी सृष्टि नहीं थी, तब कामदेव का प्रादुर्भाव नहीं हुआ था, जीव अभी काम और रति के अभाव में उत्पन्न हो रहा था अतः वह जीवन मरण से मुक्त था, वह विकार रहित था। ब्रह्मा परेशान थे कि उनके द्वारा उत्पादित जीवन में वृद्धि क्यों नहीं हो रही क्योंकि योनि का सम्पूर्ण विकास अभी नहीं हो पाया था। जितने बन गये उतने बन गये। न घटते थे न बढ़ते थे। ब्रह्मा ने एक मानस पुत्री उत्पन्न की संध्या, उसमें काम विकार ही नहीं था वह सृष्टि का उत्पादन करने में रुचि ही नहीं लेती थी, वह संन्यास की तरफ प्रवृत्त हो गई। आरम्भ में तो चंद्रमा के साथ प्रजापति ने अपनी अनेक पुत्रियों का विवाह किया, कश्यप के साथ दक्ष ने अपनी अनेक कन्याओं का विवाह किया कि सृष्टि में वृद्धि हो, सृष्टि में उत्पादन हो परन्तु वही ढाक के तीन पात। **रत्नों को देखो उनमें जीवन है पर वे प्रजनन नहीं करते, जैसे बन गये वैसे ही हैं। एक हीरे को तोड़ो तो दो हो जायेंगे परन्तु इसमें वास्तविक वृद्धि नहीं हुई। शिव और शक्ति का प्रथम विवाह भी कुछ ऐसा ही है। इसमें पुत्रोत्पत्ति की कामना नहीं थी अतः इस मिलन में शिव ने पार्वती रूपा योनि में केवल तंत्र ज्ञान, 64 महाविज्ञान इत्यादि ही रोपित किये। अतः कहीं कुछ कमी रह गई थी इसलिए पार्वती ने दाह किया।** द्वितीय मिलन में पार्वती ने उग्र तपस्या की, ब्रह्मा ने इस बार पुत्रोत्पत्ति हेतु शिव और पार्वती के

महाविद्यामुपास्यैव यदि योनिं न पूजयेत्।
पुरश्चर्या शतेनापि तस्य मन्त्रो न सिद्धयते॥

महादेव ने कहा महाविद्या के उपासकगण यदि योनिपीठ की पूजा न करें तो सौ पुरश्चरण सत्व द्वारा भी मंत्र सिद्ध नहीं होता।

मिलन को प्रस्तावित किया अर्थात वृद्धि गत लक्ष्य बनाया क्योंकि त्रिपुर वध होना था। हिमालय पुत्री पार्वती शिव के नजदीक बैठीं थीं शिव ध्यानस्थ थे तभी कामदेव ने बाण चला दिया, कालान्तर शिव ने कामदेव का दहन कर दिया। कामदेव पार्वती को प्रिय थे वे घबरा उठीं, काम के माध्यम से पार्वती शिव को प्राप्त नहीं कर सकीं अंत में उग्र तपस्या की और शिव को प्राप्त किया। तद-पर्यन्त पार्वती कुछ नहीं बोल रही थीं अंत में शिव बोल उठे तुम मेरी पत्नी बनो। **पार्वती ने कहा मुझे पूर्व जन्म की स्मृति है, पिछली बार आपने बिना ग्रह मिलान किए, वास्तु दोष निवारण किये, बिना निमंत्रण इत्यादि के मात्र संक्षिप्त लोकाचार द्वारा हमने विवाह कर लिया था इसलिए उसका अंत कुछ ठीक नहीं हुआ अतः इस बार विवाह इस प्रकार नहीं होगा। इस बार विवाह मैथुनी समाज के नियमों के अंतर्गत होगा क्योंकि मैं गर्भ से उत्पन्न हुई हूँ। यह शक्ति द्वारा अर्थात आदि योनि द्वारा शिव को जीव में परिवर्तित करने का विधान था, शिव को पूरी तरह आबद्ध करने की प्रक्रिया थी।** यह एक सम्पूर्ण अविष्कार था, योनि की सम्पूर्ण रचना का विधान था। शिव ने आज्ञा ली पार्वती के माता-पिता से, विवाह पत्रिका बंटवाई, लग्न मुहूर्त दिखवाया, निमंत्रण बंटे, सभी आमंत्रित हुए, शिव ने अनुकूलन किया, रूप का भी अनुकूलन किया। पंचमुखी शिव एक मुखी हुए, योनि जैसा चाहती है वैसा ही रूप मिलता है जीव को, अगर जीवात्मा मनुष्य के गर्भ से जन्म लेती है तो उसे मनुष्य का ही रूप मिलेगा। जीवात्मा के चाहने से रूप का निर्धारण नहीं होगा क्योंकि जीवात्मा आबद्ध होती है, गर्भ के अंदर उसकी नहीं चलती जैसा रूप मां कामाख्या देना चाहेंगी वैसा ही मिलेगा। मनुष्य के गर्भ से पक्षी का रूप नहीं मिलेगा पक्षी की योग्यताएं नहीं मिलेंगी जलचर की विशेषताएं नहीं मिलेंगी। शिव ने सब स्वीकार किया एवं विवाह सम्पन्न हुआ और इस प्रकार शिव एवं शक्ति सम्भोगरत हुए। पुनः ब्रह्मा का कार्य प्रारम्भ हुआ, ब्रह्मा ने अपना लक्ष्य पूर्ण किया एवं उन्हें योनि रूपा अविष्कार

मिल गया जिसे उन्होंने कालान्तर जीवों में प्रतिरोपित कर स्व वृद्धि की शुरुआत की। **रति ने कहा हे शिव अब आपका विवाह सम्पन्न हुआ मैथुन क्रिया के द्वारा उत्पन्न महाशक्ति के साथ अतः आप मेरे पति कामदेव को पुनः जीवित कीजिए एवं कामदेव की शक्ति काम को हृदय में धारण कर काम कला को सृष्टि में प्रादुर्भावित कीजिए।** शिव को करना पड़ा, कामदेव जीवित हुए तो शिव ने कहा जाओ जाकर विष्णु के यहाँ निवास करो। शिव ने अपनी स्वतंत्रता अपने पास ही रखी, उन्होंने काम को धारण भी किया और काम से निर्लिप्त भी रहे। आज इस पृथ्वी पर अनेकों काम

तस्या पूजनमात्रेण शिवोहहं श्रृणु पार्व्वति।
राधायोनिं पूजयित्वा कृष्णः कृष्णत्वभगतः॥
श्रीरामोजानकीनाथः सीतायोनि-प्रपूजकः।
रावणं सकुलं हत्वा पुनरागत्य सुन्दरि॥
अयोध्यां नगरीं रम्यां वसतिं कृतवान् स्वयम्।
समुद्रस्य महाविष्णु वेंलायां वटमूलतः॥

हे पार्वति! इस योनिपीठ पर देवी की पूजा करने से मैंने शिवत्व लाभ किया है। राधा की योनिपूजा करके श्रीकृष्ण ने कृष्णत्व प्राप्त किया। सीता की योनि पूजा के प्रभाव से श्रीराम ने रावण का समूल विनाश पुनः रमणीक अयोध्या नगरी में लौटकर वास किया। समुद्रयोनि का आश्रय लेकर महाविष्णु (जगन्नाथ) ने बेलाभूमि से वटमूल का सहारा लेकर अवस्थान किया था।

विमुख मनुष्य घूमते रहते हैं एवं वे सब सृष्टि के प्रारम्भ में उत्पन्न हुई ब्रह्मा की कुछ रचनाओं के प्रतीक हैं। इस सृष्टि में नपुंसक भी उत्पन्न होते हैं, अर्धनारीश्वर अर्थात किन्नर भी उत्पन्न होते हैं, संन्यासी भी उत्पन्न होते हैं एवं संन्यासी दीक्षाओं, संकल्प इत्यादि के माध्यम से मानस पुत्र उत्पन्न करते रहते हैं। संकल्प शक्ति के माध्यम से थोड़ी बहुत वृद्धि करते हैं, परन्तु अधिकांशत: जीव मैथुनी सृष्टि के द्वारा वृद्धि करते रहते हैं उनमें स्व वृद्धि योनि तंत्र के माध्यम से चलती रहती है। पार ब्रह्म केवल योनि को नियंत्रित करते हैं एवं उनकी समस्त शक्तियाँ योनि के माध्यम से ही क्रियाशील होती हैं। योनि संचालन का मुख्य केन्द्र है अगर मनुष्य की लम्बाई तीन फिट कम कर दी जाय तो सारी समस्या ही हल हो जायेगी, यह लम्बाई कम कैसे की जायेगी? योनि विज्ञान के माध्यम से और रहने के लिए ढेर सारी जगह हो जायेगी पृथ्वी पर। अधिकांशत: पशुओं को आप देखें, उनकी संख्या मनुष्यों से ज्यादा है चींटियाँ मनुष्यों से ज्यादा हैं, जलचर मनुष्यों से ज्यादा हैं परन्तु आकार की घट-बढ़ है। ऐसा नहीं है कि मनुष्य ही योनि उपासना करते हैं, एक रानी मधुमक्खी होती है उसका कार्य होता है प्रजनन, वह सिर्फ प्रजनन करती है बाकी सब उसकी सेवा। एक मादा हथनी होती है वही पूरे झुण्ड का नियंत्रण करती है। पशुओं में, जीवों में, कीट पतंगों में वही सबसे ज्यादा पूजनीय है, वही सबसे ज्यादा आदर की अधिकारिणी है, वही नेतृत्व कर्ता है जो कि सबसे ज्यादा काल तक, सबसे ज्यादा स्वस्थ शिशुओं का प्रजनन कर सकती है। समस्त जीवों में प्रजनन, मैथुन, वृद्धि, गर्भधारण ही सबसे ज्यादा पूजनीय और सम्मानित हैं जो जितने ज्यादा पुत्रों की माता, जिसके गर्भ से स्वस्थ, बलवान, प्रज्ञावान, अद्‌भुत जीवों का सृजन वही सबसे ज्यादा भाग्यवान। सबसे ज्यादा आदरणीय है योनि तंत्रम्। यह है योनि उपासना। योनि उपासना सकाम होती है, मनोकामना आधारित होती है, यह आनंद का मार्ग है, यह प्राप्ति का मार्ग है अत: इस अंक को लिखने का भी ध्येय है। मैं चाहता हूँ मेरे जिन शिष्यों को संतान उत्पत्ति में दिक्कत हो रही हो, जिनके विवाह इत्यादि में रुकावट आ रही हो माँ कामाख्या अर्थात मातृ मण्डल अपनी इस दुर्लभ शक्ति के द्वारा उनकी मनोकामनाएं पूर्ण करें। पुत्र की मनोकामना वाले को पुत्र दो, संतान की मनोकामना वाले को संतान दो, विवाह की मनोकामना वाले को वैवाहिक जीवन दो। योनि का मतलब मूलभूत रूप से तो प्रजनन केन्द्र ही है परन्तु कालान्तर योनि तंत्र का विकास शरीर के प्रत्येक विभाग में हुआ है, सृष्टि की प्रत्येक क्रिया में हुआ है। पिण्ड एवं पिण्डात्मक जीवन से छुटकारा प्राप्ति हेतु ही योनि तंत्र को समझना आवश्यक है। शरीर में अंगों का विकास क्यों? शरीर को भोजन क्यों? शरीर में वृद्धि क्यों? इन सबके पीछे क्या उद्देश्य है? इन सबके पीछे मात्र एक उद्देश्य है उत्पत्ति, भैरव उत्पत्ति। इसे ही भैरव विज्ञान कहते हैं। यही भैरव विज्ञान मनुष्य को अनेकानेक इन्द्रियों से युक्त करता है। मनुष्य निरंतर इन्द्रिय प्राप्ति की कोशिश में लगा रहता है अंतेन्द्रिय विकास, पराइन्द्रिय विकास, सूक्ष्मइन्द्रिय विकास, बाह्यइन्द्रिय विकास और अब यंत्रों के माध्यम से जगत में इन्द्रियों को फैलाने की चरम कोशिश। यह शिव से अर्थात पिण्ड रूप से भैरव बनने की महागाथा है। उज्जैन में शिव जी भी पिण्डी रूप में हैं, भैरव भी पिण्डी रूप हैं, गणेश भी पिण्डी रूप हैं, देवी भी पिण्डी रूप हैं परन्तु इन पिण्डी रूपों में से आकृतियाँ झांक रही हैं, इन्द्रियाँ विकसित हो रही हैं। पिण्डी को शरीर प्रदान करती है योनि और इस प्रक्रिया में योनि प्रसव पीड़ा झेलती है एवं पिण्ड आबद्धता झेलता है, यह सब इसलिए कि भैरव भैरवियों का जन्म हो। चक्र पूजन तो होते ही हैं।

होली पर विशेष

कामाख्या देवी शाबर मंत्र

होलिका दहन की रात्रि से लेकर रंग पंचमी तक का समय मंत्र सिद्धि के लिए अत्यधिक उपयुक्त होता है। विशेषकर सभी सम्प्रदायों मे साधक शाबर मंत्रों की सिद्धि इसी काल में करते हैं। नीचे कामाख्या तंत्र से सम्बन्धित अतिशीघ्र प्रभाव देने वाले शाबर मंत्रों का वर्णन दिया जा रहा है जिसे आप पाँच दिनों के भीतर सिद्ध कर सकते हैं। नीचे लिखे प्रत्येक मंत्र को 1100 बार नवीन रुद्राक्ष माला से जप करना चाहिए। जप से पूर्व कामाख्या यंत्र स्थापित कर पत्रिका में बताई गई विधि के अनुसार उस यंत्र का पूजन सम्पन्न कर लें। यंत्र को लाल कपड़े पर स्थापित करके रखना चाहिए साधना काल में ब्रह्मचर्य आवश्यक है एवं इन मंत्रों को जगाने के लिए दिन या रात्रि से विशेष फर्क नहीं पड़ता है। अगर आपने किसी को मंत्र अपने मुख से बता दिया तो उसी वक्त मंत्र शक्ति निष्क्रिय हो जाती है।

तिजारी, इकतरा और आधासीसी झाड़ने का मंत्र

ॐ कामर देश कामाक्षा देवी, तहाँ बसै इस्माईल जोगी। इस्माईल जोगी के तीन पुत्री, एक रोलै, एक पक्षौले। एक ताप तिजारी इकतरा अथवा आधा सीसी टोरे। उतरै तो उतरो चढ़े तो मारो। न उतरै तो गं गरुण मोर हंकारी। सबद सांचा, पिण्ड कांचा। फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

उपरोक्त मंत्र का उच्चारण करते हुए मोर पंख से झाड़ना चाहिए।

दाँत दर्द झाड़ने का मंत्र

ॐ नमः आदेश कामरु देश कामाक्षा देवी, जहाँ बसैं इस्माईल जोगी। इस्माईल योगी ने पाली गाय, नित दिन चरने बन में जाए। बन में सूखा घास पात जो खाय, उसके गोबर ते कीड़ा उपजाय। सात सूत सुतियाला, पुच्छि पुच्छि याला। देह पीला मुख काला। वह अन्न कीड़ा दनत गलाबे मसूढ़ गलावे, डाढ़ मसूढ़ करै पीड़ा तो गुरु गोरखनाथ की दोहाई फिरे।

इस मंत्र के प्रयोग के लिए तीन लोहे की कीलें लेकर इन्हें सात बार अभिमंत्रित करके किसी लकड़ी में ठोंक दें। दाँत, मसूढ़ों और दाढ़ के दर्द में इससे लाभ होता है।

आँख झाड़ने का मंत्र

उत्तर दिशि कूल कामाख्या सुन योगी की बाघ इस्माईल योगी की दुइ बेटी, एक के सिर चूल्हा दूसरी काटै माड़ी फूला लोना चमारी दुहाई शब्द सांचा फूली काछा पिण्ड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

उपरोक्त मंत्र का 21 बार उच्चारण करते हुए चाकू से भूमि में सात रेखा खींचे। इस प्रकार सात दिन तक निरन्तर झाड़े तो नेत्र रोग का शमन हो जाता है।

कान दर्द झाड़ने का मंत्र

ॐ कनक पर्वत पहाड़ धुंधुआर धार कामरूप कामाख्या घुस लेकर डार डार पात पात झार झार मार मार हुं हुंकार ॐ क्लीं क्रीं स्वाहा।

उपरोक्त मंत्र को 21 बार सर्प की बांबी की मिट्टी को अभिमंत्रित करके कान में लगाए तो हर प्रकार के कान का दर्द शांत हो जाता है।

कमर दर्द झाड़ने का मंत्र

चलता आवे उछलता जाए, भस्म करता डह जाय माँ कामाख्या सिद्धि, गुरु की आन, मंत्र साँचा पिण्ड कांचा, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

कुमारी कन्या के शुक्ल पक्ष में 101 तार के काते हुए सूत को उपरोक्त मंत्र से 11 बार अभिमंत्रित करें और कमर में बाँध दें तो कमर का दर्द चला जाता है।

पेट का दर्द शांत करने का मंत्र

ॐ नुन तू सिन्धू नून सिंधुवाय। नुन मंत्र पिता महादेव रचाया॥ महेश के आदेश मोही गुरुदेव सिखाया। गुरु ज्ञान से हम देऊ पीर भगाया॥ आदेश देवी कामरू कामाक्षा माई। आशा हाड़ि सादी चण्डी की दोहाई॥

तीन अंगुलियों से सेंधा नमक लें और उसे तीन बार उपरोक्त मंत्र से अभिमंत्रित करके खिलाएँ तो उदर पीड़ा की निवृत्ति होती है।

समस्त शरीर की पीड़ा दूर करने का मंत्र

ॐ नमो कोतकी ज्वालामुखी काली दे बर, रोग पीड़ा दूर कर, सात समुन्दर पार कर, आदेश कामरू देश कामाख्या माई हाड़ि दासी चंडी की दुहाई।

उपरोक्त मंत्र से 11 बार झाड़ने पर समस्त शरीर के दर्द की निवृत्ति होती है।

पेट दर्द दूर करने का दूसरा मंत्र

ॐ पेट व्यथा पेट व्यथा तुम हो बलबीर। तेरे दर्द से पशु मनुष्य नहीं स्थिर॥ पेट पीड़ा लेवें पल में निकार। दो फेंक सात समुन्दर पार॥ आज्ञा कामरू कामाख्या माई। आशा हाड़ि दासी चण्डी दोहाई॥

बाएँ हाथ से दर्द वाले भाग का स्पर्श करें और सात बार उपरोक्त मंत्र का उच्चारण करते हुए झाड़ना चाहिए।

पेट के वायु गोला झाड़ने का मंत्र

ॐ नमो काली कङ्कालिनी नदी पार बसै इस्माईल योगी लोहे का कछौटा काटि काटि लोहे का गोला काट काट, ओ कामाख्या तो शब्द सांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

रविवार अथवा मंगलवार को चाकू से पृथ्वी पर रेखा काटते हुए उपरोक्त मंत्र का उच्चारण करते हुए झाड़े तो वायु गोला दर्द में आरोग्य होता है।

पेचिस झाड़ने का मंत्र

ॐ नमो कामरू देश कामाख्या देवी तहाँ क्षीर सागर के बीच उपला पानी। अरे रक्त पेचिस ओर कौन ठिकाना। (अमुक) के उदार खोंचा जो रहा उपजाय। नरसिंह बर से क्षण में चल जाय। (अमुक) अंग नहीं रोग नहीं पीर। गुरु में बाँध दिया जंजीर। आज्ञा हाड़ि दासी चण्डी की।

अमुक के स्थान पर रोगी का नाम लेकर पीतल के किसी बर्तन में रखें जल को ऊपर के मंत्र से तीन बार अभिमंत्रित करके रोगी को पिलाएं तो हर प्रकार का पेचिस ठीक हो जाता है।

पाचन क्रिया बढ़ाने के लिए

अगस्त्यं कुंभकरणं च शमिंच बडवानलम्।
भोजनं पचनार्थाय स्मरेद्भीम् च पंचकम्॥

भोजन करने के बाद तीन बार मंत्र का उच्चारण करके पेट पर दायाँ हाथ फेरना चाहिए।

बवासीर झाड़ने का मंत्र

ॐ नमो आदेश कामरू कामाक्षा देवी की, भीतर बाहर में बोलूँ सुन देकर मन तूँ कहे जलावल केहि कारण।

रसहित पर तूं डूमर में विख्यात रहता ऊपर अमुक के गात नरसिंह देव तोसे बोले बानी अब झट से होजा तू पानी आज्ञा हाड़ि दासी फुरो मंत्र चण्डी उवाच।

प्रात: व सायं तीन बार मंत्र का उच्चारण करके झाड़ना चाहिए। लगातार 15-20 दिन तक ऐसा करें।

नक्सीर रोकने का मंत्र

ॐ नमो गुरु की आज्ञा सार-सार महासागर बाँधू सात बार फिर बाँधू तीन बार लोहे की सार बाँधू सीर बाँधे हनुमन्त वीर पाके न फूटे तुरत सेखे।

श्री हनुमान जी का उपासक इसे अधिक सफलता से प्रयोग कर सकता है। वैसे सभी कर सकते हैं। इस मंत्र को सिद्ध करने के बाद आवश्यकता पड़ने पर कण्डे की भस्म से सात बार रोगी को झाड़ना चाहिए।

पीलिया (कमल) रोग निवारण के लिए

ॐ नमा वीर वैताल असराज नारसिंह देव खादी तुषार्दी पीलिया कूं भिदाती क़ारै झारै पीलिया रहै न कमल रहे न नेक निशान जो कही जाय तो कामरू कामाख्या की आन मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

एक कांसे की कटोरी या थाली में थोड़ा सा तेल डालकर उसे रोगी के सिर पर रख दें। मंत्र का उच्चारण करते हुए कुशा या दूब से उसे चलाते रहें। मंत्र के प्रभाव का प्रमाण यह होगा कि तेल धीरे-धीरे पीला होता जाएगा। जब तेल पीला हो जाय तो उसे उतार लें। इस प्रक्रिया को तीन दिन लगातार करें। पीलिया रोग ठीक हो जायेगा।

पागल कुत्ते के काटे का मंत्र

ॐ कामरू देश कामाख्या देवी, जहाँ बसै इस्माईल योगी। इस्माईल जोगी का झाबरा कुत्ता सोना डाढ़ रूप का कुंडा। बन्दर नीचे रीछ बजावे सीतां बैठी औषध बाँटे कूकुर का विष दूरहिं भागे। शब्द सांचा पिण्ड काँचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र का उच्चारण करते हुए पागल कुत्ते ने जहाँ पर काटा हो वहाँ पर झाड़े तो विष उतर जाता है और किसी प्रकार का कष्ट नहीं रहता।

मृगी रोग निवृत्ति के लिए मंत्र

ॐ हलाहल सरगत मंड़िया पुरिया श्रीराम जी फूंके मृगी वाई सूखे सुख होई ॐ ठ: ठ: स्वाहा।

इस मंत्र को भोजपत्र पर अष्टगंध से लिखकर गले में बाँध देना चाहिए।

अण्डवृद्धि (हाइड्रोसिल) की निवृत्ति के लिए

ॐ नमो आदेश गुरु को जैसे के लेहु रामचन्द्र कबूत ओसाई करहु राध बिनि कबूत पवन पूत हनुमंत धाउ हर-हर रावन कूट मिरावन श्रावइ अण्ड खेतहि श्रावइ अण्ड* अण्ड विहण्ड श्रावइ वाजं गर्भहिं श्रवइ स्त्री कीलहि श्रवइ शाप हर हर जबरि हर हर हर!!!

इसका उपचार दो प्रकार से किया जाता है-

अण्डकोष को धीरे-धीरे से मलते रहिए और मंत्र का उच्चारण करते रहना चाहिये।

रोगी को अभिमंत्रित जल पिलाना चाहिए।

जलने व घाव शीघ्र भरने के लिए

ॐ नमो आदेश कामरू देश कामाख्या देवी जले तेल रेव तेव महातोरे। (अमुक) लहर पीर पल में टारे, मंत्र पढ़े नरसिंह देव कुटिया में बैठि के, श्री रामचन्द्र रहि रहि फूँक के। जाय (अमुक) के, जलन एक पलन में जाय खाय सागर की नीर नान में। आज्ञा हाड़ि दासो फुरो मंत्र चण्डी वाचा।

तेली के घर से लाया हुआ सरसों के तेल से उपरोक्त मंत्र से तीन बार अभिमंत्रित करके जले स्थान पर लगाएँ तो जलन से हुए घाव या अन्य घाव शीघ्र ठीक हो जाता है।

नजर टोना झाड़ने का मंत्र

ॐ नमो कामरू देश कामाक्षा देवी को आदेश नजर काटौं बजर काटौं मुहूर्त में देकर पाप रक्षा करें जय दुर्गा माय, नरसिंह ओना टोना बहाय (अमुक) रोग सागर पार चल जाय आज्ञा हाड़िदासी चण्डी दुहाई। फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

रोगी को तीन बार उपरोक्त मंत्र पढ़कर झाड़ना चाहिए।

मृतसञ्जीवनी विद्या मंत्र

हों ओं सा ओं भू भुर्वः स्वाहा। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् उर्वारुकमिव बन्धानान्मृत्योर्मुक्षीय आमृतात। हों ओं जूं सः ॐ भू भुर्वः स्वाहा।

इस मंत्र की कम से कम एक माला (108) जप से सभी कार्यों में सफलता प्राप्त होती है। अधिक जप से अधिक लाभ की आशा निश्चित है। आरोग्य प्राप्ति इसकी विशेषता है।

शरीर रक्षा के लिए

ॐ नमो परमात्मने परब्रह्म ममशरीरे पाहि पाहि कुरु कुरु स्वाहा।

किसी शुभ तिथि को एक हजार मंत्र जप करके इसे सिद्ध कर लेना चाहिए। फिर 108 बार मंत्र नित्य जप करने से शरीर की रक्षा होती है।

कार्य सम्पन्न करने के लिए

ॐ नमः बज्र का कोठा जिसमें पिण्ड हमार पैठा ईश्वर कुंजी ब्रह्मा का ताला मेरे आठों याम का यती हनुमंत रखवाला।

1000 मंत्र जप से इसे सिद्ध करने के बाद तीन बार मंत्र उच्चारण करने से ही कार्य सम्पन्न होता है।

मासिक धर्म के कष्ट की निवृत्ति के लिए

ॐ नमों आदेश देवी मनसा माई बड़ी-बड़ी अदरक पतली पतली पतली रेश बड़े विष के जल फाँसी दे शेष गुरु का वचन न जाय खाली। पिया पंचमुण्ड के बामपद ठेली, विषहरी राई को दुहाई फिरै।

अदरक का एक छोटा सा टुकड़ा लेकर तीन बार उपरोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर रोगिणी को खिलाएँ।

गर्भ रक्षा मंत्र

॥ ॐ थं ठं ठिं ठीं ठें ठैं ठौं ठः ठः ॐ॥

भोजपत्र पर अनार की कलम से उपरोक्त मंत्र को लिखकर ताबीज की तरह स्त्री की कमर में बाँध दें। जिस सूत्र से ताबीज बाँधा जाए वह किसी कुमारी कन्या के हाथ का काता हुआ हो। इसके साथ ही अनुराधा नक्षत्र में और हर्षण योग में सोमवार को 108 मंत्र के उच्चारण के साथ स्त्री को झाड़े तो गर्भ गिरने का भय नहीं रहता।

सुखी प्रसव के लिए

ऐं हं ह्रां हूं हं ह्रौं हः।

केसर के भोजपत्र पर इस मंत्र को श्रद्धापूर्वक लिखें और एक गर्भिणी स्त्री को दिखाकर उसके बिस्तर के नीचे रख दें। इस प्रक्रिया से शिशु का जन्म सुखपूर्वक हो जायेगा।

चोर भय रक्षा मंत्र

ॐ करालिनी स्वाहा ॐ कपालिनी स्वाहा। ह्रौं ह्रीं ह्रीं ह्रीं चोर बंध ठः ठः ठः।

108 मंत्र जप कर सिद्ध कर लेना चाहिए फिर सात बार मंत्र का उच्चारण करके अभिमंत्रित मिट्टी द्वार पर गाड़ दें तो चोर भय नहीं होता।

सर्वकार्यसिद्ध मंत्र

ॐ आं आं स्वाहा।

इस मंत्र की सिद्धि के लिए 1000 मंत्र नित्य जपें। 21 दिन जपने के बाद दशांश हवन करें। साधना काल में साधक को चाहिए कि वह पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करें। पुनः जिस काम को करना हो 108 बार जप कर काम में हाथ लगाए। कार्य अवश्य सिद्ध होगा।

सर्व कार्य सिद्धि का दूसरा मंत्र

ॐ नाम काली कंकाली महाकाली के पूत कंकाली भैरव हुक्मे हाजिर रहै मेरा भेजा तुरत करे रक्षा करे आन बाँधों बान बाँधों चलते फिरते को औसान बाँधू दशा मुखा बाँधू नो नाड़ी बहत्तर कोठा बाँधू फूल में भेजूं फूल में जाय काठे जी पड़े थर थर काँपे हल हल हलै गिर गिर परै उठ उठ भगै बक बक बकै मेरा भेजा सवा घड़ी पहर सवा दिन सवा मास सवा बरस का बावला न करे तो काली माता की शैय्या पर पाँव धरे वचन जो चुकै तो समुद्र सूखे बाचा छोड़ कुबावा करै तो धोबी की नाद चमार के कुण्डे में पैर मेरा भेजा न करै तो रुद्र के नेत्र से अग्नि ज्वाला कढै सिर की जटा टूटि भूमि पर गिरे माता पार्वती के चीर पै चोट पड़े बिना हुक्त नहीं मारना हो, काली के पुत्र कङ्काल भैरव फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

यह भैरव के सिद्धि का मंत्र भी है इसे सूर्य ग्रहण की रात्रि में सिद्ध करना चाहिए। साधना के लिए त्रिकोण चौका लगाना चाहिये और घी का चौमुखा होना चाहिए। दखिण दिशा की ओर मुख करके बैठना चाहिए। पूजन में लड्डू, एक जोड़ा लौंग, सिन्दूर, लाल कनेर के फूल अवश्य रखना चाहिए। उपरोक्त मंत्र का एक सहस्र जप करके दशांश हवन करने से मंत्र सिद्ध होता है। यदि भैरव साक्षात् उपस्थित हो जाएँ तो साधक को भयभीत नहीं होना चाहिए वरन् सम्मान के रूप में धूप-दीप से उनका पूजन करें और गले में फूलों की माला पहना दें और नैवेद्य के रूप में लड्डू प्रस्तुत करें। फिर साधक उनसे जिस कार्य के लिए कहेगा, उसकी पूर्ति होगी।

पुष्टि कर्म मंत्र

ॐ परब्रह्म परमात्मने नमः। उत्पत्ति स्थित प्रलय काराय ब्रह्म हरिहराय त्रिगुणात्मने सर्व कौतुक निदर्शय दर्शय दत्तात्रायाय नमः। मंत्र तंत्र सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा।

21 दिन में विधि विधान पूर्वक एक लाख मंत्र जपने से इसकी सिद्धि मानी जाती है। इसे दीपावली, होली अथवा किसी अन्य शुभपर्व पर सिद्ध किया जा सकता है। सिद्ध करने के पश्चात् किसी भी कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए इस मंत्र को 108 बार जपना होता है।

धन प्राप्ति के लिए

ॐ लक्ष्मीं वं, श्री कमला धारं स्वाहा।

इस मंत्र की सिद्धि के लिए एक लाख बीस हजार बार जपने तथा दशांश हवन करने से होती है। इसका शुभारम्भ वैशाख मास में स्वामी नक्षत्र में करें तो शुभ होगा।

नौकरी तथा व्यापार पाने के लिए

ॐ नमः भगवती पद्मावती सर्वजन मोहिनी सर्वकार्य वरदायिनी मम विकट संकट हारिणंी मम मनोरथ पूरणी मम शोक विनासिनी ॐ नमः पद्मावत्यै नमः।

इस मंत्र की सिद्धि करने के बाद मंत्र का प्रयोग किया जाए जो नौकरी अथवा व्यापार की व्यवस्था देवी की कृपा से हो जाती है। इसमें आने वाले विघ्न दूर हो जाते हैं। धूप दीप आदि से पूजन करे प्रातः दोपहर और सायंकाल में एक-एक माला का निरंतर एक मास तक जप कर दशांश हवन करें। साधना स्थल के सामने (1) लिखकर रख लें एकाग्रतापूर्वक की गई साधना सफल होती है।

व्यापार वृद्धि के लिए

॥ ॐ श्रीं श्रीं श्रीं परमां सिद्धौं श्रीं श्रीं ॐ॥

इसकी साधना सायंकाल को श्रेष्ठ मानी जाती है। प्रदोष व्रत करके 1000 मंत्रों का जप करें। पश्चात् अष्टगंध और नागोरी के फूलों से 108 मंत्र की अग्नि में आहुतियाँ दें। इस प्रकार सात प्रदोष करने से व्यापार में वृद्धि होती है।

बुद्धि विकास के लिए

ॐ नमो कामाक्षा, त्रिशुला, रब, हस्त, पाधा पाती, गरुण सर्व लखी तु प्रीतये, समांगन तत्त्व चिन्तामणि नरसिंह चल, चल क्षोनकोटीकात्थानी तालव प्रसाद के ॐ ह्रों ह्रीं क्रूं त्रिभवन चालिया, चाहिया स्वाहा।

इस साधना का शुभारम्भ शुक्ल पक्ष रोहिणी नक्षत्र के दिन से करना चाहिए। अगले रोहिणी नक्षत्र के दिन तक मंत्र जप करते रहना चाहिए। प्रातः स्नानादि से निवृत्ति होकर 41 तुलसी के पत्तों को उपरोक्त मंत्र से 108 बार अभिमंत्रित करके खा लिया करें। इस साधना से बुद्धि का तीव्र विकास होता है।

बुद्धि विकास का दूसरा विधान

ॐ सच्चिदा एकी ब्रह्म ह्रीं सच्चिदी क्रीं ब्रह्म।

इस मंत्र के एक लाख जप से बुद्धि तीव्र होती है और विद्या की प्राप्ति होती है।

विद्या प्राप्ति के लिए

ॐ नमः श्रीं श्रीं अहं वद वद वाग्वादिनी भगवती सरस्वत्यै नमः स्वाहा विद्यां देहि ममः ह्रीं सरस्वती स्वाहा।

सूर्य या चंद्र ग्रहण के दिन 144 मंत्र के जप से साधना का शुभारम्भ करना चाहिये। इसे 21 दिनों तक लगातार 108 मंत्र जप करके साधना में लगे रहें। इससे विद्या की प्राप्ति होती है।

वाक सिद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं कामिनी स्वाहा।

इससे वाक् शक्ति मिलती है। यहाँ तक कि गूंगे को श्री कंठ मिलता है। इसकी सिद्धि तेरह हजार मंत्र नित्य प्रति जपने से तीन मास में प्राप्त होती है। अनुष्ठान के दिनों में सात्विक आहार करना चाहिए। सत्य और अहिंसा का पालन करना चाहिए और छल कपट से दूर रहना चाहिए। वकीलों के लिए यह मंत्र परमोपयोगी है।

उन्नति के लिए

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं लक्ष्मी मम् गृहे धन पूरे, चिन्ता दूरे दूरे स्वाहो।

व्यापार, नौकरी या किसी भी क्षेत्र में निरन्तर उन्नति प्राप्त करने के लिए इस मंत्र का नित्य 108

बार जप किया करें।

विघ्न नाश के लिए

ॐ नमः शान्ते प्रशांते ध्र ह्रीं ह्रौं सर्वक्रोध प्रशमनी स्वाहा।

एक हज़ार मंत्र जप करके इसे सिद्ध करें। फिर नित्य प्रति 21 बार मंत्र का उच्चारण करके मुख का मार्जन करें तो परिवार के सभी सदस्यों की हर प्रकार के विघ्नों से सुरक्षा रहती है। सायंकाल पीपल की जड़ में शर्बत छोड़ें और श्रद्धापूर्वक धूप, दीप जलाएँ।

किसी भी कष्ट से छुटकारा पाने के लिए

ॐ रां रां रां रां रां रां रां रां रां कष्ट स्वाहा।

इसका 108 बार पाठ करना चाहिए।

योगिनी दशा दोष निवारण मंत्र

मंगला-ॐ ह्रीं मंगले मंगलायै स्वाहा।

जप संख्या- 1000 बार

पिंगला-ॐ ग्लौं पिंगले वैरिकारिणी प्रसीद फट् स्वाहा।

जप संख्या- 2000 बार

धान्या- ॐ श्री धनदे धन्ये स्वाहा।

जप संख्या- 3000 बार

भ्रामरी-ॐ भ्रामरी जगताधीश्वरी भ्रामरी क्लीं स्वाहा।

जप संख्या- 4000 बार

भद्रिका-ॐ भद्रिके भ्रदं देहि अभद्रनाशाय स्वाहा।

जप संख्या- 5000 बार

उल्का-ॐ उल्के मम रोगं जम्भय स्वाहा।

जप संख्या- 6000 बार

सिद्धा-ॐ ह्रीं सिद्धे मे सर्वमानं संसाधय स्वाहा।

जप संख्या- 7000 बार

संकटा-ॐ ह्रीं सङ्कटे मम रोगं नाशय स्वाहा।

जप संख्या- 8000 या अधिक से अधिक जितना हो सके। जप के पश्चात् दशांश हवन करना चाहिए।

सर्व ग्रह दोष, भूत-प्रेत महापातक दारिद्रादि नाशक मंत्र

ॐ नमः भवे भास्कराय अस्माकं अमुक सर्वं ग्रहणं पीड़ा नाशनं कुरु कुरु स्वाहा।

इस मंत्र का प्रयोग करने से पहले इसकी सिद्धि अवश्य कर लेना चाहिए। सिद्धि के लिए 108 मंत्र का जप पर्याप्त माना जाता है। इस मंत्र से 108 आहुति देनी चाहिए। हवन सन्ध्या समय होना चाहिए। सामग्री में जौ, तिल, सफेद सरसों, गेहूँ, चावल, मूंग, चना, कुश, शम्मी, आम्र, डुम्बरक् पत्ता और अशोक, धतूरा, दूर्वा, आक व ओंगा की जड़ लेकर इनमें दूध, घी, मधु और गोमूत्र भी मिला लेना चाहिए। इसकी सिद्धि से सभी प्रकार के ग्रह, पीड़ा, भूत-प्रेतोपद्रव एवं महापातक दोष महादारिद्रादिक नाश होकर सुख और शान्ति मिलती है।

ग्रह बाधा निवारण मंत्र

ॐ शं शं शिं शीं शुं शूं शें शैं शों शौं शं शः स्वः सः स्वाहा।

बारह अंगुली की पलाश की लकड़ी की एक अच्छी सी कील बना लें और 1000 मंत्र का जप करके इसे अभिमंत्रित करें। जिस घर में यह कील गाड़ी जाएगी वह घर भूत प्रेत प्रेतकादि दोषों से मुक्त रहेगा।

दीक्षा संस्कार

जिस प्रकार सर्वार्थ सिद्धि योग होता है उसी प्रकार घातक योग भी होते हैं। अच्छा है तो बुरा भी है। गर्भ में ही मृत्यु, रोग, शोक, वियोग आत्मा के साथ चिपक जाते हैं एवं इन सबका निवारण कालान्तर अध्यात्म के माध्यम से होता है दिनांक 4, 11, 21 प्रत्येक रविवार, प्रत्येक गुरुवार को कुछ ऐसे दिन निश्चित है जिस समय अधिकांशतः अनुष्ठान इत्यादि होते हैं अतः इन दिनों में दीक्षा का लाभ उत्कृष्ट होता है। शिविरों में हो सकता है व्यक्तिगत बातचीत न हो पाये, व्यक्तिगत बातचीत से केवल मन को तसल्ली मिलती है परन्तु पूजन एवं अनुष्ठान जो कि शिविर में सम्पन्न किये जाते हैं उनमें बिना बोले ही समस्याओं का निवारण हो जाता है। साधना सिद्धि विज्ञान केन्द्र कोई आश्रम या मठ नहीं है बस एक छोटा सा गर्भ गृह है अर्थात तीस चालीस लोग के बैठने का एक कमरा है और ऐसा ही रहेगा। इसी गर्भ गृह में पता नहीं कितने आये, कितनी दीक्षाएं हुई, कितने अनुष्ठान हुए, कितनी समस्याओं का समाधान हुआ, कितनी जिज्ञासाएं शांत हुई, इसका हिसाब रखना असम्भव है। कहीं कोई बोर्ड लगा हुआ नहीं है, कहीं कोई प्रचार नहीं है और न होगा। अतः आने वाले भव्य आश्रम, ताम झाम, लम्बी चौड़ी व्यवस्था इत्यादि के प्रपंचों से अपने मानस को मुक्त रखें। यह सब करना बायें हाथ का खेल है पर पता नहीं कभी आत्मा गंवारा नहीं करती विशेष आशीर्वाद।

नोट : जो भी साधक/शिष्य पत्रिका सेट मंगाते हैं या पत्रिका के वार्षिक सदस्य बनते हैं वे या उनके परिवार के सदस्य फोटो द्वारा निःशुल्क दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं एवं अपनी समस्या का निराकरण भी करवा सकते हैं। पत्र के साथ टिकट लगा हुआ जवाबी लिफाफा अवश्य भेंजे।

दीक्षा प्राप्ति का समय

प्रतिदिन- 12 से 1 बजे तक एवं रविवार 12 से 5 बजे तक।

4, 11 एवं 21 तारीख को 12 बजे से 5 बजे तक।

साधना जी से सीधे सम्पर्क का समय:

रात्रि- 8 बजे से 8:30 बजे तक (रविवार अवकाश)

दूरभाष : 2554925, 5271116.

अरविन्द जी से सीधे सम्पर्क का समय:

सायं 7 बजे से 8:30 बजे तक (रविवार अवकाश)

दूरभाष : 2576346, 5269368

जानकारी, जिज्ञासा, सूचना हेतु कार्यालय में सम्पर्क का समय

10 बजे से 7 बजे तक (रविवार अवकाश)

दूरभाष : 2576346, 5269368

लिंग-धारिणी

कामाख्या शक्ति पीठ के सानिध्य में पदमपाद ने आदि गुरु शंकराचार्य जी से कहा कि अगर आप स्वेच्छा से शरीर त्यागते हैं, योग मार्ग के द्वारा समाधिस्थ होकर शरीर त्यागते हैं तो इसमें हम शिष्यों को कोई ऐतराज नहीं है, यह आपका क्षेत्र हैं, आप साक्षात् शंकर हैं, आपने जन्म भी स्वेच्छा से लिया है, न कि कर्म बंधनों के कारण आप योनि द्वारा बाधित हो इस पृथ्वी पर अवतरित हुए हैं अत: आपने सनातन धर्म की सबसे विहंगम परम्परा अर्थात एक निष्ठ ब्रह्मचर्य को धारण किया है। **हे गुरुदेव अगर मैंने प्रत्याभिचार नहीं किया, मल मूत्र में लिपटे, माया से ग्रसित तांत्रिक अभिनव गुप्त का संहार नहीं किया तो इस संसार में केवल योनि तंत्रम् ही प्रतिष्ठित होकर रह जायेगा एवं शैव मार्ग का जन मानस में खण्डन हो जायेगा क्योंकि आदि उत्पत्ति तो शैव मार्ग से हुई है। आदि सिद्ध तो अयोनिज हैं, नाथ तो अयोनिज हैं, वे तो शिव के अर्धनारीश्वर स्वरूप से उत्पन्न हुए हैं अत: संन्यास धर्म तो समाज को यह प्रमाणित करता है कि अयोनिज उत्पत्ति भी शिव के लिए सम्भव है, आदि शंकर मौन हो गये।** पदमपाद ने ॐकार अस्त्र का संधान शुरु किया और देखते ही देखते पदमपाद के ॐकार नाद ने अभिनव गुप्त द्वारा प्रक्षेपित भगंदर के महारोग को उसी में रोपित कर दिया। कुछ ही दिनों में आदि शंकर पुन: स्वस्थ, चैतन्य और जागृत हो गये एवं अभिनव गुप्त भगंदर के रोग से पीड़ित हो मृत्यु को प्राप्त हुआ। मां कामाख्या पुन: एक बार धूर्त, आसुरी तांत्रिकों से मुक्त हुई। योनि मण्डल के आस-पास दसों महाविद्याएं प्रतिष्ठित क्यों होती हैं? प्रत्येक जीव में योनि भाग सबसे ज्यादा सुरक्षित क्यों होता है? योनि मण्डल की रक्षा के लिए विष्णु सहित समस्त दैव शक्तियाँ प्रतिक्षण क्यों सजग रहती हैं? क्योंकि योनि मण्डल ही महाउत्पादन का मूल क्षेत्र है। यह सबसे गोपनीय एवं क्रियाशील क्षेत्र है। **जो शक्तियाँ सृष्टि को नष्ट करना चाहती हैं, जो सृजन के विरुद्ध होती हैं या फिर सृजन क्षेत्र पर अतिक्रमण कर स्वयं का उत्पादन करना चाहती हैं वे बार-बार योनि मण्डल के इर्द-गिर्द मंडराती रहती हैं एवं उस पर एकाधिकार प्राप्त करना चाहती हैं अत: योनि मण्डल को पवित्र, सुरक्षित, आक्रमण विहीन एवं नकारात्मक शक्तियों की पहुँच से दूर रखने का मुख्य कार्य सभी देव शक्तियों पर है।** तूने मेरी कोख लजा दी, तू जन्म लेते ही मृत्यु को क्यों प्राप्त नहीं हो गई, मैं

तुझे मृत्यु प्रदान कर दूंगी, तेरे साथ स्वयं भस्म हो जाऊँगी परन्तु तेरा यह विवाह कदापि नहीं होने दूंगी। यह शब्द थे पार्वती की माता एवं हिमालय की अर्धांगिनी मैना रानी के। उन्होंने मलीन वस्त्र धारण कर लिए, कोप भवन में जा बैठीं, सप्त ऋषियों एवं उनकी पत्नियों को भी भला बुरा कहा। नारद पर तो वह अत्यंत कुपित हो गईं। बोली हे पार्वती तूने ब्रह्म विद्याओं को छोड़ नारद की उस विद्या पर विश्वास कर लिया जो कर्णों को अत्यधिक प्रिय होती है। नारद तो बेमतलब की कथा और कहानी सुनाते हैं और संसार के प्राणियों को उल्टे मार्ग पर ले जाते हैं। मैना कुपित इसलिए थी कि शिव का रूप उन्हें समझ में नहीं आया पाँच सिर, आढ़ी-टेढ़ी आँखें, जटाजूट, उल्टे सीधे गण, बूढ़ा बैल, वस्त्रों की जगह बाघाम्बर, गज चर्म, अनेकों हाथ इत्यादि चारों तरफ कोलाहल मच गया, आखिरकार विष्णु ने शिव से प्रार्थना की कि हे शिव उत्तम रूप धरो, कुलीन रूप धरो, अनुकूलन करो, ऐसे बनो कि सर्व स्वीकृति मिले। शिव ने बात मानी, उत्तम रूप धरा, पंचमुखी से एक मुखी हुए, युवावस्था धारण की, गौर वर्ण की चादर ओढ़ी, मधुर और सौम्य हुए। पुनः मैना रानी ने देखा, वर भा गया, प्रफुल्लित हो उठीं। शिव और शक्ति का विवाह सम्पन्न हुआ, कुल की स्थापना हुई। योनि तंत्र में एक और विकास हुआ। **कुलज्ञान क्या है? शिव अकुल हैं, शिव का कुछ पता ठिकाना नहीं है, शिव आदि हैं परन्तु शक्ति में जब शिव प्रतिरोपित होता है अर्थात शिव और शक्ति का मिलान होता है तो कुल की स्थापना होती है और जो उत्पन्न होता है वह कुलवान होता है, वह श्रृंखला के अधीन होता है क्योंकि मैथुनी जीवन श्रृंखला आधारित है।** श्वान योनि में श्वान ही उत्पन्न होंगे, श्वान योनि में सिंह उत्पन्न नहीं होंगे। मनुष्य योनि में मनुष्य ही उत्पन्न होंगे। स्त्री के गर्भ में वनस्पति के बीज पल्लवित नहीं होंगे। माता जो रूप चाहती है वही रूप बीज को प्राप्त होगा क्योंकि इस पर शिव की मोहर है, शिव विवाह का प्रमाणीकरण है। योनि तंत्र के अंतर्गत तो मोहर भी आती है। 500 का नोट क्या है? बस एक कागज का टुकड़ा, हो सकता है उस कागज के टुकड़े से भी उच्च गुणवत्ता लिए हुए कागज के ऊपर कोई पत्रिका छपती हो परन्तु 500 रू. के नोट पर मोहर लगी हुई है, एक प्रमाणीकरण है अतः कोई उसे ठुकरा नहीं सकता, कोई उसके विनिमय शक्ति को कम नहीं आँक सकता परन्तु उससे भी उच्च गुणवत्ता लिए हुए मोहर विहीन कागज के बदले कोई विनिमय नहीं करेगा, वह मूल्यविहीन होगा, वह अप्रमाणिक होगा। संसार की यही रीति है एवं समस्त मैथुनी जीवों की यही परम्परा है, शिव का यही आदेश है, यही कुल ज्ञान है, यही शिव का योनि पूजन है, यही शिव का योनि के प्रति समर्पण है। वह अतिक्रमण बर्दाश्त नहीं करते, वह अपने विभिन्न स्वरूपों को योनि विशेष का दुरुपयोग करने से सदैव रोकते हैं। श्वान का वीर्य अर्थात श्वान का शिवत्व सिंहनी के गर्भ का अतिक्रमण नहीं कर सकता, वहाँ पर वह प्रतिष्ठित नहीं हो सकता क्योंकि सिंहनी को श्वान का रूप कदापि बर्दाश्त नहीं है इसलिए मातृ शक्ति पूजनीय है, इसलिए यह सृष्टि नाना प्रकार के विकारों से बची हुई है, नाना प्रकार की कुरचनाओं से

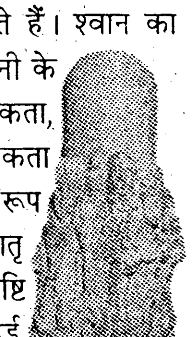

सृष्टि सुरक्षित है। मातृ शक्ति को सर्वोच्चता प्रदान की गई है, उसे चुनाव का अधिकार दिया गया है, उसे कवचित, कीलित एवं सम्पूर्ण रूप से एकाधिकार दिया गया है। नहीं तो सृष्टि संरचना इस ब्रह्माण्ड में महापाप, महाव्याभिचार और एक दुर्घटना बनकर रह जायेगी। पता नहीं किस-किस प्रकार की बेतुकी रचना हो जायेगी। जो योनि को स्वीकार्य है वही वहाँ पर पल्लवित होगा। माता का महात्म्न आदि शंकर कामाख्या में समझ गये। योनि की गूढ़ता से वे अभिभूत हो गये। संन्यासी को क्रियाकर्म में सम्मिलित होने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि वह तो कुल धर्म से ऊंपर हुआ, वह तो कुल की सृष्टि कर ही नहीं रहा है परन्तु महाज्ञान रूपी कौल ज्ञान से ऊपर वह नहीं हुआ, माता के ऋण से वह मुक्त नहीं हुआ बस आदि शंकर चल पड़े केरल की ओर क्योंकि माता से प्रण किया था कि तुझे दाह मैं ही दूंगा। **भोगी योग की तरफ आकर्षित होते हैं और योगी भोग की तरफ आकर्षित होते हैं इसलिए सकुचाते हैं एवं आकर्षण से बचने के लिए एक दूसरे से दूर भागने की कोशिश करते हैं, एक दूसरे से बचते हैं क्योंकि हृदय में कहीं न कहीं**

विपरीत के प्रति मर्म स्थल होता है। यही मर्म स्थल उन्हें जिज्ञासु बनाता है, उन्हे आलोचना करने पर मजबूर करता है। संन्यासी शंकराचार्य को देख उनके परिजन उनसे दूर भागने लगे, उनकी माता के अंतिम संस्कार में भी सम्मिलित नहीं हो रहे थे। **शंकर कुपित हो गये घर के बाहर ही माता की चिता सजाई, अपने दाहिने कंधे पर लकड़ी रगड़कर अरणी मंथन कर दिया, स्वयं के शरीर से अग्नि प्रकट की और माता को मुखाग्नि दी, संन्यासी शरीर तो तेजोमय होता ही है। इसे कहते हैं अघोर दाह, इसे कहते हैं अरणी मंथन। दूसरे ही क्षण नम्बूदरी पाद ब्राह्मणों का योनि बंधन आदि शंकर ने कर दिया। बगलास्त्र चला दिया, योनि का तात्पर्य केवल स्त्री के गुप्तांग से ही नहीं है। अध्यात्म भी योनि के अधीन है, धर्म भी योनि के अधीन है, मुख को भी योनि कहा गया है। इस शरीर में जितने भी छिद्र हैं वे सबके सब योनि तंत्र के अंतर्गत ही आते हैं।** आस्तिक नम्बूदरी-पाद नास्तिक बन गये क्योंकि शंकर ने अपनी ब्रह्म योनि से अर्थात अपने मुख से शाप का उत्पादन कर दिया था। योनि तंत्र के अंतर्गत आशीर्वाद भी उत्पादित होते हैं और श्राप भी उत्पादित हो सकते हैं। उत्पादन और योनि का चोली दामन का साथ है। **योनि मण्डल उत्पादन का भी उत्पादन करती है, योनि मण्डल की विशेषता यह है कि वह जो भी उत्पादित करेगी उस उत्पाद में उत्पादन की क्षमता होगी। यही ब्रह्म क्रिया है कि उत्पादक में उत्पादन की क्षमता हो। जो मनुष्य आज तक नहीं सीख पाया, संन्यासी आज तक नहीं सीख पाये और परम सत्य कहूं तो जीव भी आज तक नहीं सीख पाया, यह तो योनि भी नहीं सीख पायी।** योनि मण्डल को भी अभी बहुत कुछ सीखना है। यह तो गोपनीय है, यह तो परे के भी परे है, यह अधिकार तो ब्रह्मा को भी नहीं है बस यहीं पर शिव ने खेल कर दिया। एक बार राम उत्पन्न हो गये तो हो गये, एक बार महावीर बन गये तो बन गये, राम की माता भी चाहे कि पुन: राम उत्पन्न हो जायें तो सम्भव

नहीं है। जिस गर्भ से राम उत्पन्न हुए फिर उससे पुनः राम उत्पन्न नहीं हुए, जिस वंश में राम उत्पन्न हुए फिर उस वंश में राम की पुनः उत्पत्ति नहीं हुई और न होगी। **न योनि मण्डल में इतनी ताकत है, न लिंग भाग में यह क्षमता है कि वह पुनः-पुनः अपनी मर्जी से अक्षरशः समान रचना उत्पन्न कर दे, न ऋषियों में इतना तप है, न असुरों में इतना बल और न ही संन्यासी में इतना संन्यस्थ कर्म कि वह पुनः-पुनः सम्पादित कर सकें** ऐसा होता तो आदि शंकर बहुत से होते, ऐसा होता तो राम बहुत से होते परन्तु ऐसा नहीं हुआ और न होगा। गर्भ का मुख जब खुलता है अर्थात स्त्री जब रजःस्वला होती है तो गर्भ में प्रवेश हेतु भीषण मारकाट मच जाती है, अनेकों मनुष्य बस ऐसे ही प्राण छोड़ देते हैं। अनेकों नकारात्मक प्राण, लिप्त प्राण, नीच प्रवृत्ति से युक्त प्राण इत्यादि एक शरीर छोड़ते ही दूसरा शरीर धारण करने के लिए लालायित रहते हैं, उन्हें तो बस खुला हुआ योनि मुख चाहिए, उन्हें तो बस शरीर चाहिए, अतः सृष्टि में जो भी योनि मुख खुला हुआ मिलता है उसमें प्रविष्ट हो जाते हैं और पुनः शरीर धारण कर लेते हैं। ऊपर भी भारी भीड़ है, ऊपर भी लम्बी कतारें लगी हुई हैं एवं सबको जल्दी होती है शरीर प्राप्ति की। जो दुष्ट, उद्दण्ड न्यून प्रज्ञाशील और कामी होते हैं वे सबसे पहले गर्भ में जाकर बैठ जाते हैं इसलिए फालतू की संरचना ज्यादा दिखाई देती है, फालतू के मनुष्य ज्यादा होते हैं। उच्च आत्माएं, दिव्य आत्माएं, प्रज्ञावान आत्माएं या फिर संत आत्माएं आसानी से गर्भ में प्रविष्ठ नहीं होती। वे गुणवत्ता आधारित जीवन लेती हैं, वे उच्चतम श्रेणी के योनि मण्डल में ही स्थापित होती हैं यह सच्ची घटना है, वह गाँव की स्त्री थी, धर्म भीरु थी, पवित्र एवं सात्विक थी, धर्म का वास्तविक स्वरूप उसके हृदय में

प्रतिष्ठित था। विवाह के 11 वर्ष हो गये थे परन्तु गर्भ धारण नहीं हो रहा था अचानक एक दिन सिर पर बोझा लिए हुए खेत से आ रही थी तभी जोर से पानी गिरने लगा, ऋतु में अद्भुत परिवर्तन हो गया एवं वह सामने देखती है कि एक सात फिट लम्बे महात्मा घोड़े के ऊपर सवार हुए तेजी से चले आ रहे हैं, किसी को कुछ दिखाई नहीं दिया परन्तु वह साक्षात् देख रही थी। महात्मा बोले माँ मैं तेरे गर्भ में प्रतिष्ठित होने जा रहा हूँ, वह डर के मारे बेहोश हो गई कालान्तर उसने गर्भ धारण किया। बालक का जन्म हुआ, बचपन से ही वह विलक्षण था एवं सारे गाँव की मुसीबतें स्वतः ही हल कर देता था। एक दिन वह बोला मुझे उस स्थान पर ले चलो, वहाँ मेरा कमण्डल एवं चिमटा रखा हुआ है। लोग उसे घने जंगल में ले गये एवं एक नियत स्थान पर कमण्डल और चिमटा उसे मिल गया। अचानक वह घर से निकल पड़ा, गंगा के किनारे पहुँचा देवहरा बाबा मचान पर पाँव लटकाये हुए बैठे थे, नदी में बाढ़ आयी हुई थी परन्तु वह कूद पड़ा और तैरकर मचान तक पहुँचा एवं देवहरा बाबा के पाँव के अंगूठे को इस प्रकार चूसने लगा जैसे कि बालक माता के स्तन को मुख में लेता है। कुछ अद्भुत घट गया, आज वह सिद्ध गुरु है एवं उसके यहाँ भीड़ लगी रहती है, उसका अपना दरबार है। नाम कारणवश नहीं लिखा। सिद्ध गुरु अलग होते हैं, अशरीरी गुरु अलग होते हैं, शरीरी गुरु अलग होते हैं एवं सबके अपने-अपने क्षेत्र हैं। **सीपियाँ अपना योनि मुख खोलकर खड़ी हो जाती हैं, केले के वृक्ष में लगे योनि पुष्प अपना मुख खोलकर ब्रह्माण्ड की तरफ कर लेते हैं, पुष्प और योनि एक ही हैं। वनस्पतियों में पुष्प मण्डल, जीवों में योनि मण्डल के कार्य एक ही हैं। जैसे ही स्वाति नक्षत्र में वर्षा की बूंदें सीपियों के योनि मुख में पड़ती हैं, कदली वनों में ऊगे कदली पुष्पों पर पड़ती हैं, केले के पुष्प प्राकृतिक कपूर का निर्माण कर देते हैं, सीपियाँ मोती का निर्माण कर देती हैं।** ये सब शिव का वीर्य-ग्रहण कर लेती हैं और कुछ अद्भुत उत्पादित करती हैं। सति

वियोग से ग्रसित शिव ने घोर तपस्या की एवं तपस्या से जब उठे तो कुछ बूंद पसीने की छलक उठीं, शिव के पसीने को धारण किया पृथ्वी ने और उत्पत्ति हो गई मंगल ग्रह की, वे शिव पुत्र हैं। पृथ्वी ओर शिव के मिलान से मंगल की उत्पत्ति हुई। कार्तिकेय पार्वती पुत्र नहीं हैं, पार्वती के गर्भ से उत्पन्न नहीं हुए हैं अपितु वे गंगा पुत्र हैं। शिव और गंगा के मिलन से कार्तिकेय की उत्पत्ति हुई। छः कृतिकाओं ने उन्हें पाला अर्थात 6 संन्यासीनियों ने उन्हें पाला एवं पार्वती ने उन्हें पुत्र रूप में स्वीकार किया। **कार्तिकेय का संन्यास विरक्ति आधारित है। पहले मैं विवाह करूंगा-पहले मैं विवाह करूंगा कार्तिकेय और गणेश में द्वंद हो रहा था। शिव ने कहा अच्छा जो पृथ्वी का पहले चक्कर लगाकर आयेगा उसका विवाह सर्वप्रथम किया जायेगा। गणपति ने तर्क और चातुर्य का सहारा लिया, माता की परिक्रमा कर ली और कार्तिकेय जब लौटै तब तक गणपति का विवाह हो चुका था। क्रुद्ध कार्तिकेय घर-बार छोड़कर चले गये। विवाह के कारण विवाह से विरक्ति, क्रुद्धता के कारण संन्यास। दुःख के कारण, घटना के कारण, क्षोभ के कारण कुँवारापन यही कार्तिकेय की कहानी है। यही गंगा पुत्र भीष्म की भीषण प्रतिज्ञा का मूल है। ऐसा भी संसार में होता है, इस कारण भी अधिकांशतः लोग संन्यस्थ होते हैं, आजीवन कुंवारे रह जाते हैं, विलुप्त हो जाते हैं, सुषुप्त हो जाते हैं, इच्छा का दमन कर लेते हैं, अघोर दाह सम्पन्न कर लेते हैं। बार-बार अघोर दाह के बारे में कह रहा हूँ। लिंग तोड़कर रख देते हैं नागा। लिंग में छेद करके ताला लगा लेते हैं संन्यासी, लिंग को नष्ट कर देते हैं औषधियों के द्वारा संन्यासी, कहीं दूर जा छिप जाते हैं संन्यासी।** शिव और पार्वती आज भी कार्तिकेय को ढूंढते हैं, क्रौंच पर्वत जाते हैं पर कार्तिकेय नहीं मिलते। संन्यास तो विलीन हो जाने की प्रक्रिया

भी है एवं इसमें दहन तो होता ही है। 108 योगों के बाद अर्धनारीश्वर योग आता है, यह महायोग है। अर्धनारीश्वर योग ही वास्तविक संन्यास है। 108 महायोगों में योगासन, प्राणायाम, ध्यान, धारणा, समाधि, रूप परिवर्तन, बालों का पकना रोकना, अदृश्य होना, रंग परिवर्तन, वायुगमन, जल के ऊपर चलना, परकाया प्रवेश, शून्य सिद्धि, एक से अनेक रूपों में कई जगह उपस्थित होना इत्यादि जैसे विभिन्न शिव योगों में पारंगतता हासिल करनी पड़ती है और अंतिम योग है अर्धनारीश्वर योग, इस योग के पश्चात् कुछ भी नहीं बचता एवं यही वास्तविक संन्यास का द्योतक है। स्त्री और पुरुष के भेद की समाप्ति। स्त्री और पुरुष का सम्पूर्ण मिलन, आत्मा एवं परमात्मा की विलीनता अर्थात अभेदता। सम्पूर्ण

स भवेत् कालिकापुत्र इति ख्यातिमुपागतः।
योनिमूले वसेद गौरी योन्याञ्च नगनन्दिनी॥
काली तारा योनिचिह्ने कुन्तले छिन्नमस्तका।
बगलामुखी च मातङ्गी वसेत् योनि-समीपतः॥
योनिगर्त्ते महालक्ष्मीः षोडशी भुवनेश्वरी।
योनि पूजनमात्रेण शक्तिपूजा भवेद ध्रुवम्॥
पक्ष्यादि-बलिजातीनां रूधिरैश्च प्रपूजयेत।
योनि योनीति यो व्यक्ति जपकाले च साधकः॥

रेतयुक्त पुष्प अथवा स्वयम्भुकुसुम मिश्रित पुष्प कारण सहित अभिमंत्रित करके जो व्यक्ति योनिपीठ पर प्रदान करे, वह कालिका-पुत्र के समान ख्यातिलाभ करता है।

योनिमूल में, गौरी योनिदेश में पार्वती, योनिचक्र में काली एवं तारा, योनिकुण्डल में छिन्नमस्ता, योनि के निकट बगलामुखी एवं मातङ्गी, योनिगर्भ में महालक्ष्मी, षोडशी एवं भुवनेश्वरी निवास करती हैं। योनिपीठ की पूजा अनुष्ठानमात्र ही आद्याशक्ति की पूजा है। यह निश्चित सत्य है। जप काल के समय जो व्यक्ति योनि, योनि शब्द का उच्चारण करता है, आद्याशक्ति उससे प्रसन्न होती है और उसे वाञ्छित भोग एवं मुक्ति प्रदान करती है।

महाचीन क्रमोक्तेन सर्वं कार्यं जपादिकम्।
इति ते कथितं देवि योनिपूजा-विधिर्म्मया॥
सुगोप्यं यदि देवेशि तव स्नेहात् प्रकाशितम्।
कोचाख्याने च देशे च योनिगर्त्तसमीपतः॥
गङ्गायाः पश्चिमे भागे माधवी नाम विश्रुता।
गत्वा तत्र महेशानि योनिदर्शनमानसः॥
तत्र चाहर्निशं देवि योनिपूजन-तत्परः।
भिक्षाचार-प्रसङ्गेन गच्छामि च दिवानिशम्॥

महादेव ने कहा-महाचीनाचार या महाचीन तन्त्रोक्त विधानानुसार पूर्वोक्त समस्त पूजा एवं जप समस्त कार्य सम्पन्न करना चाहिए। चीनाचार कथित मत ही यत्कथित योनिपूजा पद्धति मानना चाहिए। यह साधन पद्धति अत्यन्त गोपनीय होते हुए भी केवल मात्र तुम्हारे प्रति अत्यधिक स्नेह के कारण ही मैंने उसे प्रकाशित किया है। कोच नामक देश में गङ्गा के पश्चिम भाग में योनिगर्त के समीप माधवी नामक विख्यात योनिपीठ वर्तमान है। योनिदर्शन की आकांक्षा एवं योनिपूजा की अभिलाषा से, मैं उस स्थान पर अहर्निश गमन करता हूँ। भिक्षाचार के प्रसङ्ग में मैं सर्वदा उस स्थान पर जाता हूँ। माधवी सदृश योनिपीठ पृथ्वी पर और दूसरा नहीं है। उस स्थान पर देवी के कुचद्वय कठिन एवं योनि अत्यन्त स्थूल है।

❁ ❁ ❁

अभेदता, माया का पूर्णता के साथ भेदन यही कुण्डलिनी जागरण है, यही ब्रह्म विद्या का मूल बिन्दु है, यही शिवलिङ्ग की पहचान है। इसी योग से ब्रह्म सूत्र का निर्माण होता है। **अर्धनारीश्वर शिव के अंदर स्वेच्छा जागृत हुई, एक से अनेक होने की महत्वकांक्षा जागी। शक्ति शिव के वामांग में आकर खड़ी हो गईं। शिव ने अपने दाहिने कंधे से विष्णु की उत्पत्ति कर दी एवं बायें कंधे को रगड़कर ब्रह्मा को उत्पन्न कर दिया। दोनों के मस्तक पर त्रिपुण्ड थे, यह लक्षण था कि वे शिव से उत्पन्न हुए हैं। ब्रह्मा को आज्ञा दी कि सृष्टि की रचना करो और विष्णु से कहा कि तुम सृष्टि का पालन करो। हृदय से रुद्र की उत्पत्ति कर दी और कहा कि तुम संहार करते रहना, ब्रह्मा विष्णु की सहायता करते रहना। इस प्रकार शिव आदेश दे पुनः शक्ति के साथ अर्धनारीश्वर अवस्था में लीन हो गये।** ब्रह्मा ने हाथ से जल उछाल दिया उसने पिण्डाकार स्वरूप ले लिया, लाख कोशिश कर रहे थे ब्रह्मा परन्तु वह चैतन्य ही नहीं हो रहा था, जीवन ही नहीं उत्पन्न हो रहा था। तब विष्णु को याद किया, विष्णु आकर उस अण्ड में व्याप्त हो गये, तभी तो कृष्ण ने कहा मैं सर्व व्याप्त हूँ, इस पर भी जीवन विकसित नहीं हुआ। ब्रह्मा की कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि सृष्टि की रचना कैसे करूं? तब जाकर पुनः अर्धनारीश्वर की उपासना करने लगे, शक्ति प्रसन्न हुईं और अपने अंश में से महाकाली, महालक्ष्मी एवं महासरस्वती को उत्पन्न कर दिया। अब महाविष्णु, महारुद्र एवं आदि ब्रह्मा शक्ति युक्त थे। शक्ति के सानिध्य में उन्होंने मानस के द्वारा ऋषि, प्रजापति, संध्या इत्यादियों की संरचना की। इन्होंने भी मानस एवं संकल्प के द्वारा थोड़ी बहुत वृद्धि की। **आखिरकार ब्रह्मा रोने लगे एवं उनके आसुओं से ब्रह्मराक्षस, भूत-प्रेत, पिशाच इत्यादि प्रादुर्भाव में आ गये। पुनः ब्रह्मा ने अर्धनारीश्वर की उपासना की एवं शिव से बोले कि आप स्वयं रचना करके मुझे कुछ सिखाये। शिव ने अपने ही जैसे कुछ रच दिए जो सिद्ध कहलाये, नाथ कहलाये, जो कि जन्म और मृत्यु से परे थे। ब्रह्मा बोले मुझे आप मैथुनी सृष्टि सिखाइये, ऐसे जीवों की रचना सिखाइये जो जन्म और मृत्यु के भय से ग्रसित हों। शिव ने कहा मुझसे विकृत रचनाएं नहीं होगी, ये तुम ही करो अन्यथा शक्ति की शरण में जाओ। ब्रह्मा ने आदि योनि उपासना शुरु की। शक्ति के उपासक को योनि तंत्र में निपुण होना ही पड़ेगा। माँ शब्द का तात्पर्य ही योनि उपासना के अंतर्गत आता है, माँ वही कहता है जो कि योनि से उत्पन्न होता है।** इस सृष्टि में हिंसक से हिंसक जीव या पशु भी अपने उदर भरणम् के लिए मादा का शिकार नहीं करता, भूखा शेर भी गर्भवती

हिरणी को नहीं खाता। गर्भ धारण किए हुए पशु पक्षी इत्यादि को भी उनके भक्षक जीव नहीं मारते, गर्भ का सम्मान हर जगह होता है। पशुओं में भी इतनी चेतना है कि वे पत्ते खा लेते हैं परन्तु पुष्प रूपा योनि का भक्षण नहीं करते, वे मूल को नुकसान नहीं पहुँचाते क्योंकि मूल अर्थात योनि सुरक्षित है तो पुन: भक्षण योग्य उत्पन्न कर देगी। अधिकांशत: मांसाहारी मनुष्य भी नर पशु पक्षियों को खा लेते हैं परन्तु गर्भधारण किए बिना पशु पक्षी का भक्षण पूरी तरह से वर्जित है। युद्ध में नर मरते हैं। युद्ध विभीषिका है परन्तु इनमें भी स्त्रियों का वध नहीं किया जाता। पता नहीं कितने नर पशु अनन्त काल से युद्ध की भेंट चढ़ रहे हैं परन्तु जस का तस सांख्य योग रहता है फिर से नर उत्पन्न हो जाते हैं, पुन:-पुन: चलता रहता है क्योंकि सबने एक स्वर में योनि के महाज्ञान को स्वीकार किया है। **किसी के जाने से दुनिया नहीं मिटती, किसी के जाने से कुछ नहीं होता, किसी के शरीर त्यागने से संसार को कोई फर्क नहीं पड़ता। ऐसा क्यों? इतनी निश्चितता क्यों? क्योंकि उत्पादन का केन्द्र क्रियाशील है। 50 लाख युद्ध में मर गये तो एक करोड़ तुरंत उत्पादित हो जायेंगे। जीव उत्पत्ति की व्यवस्था बड़ी विहंगम है। योनि मण्डल के पास अनेकों चमत्कारिक शक्तियाँ हैं, ये शक्तियाँ इतनी असमान्य हैं, यह महाविज्ञान इतना विलक्षण है कि इसे ब्रह्मा भी नहीं समझ पाये। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् जुड़वा बच्चों की बाढ़ लग गई। स्त्रियों में गर्भ धारण की क्षमताएँ कई सौ गुना बढ़ गई। जिन पाश्चात्य देशों में स्त्रियाँ बमुश्किल से गर्भ धारण कर पाती थीं, जिन्हें गर्भ धारण करने में विरक्ति थी अचानक उनके अंदर गर्भ धारण करने का भाव कई गुना बढ़ गया, प्रसव कालीन समस्याएं एकदम से विलुप्त हो गईं दो संतानों के बीच का अंतर न्यूनतम हो गया एवं सामाजिक मान्यताओं में आश्चर्यजनक परिवर्तन आ गये। बस समस्त स्त्रियों का एक ही लक्ष्य हो गया कि गर्भ धारण करो। जिन देशों में तीस वर्ष की उम्र में स्त्रियाँ गर्भ धारण करती थीं वहाँ पर 13-13 वर्ष की उम्र में स्त्रियों ने गर्भ धारण की प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी। विवाह जैसे सामाजिक बंधन को एक कोने में रख दिया एवं अविवाहित युवतियों ने गर्भ धारण करना प्रारम्भ कर दिया और इस प्रकार 50 लाख से लेकर कई करोड़ नरों की क्षति पांच वर्ष में पूर्ण कर दी, फिर से सांख्य योग बराबर हो गया** मजे की बात यह हुई कि लड़कों की जगह लड़कियां ज्यादा संख्या में उत्पन्न हुई जिससे कि भविष्य में संतानोत्पत्ति की प्रक्रिया और भी तीव्र हो गई। योनि मण्डल तो आवागमन का परम अलौकिक स्थान है। यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड क्रियाशील एवं आवागमन के लिए सुयोग्य ही योनि मण्डल के द्वारा हुआ है। योनि मण्डल के द्वारा कोई भी कहीं भी गमन करने में सक्षम है। जीवात्मा ब्रह्माण्ड के किसी भी कोने में योनि मण्डल के अनुसार अनुकूल शरीर धारण कर कहीं पर भी निवास कर सकती है। **ब्रह्मा ने जब शक्ति से प्रार्थना की तब शक्ति ने प्रसन्न हो अपने ही अंश से कुल ज्ञान रूपी महाज्ञान से सम्पुटित स्त्री को उत्पन्न करके ब्रह्मा को दे दिया। महाज्ञान कुछ भी नहीं सिर्फ योनि मण्डल की संरचना का ज्ञान है अत: ब्रह्मा को स्त्री के रूप में, लिंग धारिणी के रूप में एक अविष्कार आदि योनि द्वारा प्राप्त हो गया और वे ब्रह्म योनि बन बैठे।**

योनि स्तोत्रम्

कौन कहता है कि सिर्फ आत्मा अजर अमर है अपितु जीव का शरीर भी अजर अमर है, जैव कोशिकाएं भी अजर अमर हैं। अगर ऐसा न होता तो पता नहीं कितने युद्ध हुए, कितने प्रकृतिक ध्वंस हुए, कितने प्रकार के भीषण रोग आये, जैविक कोशिका रूपी जीवन को समाप्त करने हेतु प्रत्येक प्रचण्ड शक्ति ने कोशिश कर ली, न जाने कितने प्रलय आये पर जीवन को प्रमाणिक करने वाली, आत्मा को अपने अंदर व्यवस्थित करने वाली विभिन्न जैविक कोशिका रूपी संरचनाओं अर्थात पिण्डों ने हार नहीं मानी एवं हर समस्या का निराकरण करते हुए वे आज भी विभिन्न प्रकार के जीवन के रूप में विद्यमान हैं। उनमें स्व विकसित, स्व उत्पादन की अद्भुत क्षमता है और यह सफलता जीवन के प्रत्येक आयाम ने योनि मण्डल के माध्यम से सम्पन्न की है। मातृ उपासकों की विभिन्न उपासनाएं तब तक पूर्ण नहीं जब तक कि वे आदि शक्ति के विभिन्न रूपों को इस योनि स्तोत्र के माध्यम से जागृत नहीं करते। योनि मण्डल ही पहचान है देवियों की, मातृ शक्तियों की, स्त्रियों की। माता शब्द का प्रादुर्भाव मात्र योनि मण्डल के कारण ही इस सृष्टि में सम्भव हुआ है, योनि मण्डल क्रियाशील नहीं तो पुत्र कैसे उत्पन्न होगा? और पुत्र नहीं तो माता कौन कहेगा? यही सबसे गूढ़तम रहस्य है। मातृ ऋण से पुत्र की मुक्ति योनि स्तवन के द्वारा ही सम्भव है। योनि ही पुत्र का उद्गम स्थान है। अध्यात्म उच्चतम प्रज्ञा शक्ति का सूचक है।

योनिस्तोत्रम्

ध्यान

अतिसुललितगात्रां हास्यवक्त्रां त्रिनेत्रां,
जितजलदसुकान्तिं पट्टवस्त्रप्रकाशाम्।
अभयवरकराढयां रत्नभूषातिभव्यां,
सुरतरुतलपीठे रत्नसिंहासनस्थाम्॥
हरिहरविधिवन्द्यां बुद्धिशुद्धिस्वरूपां,
मदनरससमाक्तां कामिनीं कामदात्रीम्।
निखिलजनविलासोद्दामरूपां भवानीं,
कलिकलुषनिहन्त्रीं योनिरूपां भजामि॥

स्तोत्रम्

श्रीदेव्युवाच-
भगवान सर्वधर्मज्ञ कुलशास्त्रार्थपारग।
सर्वं में कथितं नाथ न त्वेकं परमेश्वर॥
श्रीयोनेः स्तवराजं हि तथा कवचमुत्तमम्।
श्रोतुमिच्छामि सर्वज्ञ यदि तेऽस्ति कृपा मयि॥
सारभूतं महादेव निगमान्र्तगतं हर।
यदि न कथ्यते देव प्राणत्यागं करोम्यहम॥
दिवानिशि महाभाग ममाश्रुः पतितं भवेत्।
अतस्तद् देवदेवेश कथ्यतां मे दयानिधे॥
श्रीमहादेव उवाच-
श्रृणु पार्वति बक्ष्यामि देहत्यागं कथं कुरु।
अत्यन्तगोपनीयं हि निगमे कथितं पुरा॥
ब्रह्मविष्णुग्रहादीनां न मया कथितं पुरा।
अकथ्यं परमेशानि इदानीं किं करोमि ते॥

तव स्नेहेन बद्धोऽहं कथयामि तव प्रिये।
मातर्देवि महाभागे यदि कस्मै प्रकाश्यते।
शपथं कुरु मे दुर्गे यदि त्वं मत्प्रिया स्मृता॥
ब्रह्मा यदि चतुर्वक्त्रैः पञ्चवक्त्रैः सदाशिवः।
वर्णितुं स्तवराजञ्च न शक्नोमि कदाचन।
सम्यग् वक्तुं न शक्नोमि संक्षेपात् कथयामि ते॥

अस्य श्रीयोनिस्तवराजस्य कुलाचार्य-ऋषिः कौलिकच्छन्दः। श्रीयोनिरूपा दशविद्यात्मिका देवता सर्वसाधने विनियोगः।

स्तोत्रम्

ॐ योनिरूपे महामाये सर्वसम्पतप्रदे शुभे।
कृपया सर्वसिद्धिं मे देहि देवि जगन्मयि॥
सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति समन्विते।
कृपया सर्वसिद्धिं मे देहि देवि जगन्मयि॥
महाघोरे महाकालि! कुलाचारप्रिसे सदा।
कृपया सर्वसिद्धिं मे देहि देवि जगन्मयि॥
घोरदंष्ट्रे चोग्रतारे सर्वशत्रुविनाशिनि!।
कृपया सर्वसिद्धिं मे देहि देवि जगन्मयि॥
योनिरूपा महाविद्ये सर्वदा मोक्षदायिनी।
कृपया सर्वसिद्धिं मे देहि देवि जगन्मयि॥
जगद्धात्रि महाविद्ये जगदुद्धारकारिणि।
कृपया सर्वसिद्धिं मे देहि देवि जगन्मयि॥
जगद्धात्रि महामाये योनिरूपे सनातनि।
कृपया सर्वसिद्धिं मे देहि देवि जगन्मयि॥
जय देवि जगन्मातः सृष्टि स्थित्यन्तकारिणी।
कृपया सर्वसिद्धिं मे देहि देवि जगन्मयि॥
सिद्धिदात्रि महामाये सर्वसिद्धिप्रदायिनि।
कृपया सर्वसिद्धिं मे देहि देवि जगन्मयि॥
महालक्ष्मि महादेवि महामोक्षप्रदायिनि।
कृपया सर्वसिद्धिं मे देहि देवि जगन्मयि॥
गौरी लक्ष्मीश्च मातङ्गी दुर्गा च नवचण्डिका।
बगलामुखी भुवनेशी भैरवी च तथा प्रिये।
छिन्नमस्ता च काली च योनिरूपा सनातनी।
कृपया सर्वसिद्धिं मे देहि देवि जगन्मयि॥
काली कपालिनी कुल्ला कुरुकुल्ला विरोधिनी।
नायिका विप्रचित्ताद्या अन्या या नायिका स्मृताः।
वसन्ति योनिमाश्रित्य ताभ्योऽपीह नमो नमः॥
अणिमाद्यष्टसिद्धिश्च वसत्यस्याः समीपतः।
नमस्तेऽस्तु नमस्तेऽस्तु योगमोक्ष-प्रदायिनि॥
सर्वशक्तिमये देवि सर्वकल्मषनाशिनि।
हे योने हर विघ्नं मे सर्वसिद्धिं प्रयच्छ में॥
आधारभूते सर्वेषां पूजकानां प्रियम्वदे।
स्वर्गपाताल वासिन्यै योनये च नमो नमः॥
विष्णुसिद्धिप्रदे देवि शिवसिद्धि प्रदायिनी।
ब्रह्मसिद्धिप्रदे देवि रामचन्द्रस्य सिद्धिये।
शक्रादीनाञ्च सर्वेषां सिद्धिदायै नमो नमः॥
इति ते कथितं देवि सर्वसिद्धि प्रदायकम्।
स्तोत्रं योनेर्म्महेशानि प्रकाशयामि ते प्रिये॥
सर्वसिद्धिप्रदं स्तोत्रं यः पठेत् कौलिकः प्रिये।
लिखित्वा पुस्तके देवि रक्तद्रव्यैश्च सुन्दरि॥
तस्यासाध्यानि कर्म्माणि वश्यादीनि कुलेश्वरि।
नास्ति नास्ति पुनर्नास्ति नास्त्येव भुवनत्रये।
यः पठेत् प्रातरुत्थाय गाणपत्यं लभेन्नरः॥
रात्रौ कान्तासमायोगे यः पठेत् साधकोत्तमः।
स्तवेनानेन संस्तुत्य साधकः किं न साधयेत्॥
सालंकृतां स्वकान्ताञ्च
लीलाहावविभूषिताम्।
रक्त वस्त्र परीधानां कृत्वा
संपूज्य साधकः।
भोजयित्वा ततो देवि स्वयं

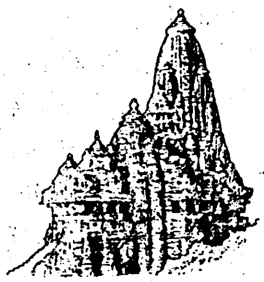

भुञ्जीत तत्परः ॥
मत्स्यमांसादिकान् भुक्त्वा क्रोड़े कृत्वा स्वयोषितम्।
रात्रौ यदि जपेन्मन्त्रं सा दुर्गा स सदाशिवः।
भवत्येव न सन्देहो मम वक्त्राद्विनिर्गतम्॥
येन दत्तं मयि स्तोत्रं स एव मद्गुरुः स्मृतेः।
तस्यैव यदि भक्तिः स्यात् स भवेज्जगदीश्वरः॥
नमोऽस्तु स्तवराजाय नमः स्तवप्रकाशिने।
यत्रास्ते स्तवराजोऽयं तत्रास्ते श्रीसदाशिवः॥
इति शक्तिकागमसर्वस्वे हरपार्वतीसंवादे
॥ श्रीयोनिस्तवराजः समाप्तः।

योनिस्तोत्रम्

प्रकारान्तरम्
शृणु देवि सुर-श्रेष्ठे सुरासुर-नमस्कृते।
इदानीं श्रोतुमिच्छामि स्तोत्रं हि सर्वदुर्लभम्।
यस्या व वोधनाद्देहे देही ब्रह्म-मयो भवेत्॥

श्री पार्वत्युवाच

शृणु देव सुरश्रेष्ठ सर्व-बीजस्य सम्मतम्।
न वक्तव्यं कदाचित्तु पाषण्डे नास्तिके नरे॥
ममैव प्राण-सर्वस्वं लतास्तोत्रं दिगम्बर।
अस्य प्रपठनाद्देव जीवन्मुक्तोऽपि जायते॥
ॐ भग-रूपा जगन्माता सृष्टि-स्थिति-लयान्विता।
दशविद्या-स्वरूपात्मा योनिर्मां पातु सर्वदा॥
कोण-त्रय-युता देवि स्तुति-निन्दा-विवर्जिता।
जगदानन्द-सम्भूता योनिर्मां पातु सर्वदा॥
रक्त रूपा जगन्माता योनिमध्ये सदा स्थिता।
ब्रह्म-विष्णु-शिव-प्राणा योनिर्मां पातु सर्वदा॥
कार्त्रिकी-कुन्तलं रूपं योन्युपरि सुशोभितम्।
भुक्ति-मुक्ति-प्रदा योनिः योनिर्मां पातु सर्वदा॥
वीर्यरूपा शैलपुत्री मध्यस्थाने विराजिता।
ब्रह्म-विष्णु-शिव श्रेष्ठा योनिर्मां पातु सर्वदा॥
योनिमध्ये महाकाली छिद्ररूपा सुशोभना।
सुखदा मदनागारा योनिर्मां पातु सर्वदा॥
काल्यादि-योगिनी-देवी योनिकोणेषु संस्थिता।
मनोहरा दुःख लभ्या योनिर्मां पातु सर्वदा॥
सदा शिवो मेरु-रूपो योनिमध्ये वसेत् सदा।
कैवल्यदा काममुक्ता योनिर्मां पातु सर्वदा॥
सर्व-देव स्तुता योनिः सर्व-देव-प्रपूजिता।
सर्व-प्रसवकर्त्रीं त्वं योनिर्मां पातु सर्वदा॥
सर्व-तीर्थ-मयी योनिः सर्व-पाप प्रणाशिनी।
सर्वगेहे स्थिता योनिः योनिर्मां पातु सर्वदा॥
मुक्तिदा धनदा देवी सुखदा कीर्तिदा तथा।
आरोग्यदा वीर-रता पञ्च-तत्त्व-युता सदा॥
योनिस्तोत्रमिदं प्रोक्तं यः पठेत् योनि-सन्निधौ।
शक्तिरूपा महादेवी तस्य गेहे सदा स्थिता॥
तीर्थं पर्यटनं नास्ति नास्ति पूजादि-तर्पणम्।
पुरश्चरण नास्त्येव तस्य मुक्तिरखण्डिता॥
केवलं मैथुनेनैव शिव-तुल्यो न संशयः।
सत्यं सत्यं पुनः सत्यं मम वाक्यं वृथा नहि॥
यदि मिथ्या मया प्रोक्ता तव हत्या-सुपातकी।
कृताञ्जलि-पुटो भूत्वा पठेत् स्तोत्रं दिगम्बर॥
सर्वतीर्थेषु यत् पुण्यं लभते च स साधकः।
काल्यादि-दश विद्याश्च गङ्गादि-तीर्थ-कोटयः।
योनि-दर्शन-मात्रेण सर्वाः साक्षान्न संशय॥
कुल-सम्भव-पूजायामादौ चान्ते पठेदिदम्।
अन्यथा पूजनाद्देव रमणं मरणं भवेत्॥
एकसन्ध्यां त्रिसंध्यां वा पठेत् स्तोत्रमनन्यधीः।
निशायां सम्मुखे-शक्त्याः स शिवो नात्र संशयः॥
॥ इति निगमकल्पद्रुमे योनि स्तोत्रं समाप्तम्॥

अघोर-दाह

आद्य और आद्या ने संकल्प शक्ति से देवताओं की सृष्टि की, गौरी नामक कन्या उत्पन्न की एवं चार सिद्ध भी उत्पन्न कर दिए। आद्य के आदेश से शिव ने गौरी से विवाह किया और पृथ्वी पर चले आये। आद्य ने कहा हे शिव ब्रह्मा मैथुनी सृष्टि का निर्माण करेंगे, इसमें कुछ विकृत रचनायें भी होंगी। विष्णु और तुम इन विकृत रचनाओं का नाश करते रहना ताकि सृष्टि का कार्य रुकने न पाये। विष्णु बार-बार अवतार लेते रहेंगे और सृष्टि में बाधक रचनाओं को नष्ट करते रहेंगे, इस कार्य में शिव भी सहयोग करते रहेंगे। गौरी के साथ शिव हिमालय पर स्थित हुए। मत्स्येन्द्रनाथ, गोरखनाथ, जालंधरनाथ और कनीफानाथ ये चारों अयोनिज हैं। योनि मार्ग से उत्पन्न नहीं हुए हैं अतः इनके ऊपर योनि मार्ग से उत्पन्न नियम लागू नहीं होते। प्रारम्भ में ये केवल वायु का भक्षण करके तपस्या करते रहते थे एवं योग मार्ग के प्रवर्तक थे अर्थात भोग से सर्वथा अनभिज्ञ। गौरी ने शिव के गले में मुण्डों की माला देखी, हैरान गौरी ने पूछा ये किसके मुण्ड हैं शिव। शिव बोले ये तुम्हारे मुण्ड हैं, गौरी सकुचा गईं। वे बोलीं क्या कारण है कि मैं सदैव मरती रहती हूँ और आप अजर अमर बने हुए हैं। हाँ जीव अजर अमर है, यह बात कृष्ण ने कही। कृष्ण ने कहा कि आत्मा अजर अमर है, शरीर नश्वर है परन्तु वास्तव में आत्मा की भी मृत्यु होती है। इसमें दो बाते हैं या तो गीता सार लिखने वालों ने कृष्ण के मर्म को नहीं समझा और व्याख्या में थोड़ी कमी रह गई या फिर कृष्ण अर्थात विष्णु, शिव गीता उच्चारित नहीं कर पाये। हो सकता है शिव ने उन्हें रोक दिया हो, यह भी हो सकता है कि कृष्ण ने यह उचित समझा हो कि शिष्य को इससे ज्यादा ज्ञान क्या दिया जाय? शिव ने जो कुछ कहा, जो कुछ रोपित किया, जो कुछ स्खलित किया उसे सिर्फ पार्वती ही ग्रहण कर पायीं, अपने गर्भ में स्थापित कर पायीं। शिव ने केवल पार्वती से कहा किसी अन्य से नहीं। सम्पूर्ण शिव पुराण, सम्पूर्ण शिव तंत्र, सम्पूर्ण महाज्ञान, सम्पूर्ण कौल विज्ञान, शिव और शक्ति के बीच का ही संवाद है। इसके विपरीत गीता ज्ञान अर्थात गोप पुराण अर्जुन और कृष्ण के बीच का संवाद है, गुरु और शिष्य के बीच का सम्बोधन है। सम्बोधनों में फर्क होता है, किसे

सम्बोधित किया जा रहा है? किसके लिए ओज स्खलित किया जा रहा है? क्या ग्रहण करने वाले में इतनी क्षमता है कि वह वीर्य को अपने अंदर रोपित कर लेगा? यह सोचने का विषय है, यह वास्तविकता है। **गीता को गोप पुराण क्यों कहा? क्योंकि शिव ने अपने दिव्य शिव धाम में गौशाला के अंदर स्वर्ण जड़ित सिंहासन लगाया, उस पर छत्र लगवाया, विश्वकर्मा ने गोशाला को सुसज्जित किया, नारद ने निमंत्रण किया गया और सबके समक्ष शिव ने विष्णु को सिंहासन पर बिठाया। स्वयं अपने हाथ से अभिषेक किया, युवराज घोषित किया, वरदान दिए और कहा कि तुम सृष्टि के एकमात्र नायक हो तुम कभी पराजित नहीं होओगे, तुम सदैव सुदर्शन रहोगे, स्वयं विष्णु की पूजा की और कहा कि जो तुम्हें पूजेगा उसी पर मैं प्रसन्न होऊंगा। जो तुम्हारा शत्रु होगा वह मेरा भी शत्रु होगा। जब-जब तुम अवतार लोगे मैं सदैव तुम्हारी सहायता करूंगा इत्यादि-इत्यादि इस प्रकार विष्णु युवराज बने परन्तु सम्राट शिव ही रहे। युवराज और सम्राट में अंतर है अतः गोशाला में युवराज बने विष्णु ने बाद में जब-जब अवतार लिए केवल गीता ही उच्चारित की परन्तु उस गीता के आगे भी कुछ और है और वह शिव का क्षेत्र है जो कि सिद्धों के पास होता है। जिसे कि नाथ जानते हैं, नाथ कहते हैं, सत्य कहते हैं कि आत्मा भी दहन की जा सकती है, ब्रह्माण्ड में विलीन किया जा सकता है, योनियाँ भी दहन की जा सकती है, भस्म की जा सकती है। जहाँ शिव का त्रिशूल गड़ गया, जहाँ नाथ ने चमीटा गड़ा दिया और धूना सुलगा दिया बस वहीं पर अलख निरंजन प्रज्वलित अब वही सृष्टि का केन्द्र, वहीं ब्रह्माण्ड का मूल स्थान। यह शक्ति केवल नाथों में है, अयोनिजों में है, स्वेच्छा धारियों में हैं, परम शिव तत्व में है। अब यहाँ पर चाहे भूत हो, पिशाच हो, देवता हों, जीवात्मा हो, देवियाँ हो, रानियाँ हो या महारानियाँ हो, तांत्रिक हो या मांत्रिक हों, धूने में सब भस्म होंगे। आत्मा भी भस्म होगी।**

नोट-: तंत्र क्षेत्र में गोप-गोपियों के गीत एवं प्रपंच नहीं अपितु शिव और काली चलते हैं। श्री अरविन्द जी।

शिव का तीसरा नेत्र जब खुलता है तो सृष्टि में सबके पद बदलते हैं, सब भस्म होते हैं तो फिर आत्मा की क्या औकात? जब धूना प्रज्वलित किया जाता है तो जिन्हें नकारात्मक शक्तियाँ लगी होती हैं जो नाना प्रकार की बाधाओं से ग्रसित होते हैं वे हाथ-पाँव जोड़ते हैं, गिड़गिड़ाते हैं, विनती करते हैं कि हमें छोड़ दो, हमें बख्श दो परन्तु सारी तथाकथित आत्माएं भस्म हो जाती हैं। यह त्रिशूल का महात्म्न है, यह अलख निरंजन की गरिमा है। **शिव प्रलय काल में समस्त जीवों को उनके बचे हुए कर्मों सहित खींच लेते हैं, भस्म कर देते हैं और सृष्टि की पुनःरचना के समय पुनः बचे हुए कर्मों के अनुसार फिर एक बार जीवन दे देते हैं**

अतः गौरी शरीर त्यागती रहती हैं और शिव के गले में रुण्ड-मुण्ड बनकर लटकती रहती हैं यही अघोर दाह है। दक्ष पुत्री का दहन हुआ उसने कहा मुझे धिक्कार है क्योंकि मैं दक्षयणि हूँ अर्थात दक्ष के अंग से उत्पन्न हुई हूँ और दक्ष ने यज्ञ प्रारम्भ किया है जबकि अलख निरंजन को ही नहीं समझ पाया ऐसी यज्ञाग्नि किस काम की, ऐसे यज्ञ विज्ञान से क्या फायदा? जो कि अलख निरंजन अर्थात कभी न बुझने वाली, आदि अनादि अग्नि को भी न समझ पाये। यज्ञ कुण्ड योनि मण्डल का ही स्वरूप है जिसके अंदर प्रज्ज्वलित अग्नि अलख निरंजन लिङ्गात्मक शिव का ही स्वरूप है। पार्वती ने स्वयं का दहन किया क्योंकि वे अंग से उत्पन्न थीं शिव किसी के अंग से उत्पन्न नहीं हैं। **भग+बाण अर्थात भगवान्। भगवान शब्द ही भग और बाण के मेल से प्रादुर्भावित हुआ है। भग का तात्पर्य है योनि का प्रथम भाग, वह भाग जिसमें कि कामदेव और रति विराजमान हैं। कामदेव को मदन कहा गया है, कामदेव के मित्र हैं आनंद एवं बाण का तात्पर्य है लिंग। दक्ष भगवान की श्रेणी में आता है, जितने भी भगवान हैं वे भग और बाण के मिलन से उत्पन्न हुए हैं यही काम विलास का रहस्य है। जीव, काम में क्यों प्रवृत्त होगा? जीव की काम के प्रति असक्ति क्यों होगी? बाण क्यों आकार लेगा? बाण क्यों स्खलित होगा? जीव को हर क्रिया के बदले कुछ चाहिए। अतः आनंद, आकर्षण, रूप सम्मोहन जैसी वृत्तियों से योनि मण्डल आच्छादित हुआ। मूल में उत्पत्ति रखी गई और उसके ऊपर आनंद, विलास, भोग इत्यादि के मधुर लेपों का अभिसिंचन किया गया तब जाकर योनि मण्डल सम्पूर्ण रूप से भोगवान बना।** भगवान और भोगवान मिलते-जुलते शब्द हैं। भगवान को ही भोग लगता है, भोग करना भगवानों को सिखाया गया क्योंकि सृष्टि का संचालन तो होना ही था। शाक्तोपासना अत्यंत गम्भीर विषय है, कामाख्या की आराधना अत्यंत ही गूढ़ है। भोग विलास का महाज्ञान पार्वती ने शिव से चाहा, शिव बोले यह अत्यंत गोपनीय ज्ञान है चलो चन्द्रद्वीप में नाव पर बैठकर मैं तुम्हें सुनाऊंगा। सिद्ध मत्स्येन्द्रनाथ नाव के नीचे छिपकर सुनने लगे पार्वती को नींद आ गई, मत्स्येन्द्रनाथ हूंकार भरते रहे। अचानक पार्वती की नींद खुली शिव ने कहा तुमने सुना वे बोलीं मैं तो सुप्त हो गई थी। हूंकार की वास्तविकता मालूम चलने पर शक्ति द्वारा मत्स्येन्द्रनाथ ने जो महाज्ञान प्राप्त किया था उसे कीलित कर दिया। **सिद्ध फिर तपस्या में बैठ गये, शक्ति का प्रथम कार्य है कुल ज्ञान के अंतर्गत जीव को प्रतिष्ठित करना। शक्ति शिव से बोलीं आप सिद्धों को विवाह की आज्ञा दो शिव ने कहा ये मात्र मेरे अंश से उत्पन्न हैं एवं इनमें काम विकार नहीं है।** शक्ति ने कहा मुझे परीक्षा लेने दो, त्रिपुर सुन्दरी ने मनमोहक रूप धारण किया

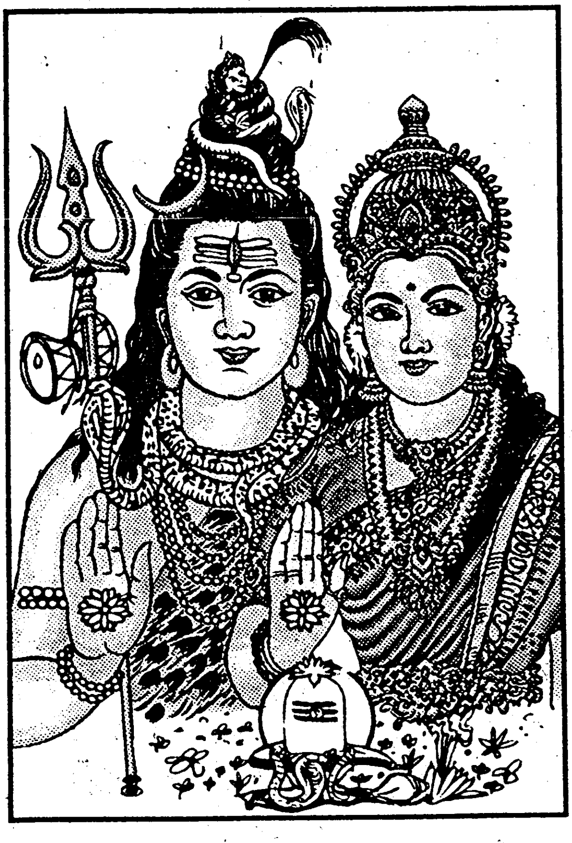

मत्स्येन्द्रनाथ के पास पहुँची वे उलझ गये मन ही मन सोचने लगे ऐसी अपूर्व सुन्दरी मिले तो आनंद के साथ जीवन व्यतीत हो। त्रिपुर सुन्दरी ने श्राप दिया जाओ 1600 रानियों के साथ कदली वन में विहार करो। जालंधर नाथ भी त्रिपुर सुन्दरी के रूप में उलझ गये सोच बैठे इस परम सुन्दरी के यहाँ तो झाड़ू लगाने का काम भी मिले तो उचित है और फल स्वरूप मैनामती रानी के यहाँ झाड़ूदार हुए। कनीफानाथ सोचने लगे इस परम सौन्दर्य के लिए तो हाथ पाँव कटा देना भी उचित है अत: हाथ पाँव भी अपनी सौतेली माँ के कारण कटवा बैठे। **गोरखनाथ पक्के निकले वे त्रिपुर सुन्दरी के सौन्दर्य को देख सोचने लगे अगर ये सुन्दरी मेरी माँ हो तो सुख के साथ स्नेह पाऊं एवं उन्होंने वर भी पाया। देवी ने पुनः कठोर परीक्षा लेने की ठानी, गोरखनाथ के मार्ग में परम नग्न सौन्दर्य लेट गया। काम विहीन, योगमार्गीय, सच्चे शिव सिद्ध ने देवी को बिल्व पत्रों से ढाँक दिया और इस प्रकार शिव के साथ-साथ शक्ति को भी बिल्व-अर्पण प्रारम्भ हो गया। देवी कीट बनकर उनकी नाभि में प्रविष्ट हो गई और पीड़ा देने लगीं। शिव आदेश पर गोरख ने देवी की मूर्ति बनाकर उनका उद्धार किया, अंत में देवी ने प्रसन्न हो गोरखनाथ को माता स्वरूप में धारण किया। वे अंत तक माया के चक्कर से बचे रहे।**

मैंने पहले कहा योगी को भोग आकर्षित करता है क्योंकि यही महामाया की लीला है, मत्स्येन्द्रनाथ ने विवाह किया, स्त्री देश जो कि काम-रूप में ही स्थित था, वहाँ जाकर बैठ गये। मत्स्येन्द्रनाथ की एक ही अभिलाषा थी कि किस प्रकार कुलज्ञान, कौल महाविज्ञान प्राप्त किया जाय? सब कुछ तो प्राप्त कर चुके थे परन्तु यह तो आद्या ने केवल स्त्री को ही प्रदान किया था। मत्स्येन्द्रनाथ के मन में कौतुक था कि महात्रिपुर सुन्दरी के पास ऐसा क्या है? जिसके लिए शिव ने समस्त देवताओं, ग्रहों, नक्षत्रों, ब्रह्मा, विष्णु एवं दैत्यों तक को पूर्ण रूप से पशु भाव ग्रहण करा के अपने परम दुर्लभ रथ का एक-एक हिस्सा बना दिया। त्रिपुर वध के लिए विष्णु बाण बन गये, ब्रह्मा सारथी बने, सूर्य और चन्द्रमा पहिया बन गये, इन्द्र रथ की पताका बन गये, ग्रह नक्षत्र भी रथ के हिस्से बन गये, ॐकार ब्रह्मा का चाबुक बन गया, वेद चार घोड़े बन गये। **शिव ने कहा पूर्ण भाव से पशुत्व स्वीकारो तब मैं तुम पर विराजमान होऊंगा और अपने त्रिशूल से त्रिपुर का वध करूंगा। त्रिपुर का अघोर दाह करूंगा। इसके बदले में मैं तुम्हें पशुत्व से मुक्ति प्रदान करूंगा यही त्रिपुर सुन्दरी रहस्य है, यही कामाख्या के शरणागत होने का गूढ़ विज्ञान है। शिव का पशु बनना पड़ेगा चाहे कोई भी हो, जैसा शिव हांके वैसा हँकना होगा एवं त्रिपुर सुन्दरी के वश में रहना होगा तभी तीनों पुर में टिक पाओगे, भोग और मोक्ष दोनों प्राप्त कर पाओगे।** कामाख्या की मूर्ति में, त्रिपुर सुन्दरी की मूर्ति में समस्त देव पशु रूप में, वाहन के रूप में

स्थित हैं। पशु भाव का तात्पर्य है आज्ञा का सम्पूर्ण पालन, सम्पूर्ण समर्पण, सम्पूर्णता के साथ विसर्जन, सम्पूर्णता के साथ स्खलन। ऐसा ही होता है, यही सृष्टि का नियम है। कुछ न कुछ छोड़कर जाना पड़ेगा, उच्छिष्ट तो करना ही पड़ेगा ये तीनों पुर की एकमात्र अधिष्ठात्री हैं त्रिपुर सुन्दरी है और इन तीनों पुरों में वास करने वाली शक्तियों को अपने शरीर का कुछ अंश चाहे वह वीर्य के रूप में हो, ओज के रूप में हो, बीज के रूप में हो, ज्ञान के रूप में हो या फिर किसी अन्य रूप में भगवति को सृष्टि संचालन के लिए अर्पित करना ही पड़ता है। स्तूपों में, अनेकों प्रकार के देवालयों में महात्माओं की अस्थियाँ, उनके शरीर के अंग इसी कारणवश रखे जाते हैं। **बुद्ध ने जब शरीर त्यागा तो बौद्धों एवं सनातन धर्म की अनेकों शाखाओं के बीच उनकी अस्थियों को लेकर लड़ाई-झगड़े शुरू हो गये। वे महापुरुष थे उनकी अस्थियों में भी कुछ है। सागर की एक बूंद में भी सागर के ही गुण होते हैं। एक बूंद भी सागर का सृजन कर सकती है, मनुष्य के छोटे से वीर्य से मनुष्य उत्पन्न हो जाता है।** बुद्ध के स्तूप के पास एक दिन बैठे हुए थे, असीम शांति का अनुभव साधना जी ने कर लिया। स्तूप भी श्रीयंत्र का प्रारूप है। अगर श्रीयंत्र को चारों तरफ से ढँक दिया जाये तो स्तूप बन जायेगा। वही चार द्वार, वही कूर्म रूपी पहाड़ी पर स्थित स्तूप, वही चारों तरफ अप्सराओं एवं युवतियों की सुन्दर मूर्तियाँ दिखाई पड़ रही थीं। स्तूप के नीचे बुद्ध के अवशेष हैं, चारों द्वारों पर सिंह के रूप में भैरव हैं। बुद्ध के पास शांति थी, बुद्ध ने शांति को आत्मसात कर लिया था अत: बुद्ध योनि से शांति ही उत्सर्जित हो रही थी। जिसके पास जो होता है वह सृजन शक्ति के द्वारा उसे उत्पादित कर देता है। न जाने कितने पशु हुए, विभिन्न प्रकार के हुए त्रिपुर सुन्दरी ने काम तंत्र के अंतर्गत उनके अंश एकत्रित कर सृष्टि की संरचना को जारी रखा। बौद्ध धर्म भी जारी है, ईसा के अवशेष भी सुरक्षित हैं ईसा द्वारा चलाया गया धर्म भी जारी है। त्रिपुर सुन्दरी की आराधना श्रीयंत्र के माध्यम से होती है जितनी भी देवी शक्तियाँ हैं वे सबकी सब श्रीयंत्र के अंदर योनि रूप में प्रतिष्ठत हैं। **कामाख्या के भैरव हैं महाकामेश्वर। श्रीयंत्र की पूजा कुछ भी नहीं बस योनि पूजन है इसलिए सृष्टि क्रम आधारित है, सृष्टि के क्रम का आधार है श्रीयंत्र। आदि गुरु शंकराचार्य जी ने चार पीठें बनाईं, उन्हें श्री संन्यास धर्म जारी रखना था, वे भी कामाख्या से सिद्धि लेकर लौटे थे अत: उन्होंने कांचीकाम कोटि पीठ बनाई, कांची का मतलब ही कंचन और काम कोटि का तात्पर्य काम के विभिन्न कोष। आज भी देश में सर्वाधिक प्रतिष्ठित पीठ काम कोटि है और वहाँ पर स्थापित किया श्रीयंत्र। यही श्रीयंत्र शंकर के ज्ञान रूपी योनि से अनंत संन्यासी विद्वान उत्पन्न कर रहा है।** अद्वैत को द्वैत में बदलता है श्रीयंत्र, अद्वैत को साकार रूप देती है श्रीयंत्र रूपा महायोनि। **योनि से उत्पन्न हुए जीव, त्रिपुर सुन्दरी के अधीनस्थ जीव सदैव गर्भ के प्रति सशंकित रहते हैं गर्भ में क्या है? भविष्य के गर्भ से क्या उत्पन्न होगा? मेरे हाथों की लकीरें क्या कहती हैं? आज का दिन कैसा बीतेगा? यह वर्ष कैसा जायेगा? वार्षिक भविष्यफल क्या है? बस इसी को सोच-सोच**

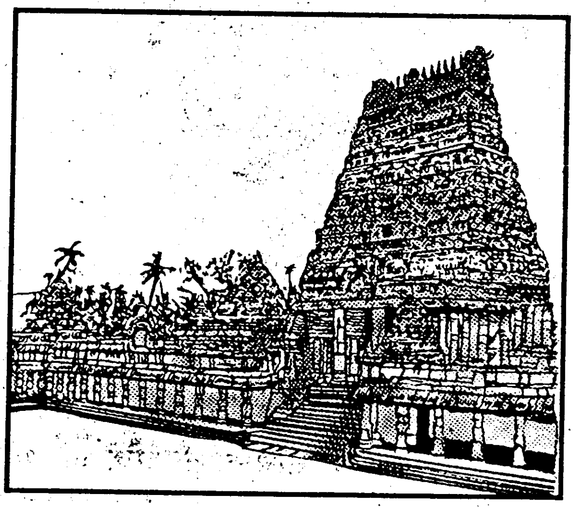

कर सब चिंतित रहते हैं। **अनंत काल से विश्व का सबसे बड़ा धोखा क्या है? विश्व का सबसे बड़ा छलाव क्या है? वह है राशिफल।** क्योंकि लोग छलने को तैयार हैं, मूर्ख बनने को तैयार हैं। अब कुछ स्त्रियों को गर्भाशय में विभिन्न बीमारियों की शिकायत हो जाती है, मिथ्या गर्भ धारण करने की समस्या हो जाती है। गर्भ में जीव की जगह पिण्ड बनने लगते हैं यह सब रोग हैं, विकार ग्रस्तता है परन्तु आजकल इस प्रकार के विकार स्त्रियों में अधिक देखे जा रहे हैं। योनि मण्डल प्रदूषित हो गये हैं। **एक बात ध्यान से समझने योग्य है कामानंद, काम विलास, सौन्दर्यात्मकता, विपरीत आकर्षण इत्यादि संतति की प्रक्रिया के उपांग हैं मुख्यांग नहीं। ये सब वृद्धि के सहायक हैं, वृद्धि आधारित हैं परन्तु वृद्धि को रोककर विकार ग्रस्त मस्तिष्क इन्हें अत्यधिक महत्व देते हैं और इस प्रकार सम्भोग से समाधि के मिथ्या प्रचार का प्रादुर्भाव होता है। नाना प्रकार के ग्रंथ, नाना प्रकार की भ्रष्ट विद्याएं, नाना प्रकार के उल्टे-सीधे तर्क दिए जाते हैं और भ्रष्ट, कामुक, लोलुप स्त्री-पुरुष इन सब चक्करों में फँसकर अध्यात्म की गलत व्याख्या कर उठते हैं।** यह ठीक उसी प्रकार से है कि सम्पूर्ण स्तोत्र पढ़ो और फलश्रुति मत पढ़ो तो लाभ शून्य होगा। यह त्रिपुर सुन्दरी के नियम के सर्वथा विरुद्ध है। वृक्ष को बीज देना ही होगा, केवल भोग करते जाओ और उत्पत्ति शून्य तो फिर कोप झेलना ही पड़ेगा इसलिए काम विकार से ग्रसित मूर्खों ने कौल विज्ञान की गलत व्याख्या की, इसे नष्ट कर दिया अपने स्वार्थ वश। **कुल शास्त्र का सीधा तात्पर्य है भारी विपत्तियाँ आयेगी, अनेक अवरोध आयेंगे, सम्पूर्ण प्रजाति पर भीषण संकट आयेंगे फिर भी हर सूरत में क्रम चलते रहना चाहिए। क्रम स्वस्थ-सबल और विकसित हो यही कुल विज्ञान का तात्पर्य है।** मैंने कहा सबसे बड़ा झूठ भविष्यफल है जिन्हें कुछ नहीं आता, त्रिपुर सुन्दरी के भैरव का नाम भी नहीं मालूम होता बेमतलब के वार्षिक फल लिखते हैं। बरसात का मौसम आया तो लिख दिया यात्रा मत करना, मार्च का महीना आया तो लिख दिया कि मानसिक तनाव होगा अब परीक्षाएं सिर पर है तो बच्चों को तनाव तो होगा ही। गर्मी का मौसम आया तो लिख दिया यात्रा कष्टप्रद रहेगी। त्यौहार एवं शादी का मौसम आया तो लिख दिया कि धन का व्यव होगा। बस मूर्ख सुबह-शाम अखबार में पढ़ते रहते हैं और मिथ्या गर्भ धारण करते रहते हैं। मुझे मालूम है यह अंक नन्हें-नन्हें मस्तिष्कों को लिए हुए अनेक लड्डू गोपाल शिष्यों को शायद समझ में न आये। दूध पीते बच्चों के लिए यह अंक नहीं लिखा गया है अत: इसे मत पढ़ना। कभी मौका मिला तो लड्डू-गोपाल अंक लिख दूंगा।

लघु प्रयोग

कामाख्या साधना ही मंत्र, तंत्र एवं यंत्र का मूल है। ब्रह्माण्ड में जितने भी प्रकार के यंत्र हैं वे सबके सब कामाख्या यंत्र से ही उद्गमित हो रहे हैं। यह यंत्र आदि शक्ति योनि का ही स्वरूप है एवं इस यंत्र को नवरात्रि के शुभ मुहूर्त या शिव रात्रि, सोमवार, सर्वार्थ सिद्धि योग, रवि पुष्य नक्षत्र इत्यादि में ब्रह्म मुहूर्त के समय स्नानादि करके ही बनाना चाहिए। नीचे वर्णित कामाख्या यंत्र को पूर्व की तरफ मुख करके भोज पत्र के ऊपर कुंकुंम, अष्टगंध, गोरोचन, रक्तचंदन इत्यादि को अच्छी तरह से घोलकर कनेर की कलम से निर्मित करना चाहिए। यंत्र बनाते समय **क्षौं ॐ ॐ वषट् ठः ठः** का मानसिक जप करते रहना चाहिए। यंत्र बनाने के पश्चात् यंत्र का पत्रिका में लिखि विधि के अनुसार षोडशोपचार पूजन करें। सिद्ध कुञ्जिका स्तोत्र एवं तांत्रोक्त देवी सूक्तम् का भी एक-एक बार पाठ कर लें इसके पश्चात् रुद्राक्ष माला से **ॐ कामाख्या नमः** या फिर **क्षौं ॐ ॐ वषट् ठः ठः** मंत्र का पाँच लाख जप कर लेने पर यंत्र जो चाहो वह प्रदान करता है। धन, ऐश्वर्य, संतान, वशीकरण, आकर्षण शक्ति, संतान प्राप्ति, कोर्ट कचहरी में सफलता, नौकरी इत्यादि सब कुछ साधक को 100 प्रतिशत प्राप्त होता है। प्रत्येक शिष्य को यह आज्ञा है कि जीवन के किसी न किसी कालखण्ड में वह कामाख्या साधना अवश्य करे। यह साधना पीढ़ी दर पीढ़ी लाभ प्रदान करती है। पाँच लाख मंत्रों के जप के पश्चात् दशांश हवन यथा शक्ति दान दक्षिणा इत्यादि भी करनी चाहिए। यह तो मूल कामाख्या यंत्र हुआ। अब कामाख्या मूल मंत्र **क्षौं ॐ ॐ वषट् ठः ठः** के अनेकों लघु मंत्र प्रयोग लिखे जा रहे हैं।

अब विधिपूर्वक देवी के निम्नलिखित मंत्र तथा यंत्र की विधिपूर्वक पूजा करें-

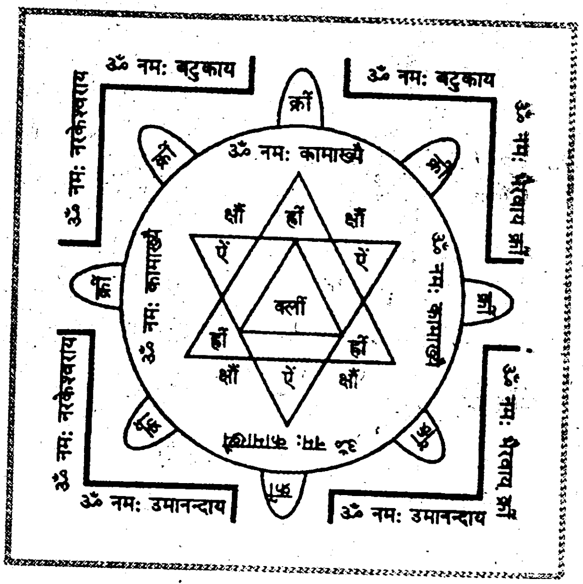

क्षौं ॐ ॐ वषट् ठः ठः

पीतवक्त्राय नमः। त्रिपुर देवताय नमः। जत पीतङ्गाय नमः। सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। उमा-महेश्वराभ्यां नमः। कामाख्या योनि मण्डलाय नमः।

इस प्रकार का यंत्र बनाए फिर उसी के नीचे मंत्र लिखें। कामाक्ष्या देवी का बीज मंत्र **क्षौं** है। इसके परमेष्ठी, ऋषि, गायत्री छन्द, त्रिपुराख्या देवता हैं।

मंत्र ॐ ॐ वषट् ठः ठः।

अब षोडशोपचार से पूजन करें। तत्पश्चात् देवी सूक्त का पाठ करें। क्योंकि इस सूक्त के पाठ से यंत्र-

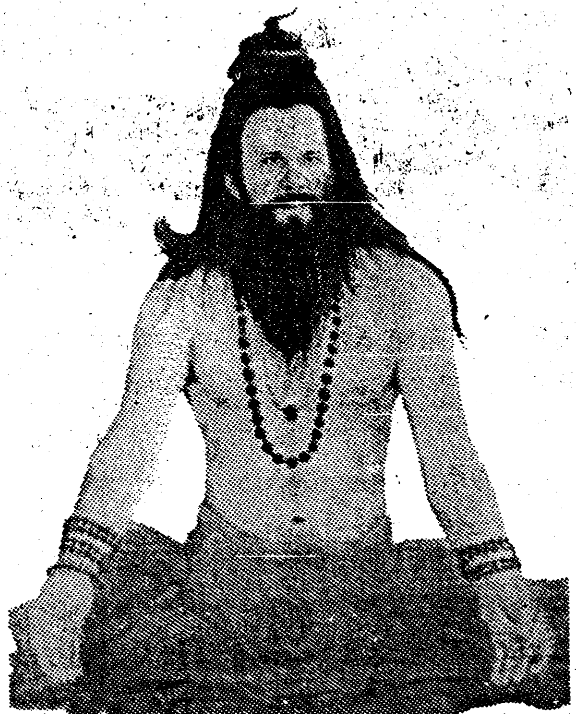

मंत्र सिद्ध होकर सजीव तथा शक्तिवान् हो जाते हैं एवं देवी की सिद्धि तो अवश्यमेव प्राप्त होती है।

सिने-संसार में प्रवेश हेतु कामाख्या यंत्र

जो लोग फिल्मी दुनिया में जाना चाहते हैं या अपनी सन्तान को इस क्षेत्र में भेजने के इच्छुक हैं और सफलता भी देखना चाहते हैं तो उन्हें इस यंत्र

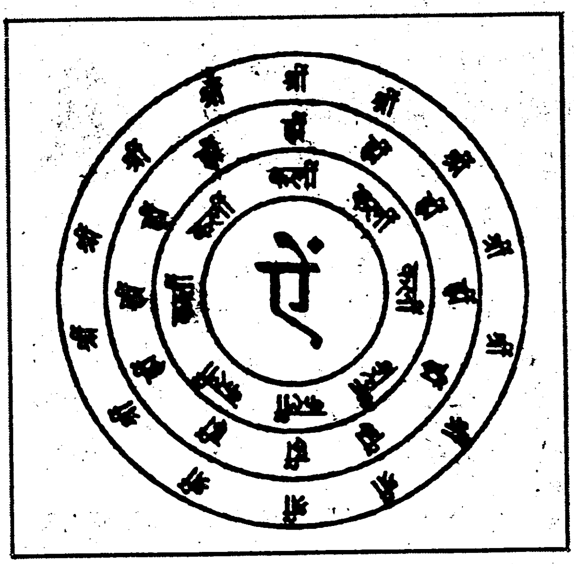

का अवश्य निर्माण करना चाहिये।

इस यंत्र को भोजपत्र पर कनेर की कलम और गोरोचन की स्याही से बनाएं तथा नवरात्रि में देवी की स्थापना कर कामाख्या यंत्र के नीचे लाल कपड़े पर इसे भी रखें और निम्न मंत्र का सम्पुट देकर दुर्गासप्तशती का पाठ करें।

विद्यावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मीवन्तं जनं कुरु।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥

यंत्र सिद्ध हो जायेगा फिर चाँदी के ताबीज में धारण कर लें। देवी की अनुकम्पा से इच्छा पूर्ण होगी।

श्री प्राप्ति तथा लक्ष्मी प्राप्ति का यंत्र

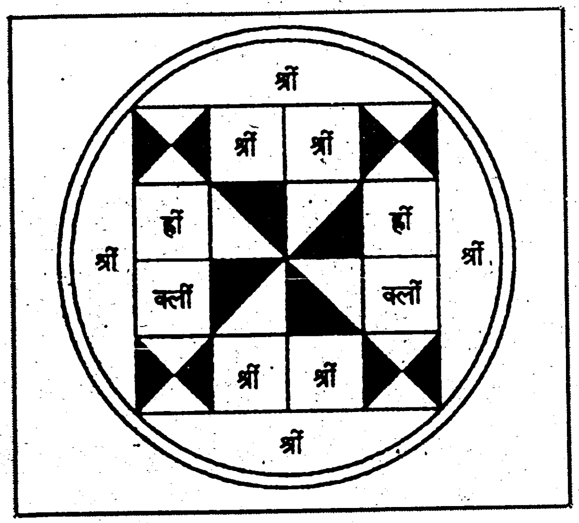

इस यंत्र को भोजपत्र पर, चाँदी पर या सोने के पत्र पर बनवाना चाहिये। भोजपत्र पर जब बने तब गोरोचन और कनेर की कलम से बने फिर चाँदी या सोने की ताबीज में भरकर किसी एक नवरात्र में पाठ, होम, जपादि कराया जाय। पुनः इसको पूजा के स्थान में रखकर प्रतिदिन पूजा कर लक्ष्मी सूक्त का पाठ एक बार अवश्य करें। अटूट सम्पत्ति आपके यहाँ रहेगी और लक्ष्मी का वास सदैव आपके घर में रहेगा। घर में सुख शांति होगी।

स्वप्न में प्रश्नोत्तर प्राप्त करने का यंत्र

सर्वप्रथम स्वर्ण पत्र पर यह एक यंत्र बनवा लेना

		२	
१	९	८	
श्रीं	७	६	४
	३		

चाहिये। पुनः प्रातः स्नान पूजादि के बाद इस यंत्र को भोजपत्र पर कुल 100 की संख्या में बनाएँ तथा इस यंत्र की पूजा करें। इसी प्रकार 21 दिन तक नित्य करें। इक्कीसवें दिन उन सबको आटे में भरकर गोली बनाएँ और एक एक कर नदी, तालाब या किसी जलाशय में **क्लीं** मंत्र का उच्चारण करते हुए छोड़ते जाएँ। यंत्र सिद्ध हो जायेगा। वशीकरण अथवा आकर्षण के लिए पुरुष इसको दाहिने हाथ में बाँधे तथा स्त्री बाएँ हाथ में बाँधे। इस यंत्र को गले में बाँधे रहने से हाथ के सभी कार्य सिद्ध होते हैं। शत्रु का नाश करना हो तो इस यंत्र को अग्नि में तपाए परन्तु तपाते समय शत्रु का नाम लेते रहना चाहिए। स्त्री के कमर में बाँधने से पुत्र की प्राप्ति एवं गर्भ की सुरक्षा होती है। इस यंत्र का रोज पूजन करने से घर में लक्ष्मी की वृद्धि व इष्ट सिद्ध होता है और व्यापार में वृद्धि होती है। रविवार के दिन इस यंत्र को सिरहाने रखकर और प्रश्न सोचकर सोया जाए तो उस प्रश्न का सही उत्तर स्वप्न में प्राप्त होता है। भागे हुए व्यक्ति के कपड़े में यंत्र रखकर ऊपर खूंटी में टाँग दिया जाए तो वह आदमी अवश्य ही घर लौट आता है।

कामाख्या वशीकरण मंत्र

ॐ यें परक्षों भयं भगवती कामाक्ष्या रेक्ष स्वाहा।

देवी की पूजा कर इस मंत्र को 20 हजार बार जपने से यह सिद्ध हो जाता है।

चन्दन व वट की जड़ को जल में पीस लें, फिर उसी के बराबर थोड़ा राख मिलाकर उपरोक्त मंत्र पढ़ते हुए जिसके मस्तक में तिलक करें, सभी उसके वश में हो जाएँ। उस तिलक वाले को जो भी देखे तो आकर्षित हो।

अंधकार की जड़ को गोरोचन में मिलाकर पानी में पीसकर उपरोक्त मंत्र पढ़ते हुए तिलक करे, तो तीनों लोक वश में हों इसमें संशय नहीं है।

ॐ नमो नमो कामरूपवासिनी सर्वलोक वश्य करी स्वाहा।

इस मंत्र से 108 बार चन्दन की लकड़ी में हवन करें तो यह सिद्ध हो जाता है फिर उस हवन की भस्म रख लें और जिसके ऊपर यह मंत्र पढ़ते हुए छोड़े वह वश में हो। जंगल में हिंसक पशु के मिल जाने पर यह प्रयोग अत्युत्तम है।

ॐ नमः ह्रीं क्लीं सर्वार्थ साधिन्यै कामाक्ष्यै स्वाहा। इस मंत्र से एक हजार कनेर पुष्प का हवन करें तो यह मंत्र सिद्ध होता है। सिद्ध होने के बाद जिससे भी आँख मिलेगी वह वश में हो जाएगा। कोर्ट, कचहरी, कार्यालयादि के अधिकारियों से काम लेने के लिए यह सफल प्रयोग है।

ॐ नमो भगवती मंगलेश्वरीसुखराजिनी सर्वधरं भातंगी कुमारीॐ लघु लघु वलं कुरु कुरु स्वाहा।

एक हजार बार जपने से यह मंत्र सिद्ध होता है।

फिर कुमारी के काते सूत में सहदेई का मूल बाँधकर स्त्री की कमर में बाँधे तो जल्दी से बढ़कर भागने योग्य हो और वश में हो।

साधना सिद्धि विज्ञान

के प्रकाशन के दो वर्ष पूर्ण होने पर पत्रिका की ओर से अनुपम भेंट पूर्व प्रकाशित सभी 24 अंकों का सेट (मूल्य रुपये 200/- मात्र)

- यह एक ऐसी पत्रिका है जो अध्यात्म के विविध पहलुओं को स्पर्श करती है।
- पत्रिका में आप पायेंगे अध्यात्म, दर्शन, पूजा पद्धति, योग, आयुर्वेद, होम्योपैथी आदि के अलावा विभिन्न प्राच्य विद्याओं पर समग्र चिंतन।
- शाश्वत् मूल्यों पर आधारित एक क्रियात्मक पत्रिका जिसमें उपलब्ध सामग्री जीवन के हर क्षण में आपके लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

आज ही अपनी प्रतियाँ सुरक्षित करा लें प्रतियाँ सीमित हैं।

नोटः 250/- रुपये (डाक खर्च सहित) ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा भेजने पर आपको सभी 24 अंकों का सेट (जिनकी कीमत 432/- रुपये है) भेज दिया जायेगा।

शिष्यों के लिए प्रकट किये गये शब्द ही कालान्तर पत्रिका के रूप में प्रकट होते हैं इससे पहले कि मेरे शब्द अनंत ब्रह्माण्ड में विलीन हो जायें, मैं यही चाहता हूँ कि कम से कम जो मुझसे दीक्षित हैं वे अपने पास पत्रिका का प्रत्येक अंक सुरक्षित रखें। आने वाले समय में जब भी आप पत्रिका पढ़ेंगे गुरु रूपी प्रकाश पुंज आपके सामने होगा।

श्री अरविन्द जी

सम्पर्क
साधना सिद्धि विज्ञान
प्लेट नं. 1, 2 मिनाल व्यू-2 पंजाबी बाग भोपाल
दूरभाष : (0755) 2576346, 5269368

कामाख्या मंत्र प्रयोग

कामाक्षा मूल मंत्र

क्षौं ॐ वषट् ठः ठः यह हवन मंत्र भी है और यही कामाक्षा देवी का जप मंत्र भी है।

शिव उवाच

देवि! त्वं भक्त सुलभे सर्व कष्ट हारिणी।
कलौ हि रोगनाशाय उपायं ब्रूहि यत्नतः॥

देव्युवाच

शृणु देव! प्रवक्ष्यामि कलौ मन्त्रौषधिः उत्तमम्।
यः करिष्यति विधानेन तस्यरोगं जायते ध्रुवं॥

भय बाधाओं से मुक्ति

जपेदशवत्थमालभ्य मन्दवारे शतं द्विजः।
भूतरोगाऽभिचारेभ्यो मुच्यते महतो भयत्॥

शनिवार के दिन जो द्विज पीपल के नीचे सौ बार उपरोक्त मंत्र का जप करें तो इससे भौतिक रोग तथा आभिचारिक महान् भय बाधाओं से शीघ्र मुक्त हो जाता है।

सब व्याधियों का नाश

गुरुच्याः पर्वविच्छिन्नाः पयोक्ता जुहुयाद् द्विजः।
एवं मृत्युञ्जयो होमः सर्वव्याधि विनाशनः॥

गुरुच को खण्ड-खण्ड करके उसे दूध में भिगोकर अग्नि में 1100 बार होम करें। इस होम को मृत्युंजय होम कहते हैं। इसमें सब प्रकार की व्याधियों को नाश करने की शक्ति होती है।

ज्वर तथा क्षय रोग

आम्रस्य जुहुयात्पत्रै पयोक्तैर्ज्वरशान्तये।
वचाभिः पयसाक्ताभिः क्षयं हुत्वा विनाशयेत्॥

ज्वर की शांति के लिए दूध में भिगोए आम्र के पत्तों से हवन करें। क्षीर (दूध) से युक्त मीठे वच का 1100 बार हवन करने से क्षय रोग दूर हो जाता है।

पुनः क्षय रोग

लता पर्वसु विच्छिद्य सोमस्य जुहुयाद्द्विजः।
सोमे सूर्येण संयुक्ते पयोक्ताः क्षय शान्तये॥

सोमलता को गाँठों पर से अलग-अलग करके उसे दूध में भिगोकर यदि ब्राह्मणों द्वारा अमावस्या को 1100 बार हवन कराया जाय तो क्षय रोग की शांति होती है।

राज्ययक्ष्मा (टी.बी.)

मधुत्रितयहोमेन राजयक्ष्मा विनश्यति।
निवेद्य भास्करायाऽत्रं पायसं होमपूर्वकम्।
राजयक्ष्माभिभूतञ्च प्राशयेच्छान्तिमाप्नुयात्॥

मधुत्रितय अर्थात् दूध-दही, घृत से 1100 बार किए हुए होम में राजयक्ष्मा (टी.बी.) को दूर करने की शक्ति है अथवा खीर का हवन करके सूर्य को अर्पण करें, फिर प्रसाद के रूप में उसका स्वयं भी भोजन करें तो राजयक्ष्मा जनित उपद्रव शांत हो जाता है।

उन्माद और प्रमेह

क्षीरवृक्षसमिद्धोमादुन्मादोऽपि विनश्यति।
औदुम्बरसमिद्धोमादतिमेहः क्षयं ब्रजेत्।
प्रमेहं शमयेत हुत्वा मधुनेक्षुरसेन वा॥

क्षीर वाले वृक्ष की समिधा से हवन करने पर उन्माद रोग शांत होता है। गूलर की समिधा से 2100 बार हवन करने पर असाध्य प्रमेह रोग भी दूर हो जाता है

अथवा मधु या इक्षु रस के हवन से रोगी पुरुष पुराने प्रमेह का प्रशमन करे।

मसूरिका (बबासीर)

मधुत्रितयहोमेन नयेच्छान्तिं मसूरिकाम्।
कपिला सर्पिणा हुत्वा नयेच्छान्ति मसूरिकाम्॥

त्रिमधु अर्थात दूध, दही, घृत के 2100 बार हवन करने से मसूरिका (बबासीर) रोग शांत हो जाता है अथवा कपिला गौ के घृत से हवन करके भी मसूरिका रोग शांत किया जा सकता है।

देवी-प्रकोप तथा बन्धन (जेल) मुक्ति हेतु

अभ्रस्तनितभूकम्पालक्ष्यादौ वनवेतसः।
सप्ताहं जुहुयादेवं राष्ट्रे राज्यं सुखी भवेत्॥
यां दिशां शतजप्तेन लोष्ठेनाऽभिप्रताडयेत्।
ततोऽग्निभारुतारिभ्यो भयं तस्य विनश्यति॥
मनसैव जपेदेनां बद्धो मुच्येत बन्धनात्॥

बिजली गिरने पर तथा भूकम्पादि के परिलक्षित (आशंका) होने पर जंगली बेंत की समिधा से सप्ताह भर 2100 बार होम करें तो राष्ट्र (राज्य) में सुख-शांति रहे। यदि कोई व्यक्ति सौ बार मंत्र पढ़कर जिस दिशा में ढेला फेंके, वहाँ अग्निभय, वातभय तथा शत्रुभय कभी नहीं होता। यदि उपरोक्त मूल मंत्र मन में जपा करें तो बन्धन (जेल) में पड़ा मनुष्य छूट जाता है। इसमें सन्देह नहीं है।

भूत-प्रेत बाधा निवारण

ॐ क्षौं क्षौं ह्रीं ह्रीं अमुकस्य प्रेतबाधां शान्तय शान्तय करु करु स्वाहा क्षौं ॐ कामाख्या! तव दासः नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं॥

पढ़कर 108 बार शमी की लकड़ी से हवन करे तो यह मंत्र सिद्ध हो जाता है।

अभिमन्त्र्य शतं भस्म न्यसेद्भूतादिशान्तये।
शिरसा धारयेद्भस्म मन्त्रयित्वा तदित्यृचा॥

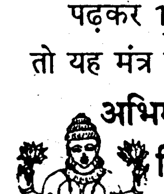

भूतादि बाधा से पीड़ित मनुष्य उपरोक्त मन्त्राभिमंत्रित भस्म यदि खा ले या सिर चढ़ा ले तो कैसी ही बाधा हो, उससे मुक्ति पाकर सुखी हो जाता है।

भूतरोगविषादिभ्यः स्पृश्ञ्जप्त्वा विमोचयेत्।
भूतादिभ्यो विमुच्येत् जलं पीत्वाऽभिमन्त्रितम्॥

उपरोक्त मंत्र जपता हुआ यदि कोई मनुष्य कुशा के स्पर्श करते हुए झाड़े तो भूत-प्रेत, विषकृत उपद्रव शांत हो जाते हैं। उपरोक्त मंत्र से अभिमंत्रित जल का पान करने से भूत-प्रेत पिशाचादि से पीड़ित मनुष्य तुरन्त मुक्त हो जाता है।

लक्ष्मी कामना

अथ पुष्टिं श्रियं लक्ष्मी पुष्पैहुत्वाऽऽप्नुयाद्द्विजः।
श्री कामो जुहुयात्पद्मै रक्तैः श्रियमवाप्नुयात्॥

अब पुष्टि श्री और लक्ष्मी देवी को पुष्पों द्वारा प्रसन्न करे। अर्थात लक्ष्मी चाहने वाले को चाहिए कि वह रक्तोत्पल द्वारा हवन करे।

हुत्वा श्रियमवाप्नोति जाती पुष्पैर्नवैः शुभैः।
शालितण्डुलहोमेन श्रियमाप्नोति पुष्कलाम्॥
समिद्भिर्बिल्ववृक्षस्य हुत्वा श्रियमवाप्नुयात्।
बिलवस्य शकलैर्हुत्वा पत्रः पुष्पैः फलैरपि॥

जूही के पुष्प (ताजे फूल) तथा साठी के चावल से होम करने पर प्रचुर लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। बिल्व की समिधा से बिल्व फल के टुकड़ों, पत्रों एवं पुष्पों को घृत में मिलाकर 2100 बार हवन करने से महालक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

श्रियमाप्नोति परमां मूलस्य शकलैरपि।
समिद्भिर्बिल्ववृक्ष्स्य पायसेन च सर्पिषा॥

बिल्व वृक्ष की जड़ के टुकड़े, खीर एवं घृत के साथ यदि होम किया जाए तो भी अनन्त लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

लक्ष्मी प्राप्ति, कन्या प्राप्ति तथा कन्या को वर प्राप्ति

शतं शतञ्च सप्ताहं हुत्वा श्रियमवाप्नुयात्।
लाजैस्त्रिमधुरोपेतैर्होमे कन्यामवाप्नुयात्।
अनेन विधिना कन्या वरमाप्नोति वाञ्छितम्॥

बिल्व वृक्ष की जड़ के टुकड़े, खीर एवं घृत के साथ 1100 बार होम किया जाय और एक सप्ताह तक सौ-सौ बार प्रतिदिन हवन करता रहे तो निश्चय ही प्रचुर लक्ष्मी प्राप्त होती है। धान का लावा, त्रिमधु के साथ मिलाकर होम करें तो दिव्य कन्या उत्पन्न होती है। पुनः इसी विधि से वर की अभिलाषा वाली कन्या होम करे तो उसे मनोभिलाषित वर प्राप्त होता है।

स्वर्ण तथा अन्न धन प्राप्ति के लिए

रक्तोत्पलशतं हुत्वा सप्ताहं हेम चाप्नुयात्।
सूर्यबिम्बे जलं हुत्वा जलस्थं हेम चाप्नुयात्।
अन्नं हुत्वाऽप्नुयादन्नं व्राहीन्व्रीहिपतिर्भवेत्॥

रक्तोत्पल के 2100 बार हवन से (सप्ताह भर में ही) कर्ता को सुवर्ण की प्राप्ति होती है। यहाँ तक कि देवी के मंत्र का उच्चारण करके सूर्य का तर्पण करने से मनुष्य जल में छिपा हुआ (पड़ा हुआ) सुवर्ण भी प्राप्त कर लेता है। अन्न का हवन करने से, अन्न तथा धान का हवन करने से धन तथा धान्य का स्वामी हो जाता है।

श्रेष्ठ पुत्र तथा आरोग्य प्राप्ति के लिए

निवेद्य भास्करायाऽन्न पायसं होमपूर्वक।
भोजयेततदृतुस्नाता पुत्रं परमवाप्नुयात्॥

खीर बनाकर 2100 बार हवन करे और उसे सूर्य भगवान् को अर्पण करके ऋतुस्नाना स्त्री को भोजन करावे तो उसको अवश्यमेव श्रेष्ठ पुत्र पैदा होता है।

इन सबके लिए संख्या, कामना तथा वस्तु के अनुसार हवन करे मंत्र केवल एक है-क्षौं ॐ ॐ ऊः ठः। इससे साधक को अवश्यमेव सिद्धि तथा मनोकामना की पूर्णता प्राप्त होती है। काम्य मंत्र में ओर भी विधि है जिसको पाठकों की जिज्ञासा की शांति के लिए नीचे दिया जा रहा है।

आयुष्य के लिए

गीली तथा अंकुरित 1100 समिधा का हवन आयुष्य-प्रदाता है।

दीर्घायु के लिए

क्षीरी वृक्षों की अग्रभाग (पुलई) युक्त समिधाओं से, मधुरत्रयों (दूध, घृत, दही) से आर्द्र समिधाओं एवं ब्रीहियों (धान्यों) से सौ आहुति देकर मनुष्य सुवर्ण एवं दीर्घायु को प्राप्त करता है।

शतायु के लिए

सुनहले रंग के पीत कमल से (कमल की कली) 108 आहुति देने पर सौ वर्ष की आयु प्राप्ति होती है।

अकाल मृत्यु के लिए

जन्म कुण्डली में अल्पायु योग तथा अकाल मृत्यु योग होने पर, दूर्वा, दुग्ध, मधु अथवा घृत से सौ-सौ आहुति देने पर एक सप्ताह में अकाल मृत्यु मिट जाती है और अल्पायु योग दीर्घायु में परिवर्तित हो जाती है।

अपमृत्यु विनाश के लिए

शमी की समिधा, अन्न, क्षीर और घृत की एक सप्ताह तक दी हुई सौ-सौ आहुतियाँ अपमृत्यु का विनाश करती हैं।

अपमृत्यु के हटाने के लिए

न्यग्रोध (वट) की समिधा से खीर का 1008 बार हवन एक सप्ताह तक नियमित करते रहने से अपमृत्यु दूर हो जाती है।

विजय प्राप्त करने के लिए

जो नवरात्र में पड़वा से अष्टमी तक देवी का मंत्र 1008 बार जपे तो काल पर भी विजय प्राप्त कर लेता है।

यम पाश से मुक्ति के लिए

यदि मौन होकर निराहार रहकर देवी का 1100 बार मंत्र जपता रहे तो तीन दिन और तीन रात में ही यम पाश से मुक्त हो जाता है।

अपमृत्यु से छूटने के लिए

जल में डूबकर 1008 बार जप करें तो अपमृत्यु से छुटकारा पा जाते हैं।

राज्य प्राप्ति के लिए

बिल्व वृक्ष के नीचे जप करने से 9 माह में राज्य तक मिल सकता है। मूल, फल तथा पत्र समेत बिल्व की आहुति राज्य प्रदान करती है।

निष्कण्टक राज्य प्राप्ति के लिए

कमल की सौ आहुति देने पर निष्कण्टक राज्य प्राप्त कराता है।

ग्रामाधीश होने के लिए

अगहनी धान तथा कोदों के चूर्ण की लपसी का 1008 बार हवन मनुष्य को ग्रामाधीश बना देता है।

युद्ध या मुकदमें में विजय के लिए

पीपल तरु की काठी का 1100 बार हवन करके युद्ध काल में मनुष्य विजयी होता है। मुकदमें में विजय प्राप्त होती है।

सर्वत्र विजय के लिए

मन्दार की समिधा से 1100 बार हवन से सर्वत्र विजय प्राप्त होती है।

वर्षा होने के लिए

बेंत की लकड़ी (समिधा) पर दूध, पत्र, पुष्प के साथ खीर की सौ आहुति देकर एक सप्ताह तक चलाया जाए तो अवश्यमेव वृष्टि होती है।

ब्रह्मतेज प्राप्ति के लिए

पलाश की समिधा से 2100 बार हवन करने पर ब्रह्मतेज प्राप्त होता है।

मनोरथों की पूर्णता के लिए

पलाश पुष्पों की 108 आहुतियाँ सब प्रकार के मनोरथों को पूर्ण करती है।

मस्तिष्क और बुद्धि बढ़ाने के लिए

दूध की आहुति मेधा तथा घृत की 1100 बार आहुति से बुद्धि बढ़ती है।

निर्मल बुद्धि पाने के लिए तथा स्मरण शक्ति बढ़ाने के लिए

ब्राह्मी बूटी के रस को देवी मंत्र से अभिमंत्रित करके यदि पान किया जाए तो निर्मल बुद्धि प्राप्त होती है और स्मरण शक्ति भी बढ़ती है।

सुन्दर वस्त्र तथा भोजन पाने के लिए

पुष्प की आहुति से, सुगन्धित तथा तन्तुओं (सूतों) की 1100 आहुति से सुन्दर-सुन्दर वस्त्र तथा भोजनादि प्राप्त होता है।

अभीष्ट जन को वश में करने के लिए

मधु के साथ लवण का 2100 बार हवन करने से अभीष्ट जन को मनुष्य अपने वश में कर लेता है।

प्रेमी को वश करने के लिए

मधु-मिश्रित बिल्वकुसुम के 108 बार हवन से प्रेमी वश में हो जाता है।

स्वास्थ्य और आयुष्य प्राप्ति के लिए

जल में खड़े होकर देवी मंत्र पढ़ते हुए जो प्रतिदिन अंजलि से अपने ऊपर अभिषेक करता है, वह बुद्धि, स्वास्थ्य एवं आयुष्य को प्राप्त करता है।

अन्य जन को प्रसन्न करने के लिए

जल में ही खड़े होकर देवी मंत्र को 2100 बार जपते हुए किसी अन्य पुरुष का ध्यान रखे तो उस पुरुष को प्रसन्नता प्राप्त होती है।

आयु की कामना के लिए

आयु की कामना वाला पुरुष किसी पवित्र स्थान में बैठकर उत्तम विधि से महीने भर प्रतिदिन एक-एक हजार मंत्र नियमित जपे।

आयु-आरोग्य-लक्ष्मी, पुत्र-कलत्र एवं यश के लिए

इसी प्रकार का जप आयु-आरोग्य-लक्ष्मी-पुत्र-कलत्र एवं यश की अभिलाषा से चार मास तक करें।

कुछ भी दुर्लभ न होने के लिए

बिना किसी आधार के एक पैर पर खड़े होकर भुजाओं को ऊपर उठाये हुए, तीन सौ मंत्रों का प्रतिदिन महीने भर जप करने से साधक की सभी कामनाएं पूरी हो जाती हैं, इस प्रकार एकादश सहस्र मंत्र जप कर

लेने पर उसकी सभी कामनाएँ पूरी हो जाती हैं-कुछ भी पाना साधक के लिए दुर्लभ नहीं रह जाता।

अनहोनी को होनी में बदलने के लिए

यदि प्राण-अपान वायु को रोक कर तीन सौ मंत्रों का एक मास तक जप किया जाए तो जप करने वाले की जो इच्छा हो, शीघ्र पूर्ण हो जाती है। अपनी इच्छानुसार रूप बदल सकता है, दूसरे को बुला सकता है, अनहोनी को होनी में बदल सकता है।

अभिलाषा पूर्ति के लिए

कौशिक (विश्वामित्र) मुनि का कथन है कि एक पैर पर खड़े हो उर्ध्वबाहु होकर श्वास रोकते हुए प्रतिदिन सौ मंत्रों के क्रम से एक मास पर्यन्त जप करें तो उसकी सारी अभिलाषाएँ पूरी हो जाती है।

मनोकामना पूर्ति के लिए

उपरोक्त प्रकार से तेरह सौ मंत्रों का प्रतिदिन मास पर्यन्त जप करने से भी साधक अपनी सारी मनोकामनाएँ पूर्ण कर लेता है।

ऋषि होने के लिए

यदि एक पैर से बिना किसी आधार के भुजाएँ उठाकर खड़े हों और एक वर्ष तक जप करें तथा रात में केवल खीर खाए तो वह पुरुष ऋषि हो जाता है।

शक्तोपासना दिवस

त्रिपुर सुन्दरी अनुष्ठान

11 मार्च 2003

प्रत्येक माह की 11 तारीख को शक्ति के उपासकों के लिए शक्ति के विभिन्न स्वरूपों का विस्तृत रूप से तांत्रोक्त एवं वेदोक्त विधि द्वारा वृहद् पूजन एवं अनुष्ठानों का सानिध्य एवं प्रत्यक्ष लाभ।

इस दिन पूर्ण विधि विधान के साथ महात्रिपुर सुन्दरी, महालक्ष्मी, महाकाली, तारा, महासरस्वती, महाकमला, पराशाम्भवी, कालकर्षिणी, पराप्रसादाम्बा, वाराही, बाला परमेश्वरी, मातंगेश्वरी, सारिकाम्बा, दुर्गा, चण्डिका इत्यादि अनेकों शक्तियों में से किसी एक का पूर्ण प्रामाणिक अनुष्ठान सम्पन्न किया जाता है। भारतवर्ष में लुप्त हो रही गोपनीय अनुष्ठान प्रणालियों को पुनः जाग्रत करने का महाअभियान। अब इस तरह के अनुष्ठान बस कुछ गिनी चुनी जगहों पर ही सम्पन्न हो रहे हैं।

उपरोक्त शिविर में आवरण पूजन, हवन स्वयं गुरुदेव अरविन्द जी एवं माता श्री साधना जी सम्पन्न करायेंगे। समस्त बाधा, ऋण मुक्ति निवारणार्थ, धन, ऐश्वर्य, लक्ष्मी प्राप्तार्थ इस दिन सम्पन्न होने वाला यह आयोजन शिष्यों के लिए अत्यंत ही महत्वपूर्ण है।

अनुष्ठान में साधकों/शिष्यों को महालक्ष्मी दीक्षा, ऋण मुक्ति दीक्षा सहित अनेक दुर्लभ दीक्षायें विशेष शक्तिपात के माध्यम से प्रदान की जायेंगी।

अनुष्ठान में उपस्थित सभी साधकों/शिष्यों के पास पीताम्बर अवश्य होना चाहिए।

शिविर स्थल
1,2 मिनाल व्यू-2 पंजाबी बाग भोपाल

विस्तृत जानकारी के लिए
दूरभाष क्रं. 2576346, 5269368, 5271116,
पर सम्पर्क किया जा सकता है।

श्री सद्गुरु-संस्मरणम्

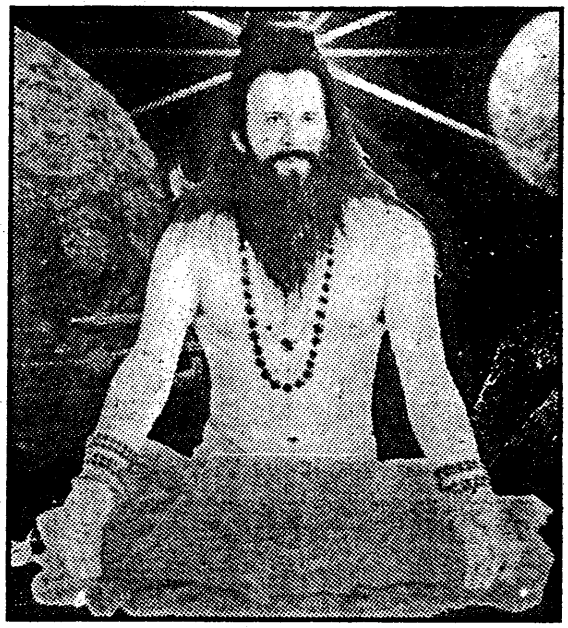

प्रथम बार जब मैं अपने गुरुजी से मिला तो मैंने देखा कि एक सुदर्शन व्यक्तित्व, अति सुन्दर, सीधे-साधे, सौम्य और शालीन मंच पर विराजमान हैं एवं बगल में शक्ति स्वरूपा गुरुमाता भी विराजमान हैं। वे दोनों अति सुन्दर गौरवर्ण लिए हुए हैं, स्वस्थ ऊंचे पूरे, उच्च कुल के, अति शिष्ट ज्योति पुंज दिखाई पड़ रहे थे। रूप देखकर ही मन प्रसन्न हो गया, भरा पूरा घर था। बच्चे थे, नाते रिश्तेदार भी थे, घर गृहस्थी भी थी। मेरी खुश किस्मती है, मेरा सौभाग्य रहा कि विकार शून्य गुरु से दीक्षित हुआ। आढ़े-टेढ़े, व्यर्थ की बकवास करने वाले, स्त्री शून्य अर्थात शक्ति शून्य, दाढ़ी बढ़ाये हुए, मुख पर विषाद लिए हुए किसी लाल, काले, पीले, हरे, नीले वस्त्र धारण बाबा महाराज गुरु के रूप में गले नहीं बंधे। आज इस महत्व को सबसे दुर्लभ मानता हूँ उनकी खासियत थी कि वे मंच पर सपत्नी विराजमान होते थे अर्थात साक्षात् शक्ति सम्पन्न थे। मेरा प्रथम सिद्धांत है सौन्दर्य (चाहे आपको अच्छा लगे या बुरा) द्वितीय शक्ति सम्पन्न क्योंकि यही सृष्टि के अनुरूप है। सौन्दर्य और शक्ति ही शिव के लक्षण हैं। एक झटके में मैं गुरुजी को समर्पित हो गया। एक मजेदार बात बताता हूँ, बहुत पहले एक महाराज आये। मेरी पत्नी ने कहा वे सिद्ध हैं, ऐसा वैसा, खैर किसी कारणवश उनसे मुलाकात हो गई वे बोले तुम धर्म के क्षेत्र में आओ मैं तुम्हें ज्ञान, दीक्षा इत्यादि दूंगा। दाढ़ी बड़ी हुई थी, भगवा पहन रखा था आश्रम इत्यादि भी था। मैंने एक चीज पूछी क्या आप संन्यासी हैं? क्या आप शादी शुदा हैं? उन्होंने कहा ब्रह्मचारी तो नहीं हूँ पर शादी शुदा भी नहीं हूँ। मैंने हाथ जोड़े, वैसे भी मुझे धर्म क्षेत्र में उतरने की रूचि नहीं थी बस गुरुजी ने खींच लिया, आज भी उन्हीं की प्रेरणा स्वरूप कार्य कर रहा हूँ। वर्ना पत्रिका उठाकर फेंक देता, अपनी स्वतंत्रता कभी नहीं खोता। गुरुजी को देखते ही मैंने कहा ये बहुत सुन्दर हैं इसलिए इनसे दीक्षा लूंगा, मुझे इनके ताम-झाम में कोई रूचि नहीं है, न तंत्र में रूचि है, न मंत्र में रूचि है, न साधना में रूचि, न सिद्धि में रूचि और न ही कि ज्ञान विज्ञान में। मुझे ये अच्छे लगे, मेरा इनसे जन्म-जन्म का नाता है अत: ये मेरे गुरु बस इसी भाव सी दीक्षा ली और उन्होंने भी इसी भाव से दी। न पहले कभी धर्म की खोज अध्यात्म की

जिह्वा योनिमुखं योनिः योनिः श्रोत्रे च चक्षुषि।
सर्वत्रापि महेशानि योनिचक्रं विभावयेत्॥
योनिं विना महेशानि सर्वपूजा वृथा भवेत्।
तथा मन्त्राः न सिद्ध्यन्ति सत्यं सत्यं वदाम्यहम्॥
सर्वां पूजां परित्यज्य योनिपूजां समाचरेत्।
गुरुं विना महेशानि मद्भक्तो नापि सिद्ध्यते॥

॥ ॐ योनिपीठाय नमः॥

साधक अपनी जिह्वा, मुख चक्षु एवं कान प्रभृति समस्त इन्द्रियों द्वारा योनि का ध्यान करेगा। हे पार्वती! योनिपूजा के अतिरिक्त अन्य सभी प्रकार की पूजा निष्फल है। मैं सत्य वचन कहता हूँ कि योनिपूजा से भिन्न मंत्र भी सिद्ध नहीं होता। अतएव अन्य समस्त पूजा का परित्याग करके योनिपूजा (शक्ति पूजा) सम्पन्न करना चाहिए। हे पार्वति! इस साधना में गुरुपदेश के बिना मेरा भक्त भी सिद्धि लाभ नहीं कर सकता।

॥ ॐ योनिपीठाय नमः॥

खोज में कोई दिलचस्पी थी न आज है। शाश्वत् जीवन जीना चाहिए, युद्ध करना चाहिए। एक अंतरंग, गुरु और शिष्य के बीच हुए संवाद को उद्घाटित कर रहा हूँ। **एक दिन गुरुजी ने कहा तुम लोग धर्म क्षेत्र में काम करो, ब्रह्मचर्य लो, संन्यासी बनो, वे टटोल रहे थे। मैंने कहा ये सब प्रपंच अपने बस के नहीं हैं, धर्म क्षेत्र में आने की बिल्कुल रुचि नहीं है। आप ही रखो ये सब नियम धर्म। गृहस्थ हैं गृहस्थ ही रहेंगे। गृहस्थ के घर पैदा हुए हैं आपके पास गृहस्थ के रूप में ही आये हैं। अतः शालीन गृहस्थ ही रहेंगे। मेरी गुरु माताजी ने भी इसका अनुमोदन करा। वे फालतू के ढकोसलों से बहुत चिढ़ती हैं।** मुझे भी वही शिष्य अच्छे लगते हैं जो सपत्नी दीक्षा लेते हैं, विकार ग्रस्त नहीं होते। शिष्यों की उम्र विवाह योग्य होने पर उन्हें विवाह करने की ही दीक्षा दी जाती है। ब्रह्मचर्य अंदर से आना चाहिए, स्वस्थ वैवाहिक जीवन हो तो ब्रह्मचर्य स्वतः कालान्तर जन्म ले लेता है, नाटक नहीं करना चाहिए। भारत वर्ष में वैवाहिक जीवन का निर्वाह करते हुए अधिकांशतः स्त्री पुरुष अपने जीवन की मध्य अवस्था के बाद प्रत्येक घर में स्वतः ब्रह्मचर्य धारण कर लेते हैं। यहाँ की भूमि ही ऐसी है, उसी में पवित्रता है। भारत के लोग आज भी काम विकार से निम्नतम ग्रसित हैं, वे अत्यंत सीधे-साधे और सरल हैं इसमें संशय नहीं है। **मेरी व्यक्तिगत राय है कि विवाह शीघ्र होना चाहिए, तीस-तीस वर्ष की उम्र में विवाह करना विकृति है। समाज इससे प्रदूषित होता है। 18-20 वर्ष में शादी लड़के, लड़की की हो जानी चाहिए जिससे कि तीस वर्ष तक वह संतान उत्पत्ति एवं अन्य कर्मों से निवृत्त हो सके और आगे की आध्यात्मिक यात्रा में विकार ग्रस्तता नहीं आये।** पाश्चात्य शैली में पहले पढ़ाई फिर कैरियर फिर विवाह जैसी मूर्खतापूर्ण व्यवस्थता है इस सोच से सामाजिक असंतुलन बढ़ गया है। एक तरफ मस्तिष्क को मथने वाले घटिया साहित्य का उत्पादन, प्रचार-प्रसार माध्यमों के द्वारा बच्चों के मस्तिष्क को योजना बद्ध तरीके से प्रदूषित करने का षड्यंत्र और दूसरी तरफ विवाह में देरी इसलिए स्थितियाँ विस्फोटक हो गई हैं। **सबसे बड़ी दिक्कत मनुष्य एवं मनुष्य की क्रियाओं का महिमा मण्डन है। यह अप्राकृतिक गर्भावस्था का प्रतीक है, बेमतलब में महानायक बनाये जाते हैं, बेमतलब में महापुरुष बनाये जाते हैं, बेमतलब में हाड़मांस के पुतले प्रतिष्ठित किये जाते हैं। यही सबसे बड़ा दोष है, यह अप्राकृतिक निर्माण है। जीवन की कुछ आदी एवं नैसर्गिक क्रियायें और दायित्व हैं उन्हें जबरन में मिर्च मसाला लगाकर स्वादिष्ट बनाने के विधान के कारण, उसे व्यर्थ में गोपनीय दुर्लभ और अलौकिक बताने के कारण**

सत्यानाश हो रहा है। गर्भ धारण करने से, संतानोत्पत्ति करने से न किसी का सौन्दर्य जाता है और वैवाहिक जीवन जीने से न किसी पुरुष का पुरुषार्थ नष्ट होता है और न ही तेज। कुछ पोंगा पण्डितों ने, कुछ नपुंसकों ने और कुछ पाश्चात्य सोच की कुत्सित महिलाओ ने तथाकथित सौन्दर्य और पुरुषार्थ की व्याख्या कर दी है। कितने कल्प आये कितने कल्प गये, एक कोशिका से जीवन प्रारम्भ होकर आज भी मौजूद है। जीवन की सबसे बड़ी शक्ति है स्व उत्पादन जो उसे विरासत में मिली है। अत: इस शक्ति को फालतू नजरिये से देखने में किसी का भी भला नहीं होने वाला है। आदि शंकर मणि कर्णिका घाट पर से गुजर रहे थे एक युवती अपने पति के शव के सामने विलाप कर रही थी आदि शंकर ने कहा रास्ता छोड़ो माता विलाप करने से क्या होगा? मुझे जाना है पर वह युवती नहीं हटी। शंकर ने पुन: कहा, इस पर युवती बोली हे यतिराज आप शव से क्यों नहीं कह देते कि वह उठकर अलग हो जायें आप तो कहते हैं कि शक्ति शिव के अधीन है अत: शक्ति के बिना यह शव उठ क्यों नहीं जाता? शंकर की आँखें खुल गईं वे मातृ स्तुति कर उठे। आधार-भूता शक्ति ही है, बीज क्या कर लेगा? जब भूमि ही नहीं होगी। हो सकता है कुछ लोगों को गुरु की जरूरत न हो, कुछ लोग गुरु मुख अर्थात गुरु योनि के महत्व को न समझते हों परन्तु ऐसा नहीं है कि अन्यों को गुरु की जरूरत नहीं है। गुरु रूपी भूमि की जरूरत बहुतों को हो सकती है। नदी में ठूंठ बह रहा है हो सकता है किसी को उसकी जरूरत न हो परन्तु नाविक को एक छोटी सी लकड़ी मिल जाय पतवार के रूप में तो वह अपनी नाव को खेकर किनारे लगा लेगा। ***गुरुजी में एक विशेषता थी कि वे नास्तिक को आस्तिक बना देते थे। उनके सानिध्य में आते ही घोर से घोर नास्तिक, तथाकथित विज्ञानवादी, तर्कवादी स्वत: ही अध्यात्म का स्फुरण अपने अंदर महसूस करने लगते थे। यही विलक्षण विशेषता है। यही स्थिति इंगित करती है कि वे कामाख्या तंत्र को आत्मसात कर चुके हैं, वे शक्ति सम्पन्न हैं, अपने जीवनकाल में वे प्रबल उत्पादक रहे हैं न जाने कितनी पुस्तकों के रचयिता, पत्रिका के कितने अंकों का सम्पादन, असंख्य दीक्षाएं, अनगिनत प्रवचन, अनगिनत समस्या निवारण, अनगिनत लोगों में चेतना का उदय कर दिया और भी न जाने क्या-क्या।*** *उत्पादन की क्रिया समग्र है, यह पुरुषार्थ का प्रतीक है, यही पूर्ण पुरुष की निशानी है, यही कामाख्या दर्शन है। अध्यात्म मनोविज्ञान नहीं है। मनु, मनुष्य के प्रथम पूर्वज हैं एवं उनका ज्ञान ही मनोविज्ञान कहलाता है। मनु को सनातन धर्म में भगवान माना गया है और उनका दर्शन, उनके उपदेश इत्यादि ही कालान्तर मनोविज्ञान के रूप में परिलक्षित हुए हैं परन्तु अध्यात्म मनोविज्ञान से ऊपर है। अध्यात्म*

कालीचजगतां माता सर्वशास्त्र-विनिश्चिता।
कालिका-स्मृतिमात्रेण सर्वपापैः प्रमुच्यते॥
सत्यं सत्यं पुनः सत्यं सत्यमेव सुनिश्चितम्।
जप्त्वा महामनुं काल्याः कालीपुत्रो न संशयः॥
सा एव त्रिपुरा काली षोडशी भुवनेश्वरी।
छिन्ना तारा महालक्ष्मी मातङ्गी कमलात्मिका॥
सुन्दरी भैरवी विद्या प्रकारान्यापि विद्यते।
दक्षिणा तारिणी सिद्धि नैव चीनक्रमं विना॥

काली जगत की माता हैं। यह सभी शास्त्रों का सुनिश्चत सिद्धांत है। काली का स्मरण करने मात्र से सभी पापों से मुक्ति हो जाती है। यह ध्रुवसत्य है। पुन: सत्य एवं सुनिश्चित सत्य है। कालीमंत्र का जाप करने से साधक कालिकापुत्रतुल्य हो जाता है इसमें संदेह नहीं।

जो काली है, वही त्रिपुरा, षोडशी, भुवनेश्वरी, तारा, महालक्ष्मी (महामाया), मातङ्गी, कमला, सुन्दरी, भैरवी प्रभूति विभिन्न विद्यारूपों में प्रकाशित हैं। चीनाचारक्रमोक्त पद्धति से भिन्न दक्षिणाकालिका भी तारा सिद्धिदायिनी नहीं होती।

तस्या पूजनमात्रेण शिवोहहं श्रृणु पार्व्वति।
राधायोनिं पूजयित्वा कृष्णः कृष्णात्वभागतः॥
श्रीरामोजानकीनाथः सीतायोनि-प्रपूजकः।
रावणं सकुलं हत्वा पुनरागत्य सुन्दरि॥
अयोध्यां नगरीं रम्यां वसतिं कृतवान् स्वयम्।
समुद्रस्य महाविष्णु र्वेलायां वटमूलतः॥

हे पार्वति! इस योनिपीठ पर देवी की पूजा करने से मैंने शिवत्व लाभ किया है। राधा की योनिपूजा करके श्रीकृष्ण ने कृष्णत्व प्राप्त किया। सीता की योनि पूजा के प्रभाव से श्रीराम ने रावण का समूल विनाश पुनः रमणीक अयोध्या नगरी में लौटकर वास किया। समुद्रयोनि का आश्रय लेकर महाविष्णु (जगन्नाथ) ने बेलाभूमि से वटमूल का सहारा लेकर अवस्थान किया था।

शारीरिक क्रियाओं के अधीन नहीं है, अध्यात्म राशिगत भी नहीं है। किसी ने कहा मेरी आध्यात्मिक उन्नति नहीं हो रही, अध्यात्म धन नहीं है अतः इसमें उन्नति अवनति जैसी स्थितियाँ नहीं है यह ऊर्ध्वगामी प्रक्रिया है संसार में आगे बढ़ने की क्रिया है अतः इसमें गिरना-चढ़ना, उन्नति, अवनति, उत्थान ,पतन लगा ही रहेगा। ऊर्ध्वगामी होने की स्थिति में ये सब नियम लागू नहीं होते। ***अध्यात्म का उत्पादकता से कुछ भी लेना देना नहीं है। यह तो चेतना का क्षेत्र है, प्रज्ञा का क्षेत्र है अतः अध्यात्म का उत्पादन नहीं हो सकता। हाँ अध्यात्म को आकर्षित करने वाले धर्म के अंगों का उत्पादन सम्भव है,*** *अध्यात्म की तरफ मुड़ने वाली धर्म भावनाओं का उत्पादन सम्भव है। शिव उत्पादन से परे हैं, शिवत्व उत्पादन से परे हैं वह समय-समय पर उचित योनि में पल्लवित हो एक विशेष रूप में जनमानस के सामने प्रदर्शित होता है। अतः व्यर्थ के महिमा मण्डन को अध्यात्म की जरूरत नहीं है।* ***मैथुनी सृष्टि में अंशात्मक व्यवहार है एवं कोई किसी को सम्पूर्णता के साथ नहीं देता। पुत्री का विवाह हो गया फिर भी माता-पिता उस का पुत्री रूपांश सदैव अपने पास संजोकर रखते हैं। पुत्री भी किसी की पत्नी सम्पूर्ण रूप में नहीं बन पाती, कुछ अंश वह अपने माता-पिता के लिए सुरक्षित रखती है, कुछ अंश उसकी संतानों के लिए सुरक्षित रहता है, कुछ अंश किसी और के लिए बस यही जद्दोजहद का कारण है, यही संसार में झगड़े का मूल है, यही द्वंद की स्थिति है। यह योनि तंत्र का दोष है।*** *योनि मार्ग से उत्पन्न जीव टुकड़ों और हिस्सों में बंटा हुआ होता है। जब पार्वती शिव की सम्पूर्ण रूप से नहीं हो पायीं तभी तो दक्ष के घर पुनः गई और दहन हुआ। दक्ष शिव को सम्पूर्णता से नहीं अपना पाये तभी तो दक्ष यज्ञ भंग हुआ, पार्वती गणेश को भी यह नहीं सिखा पायीं तभी तो मुण्ड मर्दन हुआ इसलिए योनि मार्ग से उत्पन्न जीव अपूर्ण हैं नहीं तो वह शिव नहीं हो जाता। बंधन से ही जन्म होता है और बंधन में ही मृत्यु।* ***जो जीव योनि मार्ग से आया है वह तो कई अंशों को जोड़कर बना है उसमें सूर्य का तेज भी है, चंद्रमा की शीतलता भी, ग्रह नक्षत्रों का प्रकाश भी, शिवत्व भी, विष्णु तत्व भी, अग्नितत्व भी और भी न जाने क्या-क्या। अतः वह तो एक मिश्रण है जिसमें अनेकों की भागीदारी है, अनेकों का सहयोग है, अनेकों का ऋण है, अनेकों का अंश है अतः उस पर सभी अधिकार जमायेंगे।*** *सभी उसे अपना-अपना कहेंगे। अतः वह सर्व प्रमाणिक है इसलिए एकात्मक, एक ईश्वरवादी, एक मार्गीय होने से काम नहीं चलेगा यही वास्तविक सोच है।* ***गुरुजी ने कहा काम करो, काम मत करो यही इस पत्रिका का मूल शब्द है इसी के साथ लेखन समाप्त।*** *वास्तव में इस अंक में श्रीयंत्र का वृहद पूजन लिखना था पर जान बूझकर नहीं लिखा उसका दुरुपयोग होगा, कभी नहीं लिखूंगा।*

ज्योतिष

आत्मघात योग

लग्नेश तथा अष्टमेश कमजोर हों तथा लग्नेश व अष्टमेश मंगल एवं षष्ठेश से सम्बन्ध रखते हों तो आत्मघात योग होता है। जिस व्यक्ति की जन्म कुण्डली में आत्मघात योग होता है उसकी मृत्यु स्वयं के प्रयत्नों से ही होती है।

लग्नेश कमजोर होने से जहाँ बुद्धि कुण्ठित होगी, वहाँ अष्टमेश कमजोर होने से उसकी आयु भी क्षीण होगी। ऐसी स्थिति में जब ये दोनों ग्रह नैसर्गिक मृत्युकारक ग्रह मंगल तथा छठे भाव के अधिपति से सम्बन्ध स्थापित करेंगे तो यह स्वाभाविक ही है कि व्यक्ति अपनी मृत्यु अपने ही हाथों करेगा।

पति त्याग योग

जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में सप्तम भाव, सप्तमेश तथा बृहस्पति इन तीनों पर सूर्य, शनि एवं राहु की दृष्टि हो तो पति त्याग योग बनता है। जिस जन्म कुण्डली में ऐसा योग होता है, उस स्त्री को उसका पति या तो त्याग देता है अथवा तलाक दे देता है।

यह योग केवल स्त्री की कुण्डली में ही देखा जाना चाहिए। स्त्री की कुण्डली में बृहस्पति पति भाव का कारक ग्रह होता है तथा सप्तम भाव पति स्थान एवं सप्तमेश पति का प्रतिनिधि ग्रह होता है।

इन तीनों ही अंगों पर जब सूर्य, शनि एवं राहु की दृष्टि हो तो स्वाभाविक ही है कि ये पृथकतावादी ग्रह उस स्त्री को पति से पृथक करने का प्रयत्न करेंगे।

पत्नी त्याग योग

पुरुष कुण्डली में सप्तम भाव में राहु तथा सूर्य हो एवं उस पर शनि की दृष्टि हो तथा सप्तमेश द्वादश भाव में हो तो पत्नी त्याग योग होता है। पत्नी त्याग योग में व्यक्ति अपनी पत्नी को छोड़ देता है।

पुरुष की जन्मकुण्डली में शुक्र स्त्री भाव का कारक ग्रह माना गया है। सप्तम भाव स्त्री तथा सप्तमेश स्त्री का प्रतिनिधित्व ग्रह माना गया है। जब इन पर शनि, राहु तथा सूर्य की दृष्टि या इन भावों में इन ग्रहों की स्थिति होगी तो स्वाभाविक ही पृथकताजनक परिस्थितियाँ उत्पन्न होकर पत्नी त्याग योग सिद्ध होगा।

पत्नी मृत्यु योग

द्वितीय भाव तथा द्वितीयेश पर गुरु तथा मंगल दोनों की ही दृष्टि हो तो पत्नी मृत्यु योग होता है। इस योग में जातक एक से अधिक विवाह करता है।

जन्म कुण्डली में सप्तम भाव स्त्री का भाव होता है तथा अष्टम भाव आयु भाव कहा जाता है। वहाँ से यह गणना करने पर द्वितीय भाव अष्टम भाव अर्थात् पत्नी का आयुभाव ही सिद्ध होता है। अतः पत्नी की आयु का अनुमान दूसरे भाव से ही होता है।

जब दूसरे भाव तथा दूसरे भाव के स्वामी पर मंगल की दृष्टि होगी तो वह उसकी आयु क्षीण करेगा, अर्थात पत्नी की मृत्यु शीघ्र होगी, पर पुनः दूसरे भाव तथा द्वितीयेश पर गुरु की भी दृष्टि होने से पुरुष को पत्नी का अभाव भी नहीं रहेगा। स्वाभाविक ही है कि पत्नी की मृत्यु के बाद शीघ्र ही पुनः विवाह हो जायेगा जिससे पत्नी का अभाव न रहे।

कुलवर्धन योग

सभी ग्रह, लग्न, सूर्य तथा चन्द्रमा से पाँचवे भाव में स्थित हों तो कुलवर्धन योग बनता है। कुलवर्धन योग में उत्पन्न जातक दीर्घायु, स्वस्थ, सबल ऐश्वर्यशाली तथा कुल-परिवार को ऊँचा उठाने वाला होता है।

यहाँ समस्त ग्रहों से तात्पर्य मंगल, बुध, गुरु, शुक्र तथा शनि से है। राहु-केतु की इसमें गणना नहीं की जाती। यही पाँचों ग्रह सूर्य, चंद्र तथा लग्न भाव से पंचम भाव में स्थित हों।

भगवती योग

नवम भाव में शुक्र हो तथा नवमेश की नवम भाव पर दृष्टि हो या नवमेश चन्द्रमा के साथ हो तो भगवती योग होता है। भगवती योग रखने वाला व्यक्ति धर्मात्मा, सदाचारी, कुलीन, सौभाग्यशाली एवं ईश्वर भक्त होता है।

भगवती योग भी राजयोग की ही तरह है, पर यह योग राजयोग के साथ-साथ जातक को धर्मात्मा भी बनता है। यों भी नवम भाव भाग्य से सम्बन्ध रखता है तथा नवम भाव पर नवमेश की दृष्टि भाग्य वृद्धि सूचक ही है, इसके अतिरिक्त गुरु, चन्द्र संयोग गजकेशरी योग भी बनाता है।

स्पष्टत: भगवती योग जातक को धनवान, सौभाग्यशाली एवं धर्मात्मा बना देता है। यदि स्त्री जातक की कुण्डली में यह योग हो तो उसे विख्यात पति प्राप्त होता है।

प्रेत योग

लग्नेश या चन्द्र से युक्त राहु लग्न में हो तो प्रेत योग होता है। यदि दशम भाव का स्वामी आठवें भाव में या एकादश भाव में हो और सम्बन्धित भाव के स्वामी से दुष्ट हो तो प्रेत योग होता है। प्रेत योग में जन्म लेने वाले व्यक्ति को जीवन में प्रेत-यातना सहन करनी पड़ती है तथां अकाल मृत्यु प्राप्त करता है।

भारत में विशेष कर उत्तर भारत में भूत-प्रेत आदि का प्रचलन अधिक है। हिन्दू धर्म की मान्यता के अनुसार मनुष्य अकाल मृत्यु से मर जाता है तो मरने के पश्चात् भूत-योनि में जन्म लेता है एवं उसकी सद्‌गति न होने के कारण भटकता फिरता है।

इस प्रकार भूत या प्रेत जीवित मनुष्यों को भी लग जाते हं और उसे मार देते हैं। कुछ सयाने या ओझा भूत-बाधा दूर करने के मंत्र जानते हैं और मंत्रों के प्रभाव से भूत-प्रेत बाधा शांत भी कर देते हैं।

कुण्डली में भूत-प्रेतों का अध्ययन राहु ग्रह से किया जाना चाहिए। यदि राहु बलिष्ठ हो तो जातक इस बाधा से अवश्य व्यथित होता है।

अखण्ड सौभाग्यवती योग

सप्तम भाव का स्वामी सप्तम भाव में या सप्तम भाव का पति नवम भाव में हो और अष्टम भाव रिक्त हो तो अखण्ड सौभाग्यवती योग होता है। इस योग के कारण

शिवोपासना दिवस

21 मार्च 2003

साधना सिद्धि विज्ञान केन्द्र में प्रत्येक माह की 21 तारीख को शैव दर्शन पर आधारित रुद्राभिषेक, महामृत्युंजय यंत्र पूजन, द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग पूजन, पारद शिवलिङ्ग को स्वर्ण ग्रास, शिव परिवार पूजन, शिव का विस्तृत आवर ण युक्त अष्ट मूर्ति पूजन, वीरभद्र, भैरव, महाकाल, नंदीश्वर इत्यादि शिव गणों की विहंगम पूजा अर्चना एवं अभिषेक सम्पन्न किया जाता है। शिव ही इस ब्रह्माण्ड में पूजा लेना जानते हैं, अर्चना करवाना जानते हैं। इस दिन प्रत्येक माह परम दुर्लभ शिवमय वातावरण में शैव मत सम्बन्धित दुर्लभ दीक्षाएँ एवं गोपनीय, विहंगम, दिव्य अनुष्ठान सम्पन्न किये जाते हैं। शैव मत सम्बन्धित यंत्रों, पारद लिङ्गों, कवच एवं पाशुपतास्त्र, अघोरास्त्र से युक्त दुर्लभ रुद्राक्षों को धारण करने का प्रत्यक्ष अनुभव।

अनुष्ठान में उपस्थित सभी साधकों/शिष्यों के पास पीताम्बर अवश्य होना चाहिए।

शिविर स्थल
1,2 मिनाल व्यू-2 पंजाबी बाग भोपाल

विस्तृत जानकारी के लिए
दूरभाष क्रं. 2576346, 5269368, 5271116, 2554925
पर सम्पर्क किया जा सकता है।

स्त्री का सुहाग अमर होता है।

अमर सुहाग या अखण्ड सौभाग्यवती से तात्पर्य यह है कि कुण्डली के जातक के पति की उम्र उससे अधिक होती है, अर्थात वह मरते समय तक सुहागवती बनी रहती है।

यह योग मुख्यत: स्त्री जातक की कुण्डली में देखा जाना चाहिए। स्त्री की कुण्डली में सप्तम भाव से पति के बारे में अध्ययन किया जाता है।

भाग्यवान योग

यदि चतुर्थ भाव का स्वामी, नवम भाव के स्वामी तथा पंचम भाव के स्वामी के साथ केन्द्र में स्थित हो तो भाग्यवान योग होता है।

भाग्यवान योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति प्रसिद्ध, धनवान, ख्यातिप्राप्त, विपुल विद्या वाहन सम्पन्न बन्धुपालक, सुखी परिवार वाला एवं भाग्यशाली जातक होता है।

लक्ष्मी प्राप्ति योग

पंचम भाव का स्वामी पंचम भाव में तथा नवम भाव का स्वामी नवम भाव में हो या पंचमेश और नवमेश की परस्पर दृष्टि हो तो लक्ष्मी प्राप्ति योग बनता है।

जिस जातक की कुण्डली में लक्ष्मी प्राप्ति योग होता है वह व्यक्ति पूर्ण धनवान होता है तथा उसके जीवन में धन की चिंता नहीं रहती। ऐसा व्यक्ति अपने बाहुबल से व्यापार स्थापित करता है तथा विश्व ख्याति प्राप्त करता है।

त्रिकोण गृह लक्ष्मी से सम्बन्धित हैं। यदि पंचम में पंचमेश और नवम भाव में नवमेश होता है तो वह जातक निस्सन्देह पूर्ण धनवान होता है। अगर ऐसा न हो और नवम भावपति तथा पंचम भावपति परस्पर देख रहे हों तो भी उपर्युक्त होता है और जातक पूर्ण सुखी एवं धनवान होता है।

ज्योतिष के प्रेमियों को चाहिए कि वे धन के सम्बन्ध में विचार करते समय पंचम और नवम भाव तथा पंचमेश और नवमेश को सावधानी पूर्वक देखें क्योंकि ये दोनों ही भाव धन उद्योग के विशेष कारक भाव माने जाते हैं।

नवरात्रि साधना शिविर

2 अप्रेल 2003

प्रथम दिवस-	महाकाली अनुष्ठान।	षष्ठम दिवस-	बगलामुखी अनुष्ठान।
द्वितीय दिवस-	दक्षिण काली अनुष्ठान।	सप्तम दिवस-	चण्डिका अनुष्ठान।
तृतीय दिवस-	तारा अनुष्ठान।	अष्टम दिवस-	छिन्नमस्ता अनुष्ठान।
चतुर्थ दिवस-	महालक्ष्मी अनुष्ठान।	नवम दिवस-	कामाख्या अनुष्ठान।
पंचम दिवस-	श्री विद्या अनुष्ठान।		

साधकों के कल्याण तथा समस्त दैहिक, दैविक, भौतिक तापो-शापों के विमोचन हेतु अनुष्ठान सम्पन्न कराया जायेगा। शिविर में डॉ. साधना जी व अरविन्द जी द्वारा साधकों/शिष्यों की व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान किया जायेगा।

विशेष : पवित्र नवरात्री के अवसर पर समस्त अनुष्ठान साधना सिद्धि विज्ञान केन्द्र में सम्पन्न किये जायेंगे। स्थान सीमित है अत: आने से पूर्व अनुमति ले लें। साधक को अपने रुकने एवं भोजन इत्यादि की व्यवस्था स्वयं करनी होगी, यह शिविर नहीं है।

शिविर स्थल
1,2 मिनाल व्यू-2 पंजाबी बाग भोपाल

विस्तृत जानकारी के लिए
दूरभाष क्रं. 2576346, 5269368, 5271116, 2554925
पर सम्पर्क किया जा सकता है।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्व्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

निखिल अमृत महोत्सव

दिनांक
21 अप्रैल 2003
दिन सोमवार

श्रीयंत्र आवरण साधना

अष्ट लक्ष्मी पूजन

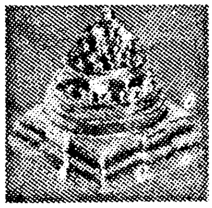

वैभव लक्ष्मी पूजन

पारद श्रीयंत्र स्थापना

विशेष आकर्षण : निखिल हृदय स्थापन दीक्षा एवं साधना।

शिविर में साधकों/शिष्यों को ऐश्वर्य महालक्ष्मी दीक्षा, रोग मुक्ति दीक्षा, महामृत्युंजय दीक्षा, शिव दर्शन दीक्षा सहित अनेक दुर्लभ दीक्षायें विशेष शक्तिपात के माध्यम से प्रदान की जायेंगी

शिविर में उपस्थित सभी साधकों/शिष्यों के पास पीताम्बर अवश्य होना चाहिए।

सम्पर्क
साधना सिद्धि विज्ञान
फ्लेट नं. 1, 2 मिनाल व्यू-2 पंजाबी बाग भोपाल
दूरभाष : (0755) 2576346, 5269368

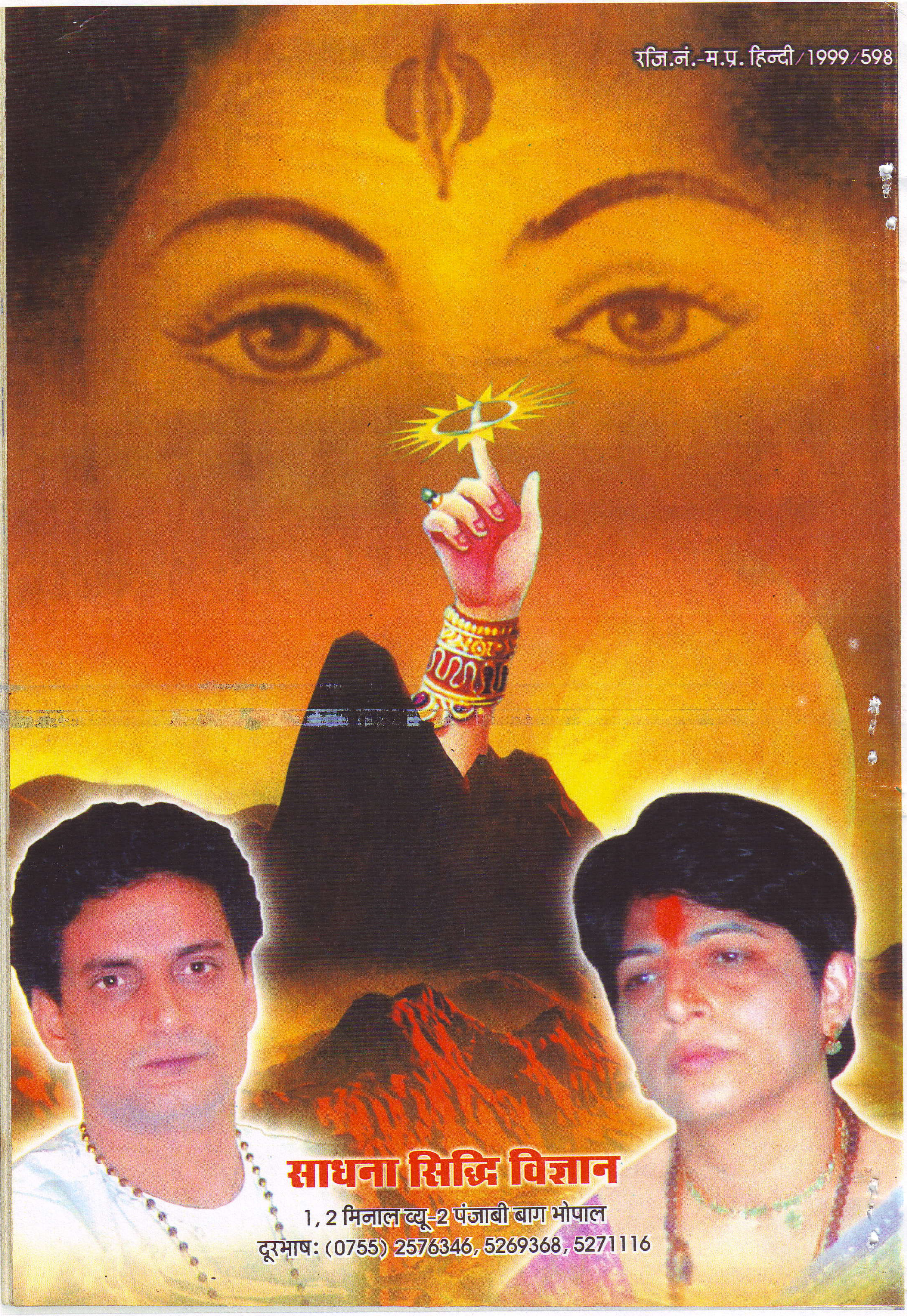
रजि.नं.-म.प्र. हिन्दी/1999/598
साधना सिद्धि विज्ञान
1, 2 मिनाल व्यू-2 पंजाबी बाग भोपाल
दूरभाष: (0755) 2576346, 5269368, 5271116